

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17

मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अप्रैल, 2016

वर्ष : 74 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.

डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रैल, 2016 ★ चैत्र, 2073

ISSN  
2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष



परस्पररोपग्रहो जीवानाम्



मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

# जिनवाणी हिन्दी-मासिक

## संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

## संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

## प्रकाशक

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,  
जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

## प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन  
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,  
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)  
फोन : 0291-2626279

E-mail : editorjinvani@gmail.com

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

## सह-सम्पादक

नीरतन मेहता, जोधपुर  
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

## भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डॉक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17  
ISSN 2249-2011



नारीसु नोदगिउझेउजा,  
इत्थी विप्पजहे अणगारे।  
धम्मं च पेसलं णच्चा,  
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.19

नारीतन पर ना प्रीति करे,  
स्त्रीत्यागी जो है अनगारी।  
त्याग-धर्म को श्रेष्ठ जान,  
भिक्षुक ने मन स्थिरता धारी॥

अप्रैल, 2016

वीर निर्वाण संवत्, 2542

चैत्र, 2073

वर्ष 74

अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986

IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ट्राफ्ट भेजने का पता

'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

# विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	दुःख	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	9
विचार-वारिधि-	ज्ञान-बिन्दु	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
प्रेरक-संदेश-	संघ सेवा : महानिर्जरा का कारण	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
प्रवचन-	समाज की विकृतियों का निवारण कैसे ?	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	17
	कृतित्व का अभिमान : सबसे बड़ा दोष -तत्त्वचिन्तक	श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	25
	नमो लोए सब्बसाहूणं : अमृत शिक्षा	-महासती भाग्यप्रभाजी म.सा.	28
संगोष्ठी-आलेख-	पर्यावरण-सुरक्षा में जैन जीवन-शैली की उपयोगिता	-प्रो. (डॉ.) प्रेमसुमन जैन	30
अध्यात्म-	क्रोध से मुक्ति : क्यों और कैसे ?	-डॉ. सत्यनारायण शर्मा	40
	एकत्व भावना	-श्री दुलीचन्द्र जैन	80
प्रासंगिक-	आचार्य हस्ती : युगानुरूप दिशाबोध प्रदाता	-डॉ. मंजुला बम्ब	47
तत्त्व-ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (99)	-श्री धर्मचन्द्र जैन	52
युवा-स्तम्भ -	युवापीढ़ी का सोच एवं समस्याएँ	-श्रीमती बीना जैन	59
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (21)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	61
चिन्तन -	धर्म: प्राकृतिक नियमों का पालन	-श्री प्रमोद महनोत	65
संस्कार-	संस्कार केन्द्र सर्वांगीण विकास के प्रकल्प	-प्राणिमित्र श्री नितेश नागौता जैन	68
आत्मबोध -	विमलवाहन को वैराग्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	69
जीवन-व्यवहार-	जीवन के सत्य	-आचार्यश्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	73
धारावाहिक -	लग्न की वेला (19)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	74
नारी-स्तम्भ -	जैन परम्परा में नारी सशक्तीकरण	-डॉ. अंजना बैराठी	79
स्वास्थ्य-विज्ञान -	रोगोपचार में अहिंसा का पालन कैसे ?	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	83
बाल-स्तम्भ -	अमित में बदलाव	-श्रीमती कमला सुराणा	92
विचार-	क्या कहते हैं ये उपकरण ?	-महासती श्री रुचिताजी म.सा.	82
	कर्त्तव्य पालन के लिए सोचें	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	98
कविता/गीत-	जीत वहीं पाता इसको	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	24
	अय महावीर!	-श्री माणकचन्द्र कोटेचा	27
	प्रभु वीर चालीसा	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	43
	दिव्यता के दिवाकर	-महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.	44
	कोटि-कोटि हम करते वन्दन	-श्री राकेश कोचर	45
	मानवता को नया आयाम	-श्री महावीरप्रसाद जैन	51
	वात्सल्यमूर्ति आचार्यश्री हीरा	-श्री त्रिलोकचन्द्र जैन	78
	ऐसे गुरुवर की स्तुति करो	-महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी एवं संवेगश्रीजी म.सा.	95
	महावीर मेरे, सुनो बात मेरी	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	96
विशेष-	पाक्षिक-पत्र (विक्रम संवत् 2073)	-संकलित	66
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	97
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	99
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	119

## दुःख

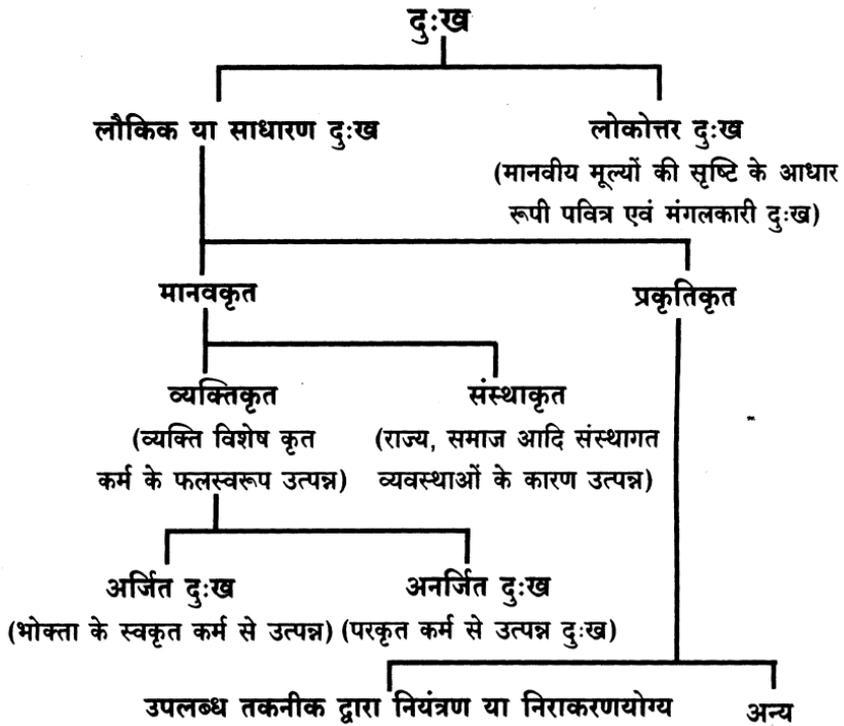
❖ डॉ. धर्मचन्द जौन

दुःख जीवन का एक सत्य है। दुःख का अनुभव चेतना को होता है। प्रतिकूल वेदन होना ही दुःख है। दुःख सबको अप्रिय लगता है। सभी इससे मुक्त होना चाहते हैं, किन्तु दुःख दूर करने के जो उपाय किए जाते हैं वे अपर्याप्त प्रतीत होते हैं। क्योंकि जीवन से दुःख का सर्वथा नाश होता दिखाई नहीं देता। किसी न किसी रूप में दुःख आ ही जाता है। सारी साधना दुःख से सर्वथा मुक्त होने के लिए की जाती है।

दुःख की उत्पत्ति दो कारणों से होती है— उपादान एवं निमित्त से। जिस चेतनाशील व्यक्ति या जीव में दुःख उत्पन्न होता है वह दुःख का उपादान कारण होता है तथा अनिष्ट के संयोग एवं इष्ट के वियोग आदि, जिनसे दुःख उत्पन्न होता है, वे दुःख का निमित्त कारण कहलाते हैं।

बौद्ध दर्शन में दुःख को चार आर्य सत्यों में प्रथम स्थान दिया गया है। इस सत्य को स्वीकार करने पर ही दुःख के कारण, निवारण तथा उपाय की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इसलिए ये तीनों भी आर्य सत्य कहे गए हैं। दुःख का कारण अविद्या, तृष्णा आदि को स्वीकार किया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र में भी कहा गया है— दुःखं ह्यं जस्स न होइ तण्हा। जिसके तृष्णा नहीं होती, उसके दुःख का नाश हो जाता है। सांख्यदर्शन में दुःख को जड़ प्रकृति का धर्म माना गया है, किन्तु उसका अनुभव चेतनाशील पुरुष में माना गया है। सत्त्व, रज एवं तमोगुणात्मिका प्रकृति में दुःख रजोगुण का कार्य है। सत्त्व गुण से सुख, रजोगुण से दुःख एवं तमोगुण से मोह प्रकट होता है। प्रकृति का कार्य होते हुए भी दुःख का अभिघात चेतन पुरुष को झेलना पड़ता है। वेदान्त दर्शन में दुःख को अज्ञान या अविद्या का परिणाम स्वीकार किया गया है। ब्रह्म या आत्मा स्वरूपतः आनन्दमय है, किन्तु दुःख अज्ञान के कारण अनुभव में आता है। न्यायदर्शन में अक्षपादगौतम ने कहा है कि मिथ्याज्ञान से राग-द्वेष आदि दोष उत्पन्न होते हैं, इन दोषों के कारण पाप-प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति से विभिन्न योनियों में जन्म होता है एवं जन्म के होने पर दुःख होता है। अतः जन्म ही इनके अनुसार दुःख का प्रमुख कारण है। वैशिकदर्शन में प्रारम्भ से ही दुःख को आत्मा में रहने वाला गुण माना गया है, जो अधर्म रूपी अदृष्ट का फल है।

दुःख की उत्पत्ति को लेकर लोक में विभिन्न धारणाएँ हैं। लौकिक जन प्रायः दूसरे व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति को दुःख का कारण मानते हैं। लोक प्रतीति एवं यथोपलब्धि (जैसा उपलब्ध होता है) के अनुसार दुःख का वर्जीकरण प्रो. पाहि ने अग्रानुसार किया है—



मूलतः दुःख के दो प्रकार हैं- लौकिक एवं लोकोत्तर दुःख। लोकोत्तर दुःख एक ऐसी वेदना है जो मानवीय मूल्यों के सर्जन में कारण होने से मंगलकारी है। वस्तुतः यह दुःख परीषह या तप का रूप ले लेता है। करुणा एवं दूसरों के दुःख के प्रति सहानुभूति से उत्पन्न व्यथा भी इसी प्रकार का लोकोत्तर दुःख है, जिसका परिणाम आत्महित एवं परहित होता है। व्यक्ति चाहे तो हर लौकिक दुःख को लोकोत्तर दुःख में परिणत कर सकता है। उदाहरण के लिए परिवार के किसी व्यक्ति के वियोग्यजन्य दुःख के परिणामस्वरूप संसार से वैराग्य, अनिष्ट के संयोजजन्य दुःख के परिणामस्वरूप अनासक्ति या समता का अभ्यास आदि कार्य लोकोत्तर दुःख के परिणाम हैं। दरअसल इन्हें परिणाम के आधार पर ही लोकोत्तर दुःख कहा जा सकता है।

लौकिक दुःख दो प्रकार के होते हैं- मानवकृत एवं प्रकृतिकृत। मानवकृत दुःख भी दो प्रकार के हैं- (1) व्यक्तिकृत एवं (2) राज्य, समाज आदि संस्थाकृत। व्यक्तिकृत दुःख के पुनः दो प्रकार निरूपित हैं- अर्जित दुःख एवं अनर्जित दुःख। व्यक्ति के स्वकृत कर्म से उत्पन्न दुःख को अर्जित दुःख तथा अन्य व्यक्ति के द्वारा उत्पन्न की गई दुःखद स्थिति को अनर्जित दुःख स्वीकार किया गया है। प्रकृतिकृत दुःख के पुनः दो प्रकार किये गये हैं-

नियंत्रण करने योग्य दुःख एवं अनियंत्रित दुःख। मनुष्य ने प्राकृतिक रूप से उत्पन्न गर्मी, शीत एवं वर्षा से बचने के लिए घर बनाकर प्राकृतिक दुःख को नियंत्रित किया है। गर्मी के शमन हेतु ए.सी., कूलर, पंखा आदि की व्यवस्था की है। मौसम के अनुरूप वस्त्रों का प्रयोग किया है। इस तरह प्रकृतिजन्य कुछ दुःखों को मनुष्य नियंत्रित कर लेता है। किन्तु भूकम्प, तूफान, अकाल, बाढ़ आदि से उत्पन्न प्राकृतिक स्थितियों पर अभी मनुष्य नियंत्रण नहीं कर पाया है।

सांख्यदर्शन में तीन प्रकार के दुःखों का निरूपण है- आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक। जिस दुःख को दूर करने का उपाय शरीर, मन आदि के आन्तरिक उपाय से किया जाता है, उसे आध्यात्मिक दुःख कहा गया है। अन्य प्राणियों से उत्पन्न दुःख को आधिभौतिक एवं भूत-पिशाच आदि के कारण उत्पन्न एवं प्रकृतिजन्य दुःख को आधिदैविक कहा गया है।

दुःख के उपर्युक्त वर्गीकरण से कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। क्योंकि भारतीय परम्परा में दुःख का कारण स्वयं व्यक्ति को माना गया है। जैनदर्शन में भी यह दृढ़तापूर्वक प्रतिपादन किया गया है कि दुःख आत्मकृत होता है, परकृत नहीं- अत्तकडे दुक्खे नो परकडे। (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र) जबतक असातावेदनीय कर्म का उदय नहीं होता, तब तक किसी को दुःख का अनुभव नहीं होता अथवा यह कहा जा सकता है कि जब दुःखद वेदना होती है तो असातावेदनीय कर्म का उदय होता है। परनिमित्तों के आधार पर दुःख का विभाजन करने से यह नहीं कहा जा सकता कि दुःख स्वकृत नहीं भी होता है।

दुःख के सम्बन्ध में निम्नांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं-

1. अपने द्वारा की गई लापरवाही के कारण उत्पन्न दुःख व्यक्ति को स्वयं भोगना पड़ता है। उदाहरण के लिए खान-पान में असावधानी एवं अतिभोजन के कारण रोग का उत्पन्न होना मनुष्य की स्वयं की भूल का परिणाम है। अतः वह स्वकृत कर्म का फल है। इस दुःख से बचने के लिए व्यक्ति को स्वयं अपने शरीर का ध्यान रखना होगा, ताकि शरीर में अनावश्यक असंतुलन न बढ़े, भोजन स्वास्थ्य के लिए एवं शारीरिक शक्ति के लिए हो। शरीर के लिए हानि उत्पन्न करने वाला एवं विघातक न हो। इसी प्रकार मन में अनावश्यक कामनाएँ एवं संकल्प दुःख को उत्पन्न करते हैं। कामनाओं एवं संकल्पों की पूर्ति न होने पर मनुष्य दुःखी होता है, तनाव में आ जाता है। कभी निराशा एवं हताशा के साथ अवसाद (डिप्रेशन) में चला जाता है। व्यर्थ की चिन्ता एवं आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान में लगे रहने पर दुःख आता ही है। अतः दुःख से रहित होने के लिए चिन्ता एवं आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान को नियंत्रित करना आवश्यक है। इन पर नियंत्रण में ज्ञान का प्रकाश सहायक होता है। ज्ञान प्राप्त होने पर व्यक्ति दुःखद परिस्थितियों में भी अविचल

रहकर उस दुःखद परिस्थिति का सदुपयोग कर लेता है, किन्तु दुःखी नहीं होता।

2. परकृत दुःख का तात्पर्य है किसी अन्य के द्वारा उत्पन्न ऐसी परिस्थिति जिसके कारण व्यक्ति को दुःख की अनुभूति होती है। उदाहरण के लिए परीक्षाओं के दिनों में माता-पिता द्वारा बच्चों पर इस प्रकार का दबाव बनाया जाता है कि वे तनाव में आ जाते हैं एवं दुःखी हो जाते हैं। राह में चलते हुए किसी व्यक्ति की किसी वाहन से दुर्घटना होने पर जो दुःख उत्पन्न होता है, वह भी परकृत दुःख है। परिवार में एक-दूसरे को यातना देना भी इस श्रेणी का दुःख है। यहाँ पर दुःख को परकृत रूप में कहने का कारण मात्र परनिमित्त का होना है। दुःख का अनुभव तो व्यक्ति को स्वयं होता है एवं जो राग-द्वेष आदि से युक्त होता है, कामनाओं एवं वासनाओं से ग्रस्त होता है, अहंता एवं ममता से पीड़ित होता है, उसे ही परजन्य दुःख का अनुभव होता है। दुःख का निमित्त या तो व्यक्ति के असातावेदनीय कर्म का उदय होता है या फिर अन्य व्यक्ति, वस्तु या परिस्थितियाँ भी निमित्त हो सकती हैं। परकृत दुःख से बचने हेतु उन निमित्तों से दूर रहना भी एक उपाय हो सकता है। किन्तु असातावेदनीय कर्म का उदय होने पर कोई न कोई निमित्त ऐसा बन ही जाता है, जिसके कारण हमें दुःख की अनुभूति होती है।
3. यदि दुःख को परकृत माना जायेगा तो कर्मव्यवस्था नहीं बन पायेगी। कर्मसिद्धान्त की यह मान्यता है कि जो जैसा कर्म करता है, उसे तदनुसार फल की प्राप्ति होती है। अच्छे कर्म का फल सुख रूप में तथा बुरे कर्म का फल दुःख रूप में प्राप्त होता है। दुःख को दूर करने का दायित्व उसी व्यक्ति का है जो दुःख उत्पन्न करने का उपादान कारण है। अपने उपादान में बदलाव लाकर वह दुःख से रहित हो सकता है।
4. दुःख को स्वकृत कर्म का फल नहीं माना जायेगा तो कृत प्रणाश एवं अकृत अभ्यागम नामक दोष उत्पन्न हो जायेंगे। किये गये का फल न मिलना कृत प्रणाश दोष है तथा नहीं करने पर भी फल की प्राप्ति होना अकृत अभ्यागम दोष है। इन दोनों दोषों का परिहार तभी हो सकता है, जब दुःख को स्वकृत कर्म का फल स्वीकार किया जाये।
5. कर्मसिद्धान्त से दो प्रकार की व्यवस्थाएँ सिद्ध होती हैं। एक तो स्वकृत कर्म की फल-प्राप्ति का सिद्धान्त व्यक्ति को समाज में हिंसा, आतंक अथवा बुराई करने से रोकता है तथा दूसरा आध्यात्मिक पक्ष है, जिसको स्वीकार कर व्यक्ति स्वयं अपने में सुधार लाने के लिए प्रयत्नशील होता है। दूसरे को दुःख का कारण मानते रहने पर कभी सुखी नहीं हुआ जा सकता तथा अपने कषायों के निराकरण का प्रयत्न नहीं हो सकता, अपितु व्यक्ति इन कषायों की अभिवृद्धि का शिकार होकर अपना दुःख बढ़ाता रहेगा। दूसरे के द्वारा अथवा प्रकृति से उत्पन्न दुःख को सहने का सामर्थ्य बढ़ाकर तथा समता में रहकर उन दुःखों से अप्रभावित रहा जा सकता है।



अमृत-चिन्तन

## आगम-वाणी

दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा-आरंभे चेव, परिग्गहे चेव।(41), दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव। (42), दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा-आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। (43)

-स्थानांगसूत्र, द्वितीय स्थान, प्रथम उद्देशक, सूत्र 41-43

अर्थ- आरम्भ और परिग्रह- इन दो स्थानों को ज्ञपरिज्ञा से जाने और प्रत्याख्यानपरिज्ञा से छोड़े बिना आत्मा केवलि-प्रज्ञप्त धर्म को नहीं सुन पाता (41), आरम्भ और परिग्रह इन दो स्थानों को जाने और छोड़े बिना आत्मा विशुद्ध बोधि का अनुभव नहीं कर पाता (42), आरम्भ और परिग्रह इन दो स्थानों को जाने और छोड़े बिना आत्मा मुण्डित होकर घर से (ममता-मोह छोड़कर) अनगारिता (साधुत्व) को नहीं पाता (43)।

दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा-आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। (52), दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा-आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। (53), दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियां पव्वइज्जा, तं जहा-आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (54)।

-स्थानांगसूत्र, द्वितीय स्थान, प्रथम उद्देशक, सूत्र 52-54

अर्थ- आरम्भ और परिग्रह- इन दो स्थानों को ज्ञपरिज्ञा से जानकर और प्रत्याख्यानपरिज्ञा से त्यागकर आत्मा केवलि-प्रज्ञप्त धर्म को सुन पाता है (52), आरम्भ और परिग्रह- इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर आत्मा विशुद्धबोधि का अनुभव करता है (53), आरम्भ और परिग्रह- इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर आत्मा मुण्डित होकर और गृहवास का त्यागकर सम्पूर्ण अनगारिता को पाता है (54)।

विवेचन- प्रभु महावीर की वाणी का स्थानांग सूत्र में संग्रहनय से कथन हुआ है। यहाँ संक्षेप में सारगर्भित तत्त्वज्ञान का संकलन किया गया है। स्थानांग के द्वितीय स्थान के प्रथम उद्देशक में आरम्भ एवं परिग्रह को लेकर सूत्र संख्या 41 से सूत्र संख्या 62 तक प्रतिपादन हुआ है। प्रस्तुत प्रसंग में मात्र 6 सूत्रों का निदर्शन के लिए कथन किया गया है।

लोग कहते हैं हमारा धर्म-श्रवण में चित्त नहीं लगता, धर्म की बातें सुनते हैं, तो वे

चित्त में ठहरती नहीं। धर्म का निरूपण करने वाले आगम-वचनों का कोई प्रभाव जीवन में दिखाई नहीं देता। स्थानांग के अनुसार ऐसा वे लोग कहते हैं जो आरम्भ एवं परिग्रह का त्याग नहीं कर पाते हैं। जिनका चित्त दिन-रात आरम्भ एवं परिग्रह में घूमता है, वे अशान्त चित्त वाले होते हैं। अशान्त चित्त में धर्म की सुन्दर बातें भी ठहर नहीं पातीं। दूसरी बात यह है कि चित्त उस समय आरम्भ परिग्रह को अधिक महत्त्व देता है, धर्म को नहीं। धर्म का महत्त्व कभी-कभी समझ में आता भी है तो वह पुनः आरम्भ एवं परिग्रह के कारण उलझन में चला जाता है एवं धर्म का स्वरूप आचरण में नहीं आ पाता। पाप-प्रवृत्ति का त्याग ही धर्म है। वह त्याग तभी होगा जब पाप-प्रवृत्ति का बोध हो एवं त्याग हेतु प्रयत्न हो।

आरम्भ का तात्पर्य है कामनाओं की उत्पत्ति। विविध प्रकार के सुख-भोग के साधनों को जुटाने के लिए संकल्प, व्यापार व्यवसाय को ही सर्वाधिक महत्त्व देकर उसी के संकल्पों में निरन्तर निरति, वासनाओं में चित्त का भ्रमण मनुष्य को शान्त नहीं होने देता। उसको केवलप्रज्ञस धर्म सुनाये जाने पर भी वह उसका लाभ नहीं ले पाता। उसकी बुद्धि में धर्म का स्वरूप समझ में नहीं आता। बोधि की प्राप्ति आरम्भ का त्याग करने पर ही संभव है। आरम्भ की भाँति परिग्रह भी मनुष्य को संसार में बाँधे रखता है। परिग्रह का तात्पर्य है ममता अथवा पर वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि के प्रति ममत्व बुद्धि। यह ममत्व बुद्धि ही अन्य पदार्थों के साथ सम्बन्ध बनाये रखती है, जो परिग्रह है। आरम्भ एवं परिग्रह का जब तक स्वरूप समझ में नहीं आता तब तक कोई मनुष्य घर छोड़कर अणगार धर्म में प्रव्रजित नहीं हो पाता। जो आरम्भ एवं परिग्रह इन दो स्थानों को जान लेता है, वह केवलप्रज्ञस धर्म को सुनकर समझ पाता है। वही बोधि की प्राप्ति करने में सक्षम होता है तथा वही अणगार से अणगार बनने का सामर्थ्य जुटा पाता है। इसलिए आरम्भ एवं परिग्रह के त्याग अर्थात् कामना एवं ममता के त्याग को आत्मविकास के लिए आवश्यक प्रतिपादित किया गया है। - सम्पादक

## जिनवाणी के अंकों पर प्रतियोगिता पर अभिमत

श्री ज्ञानचन्द कोठारी

जिनवाणी के फरवरी-2016 के अंक में जिनवाणी के पूर्व अंकों पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन करके एक महान् कार्य किया है। इसके आयोजन से जिनवाणी के पूर्व अंकों को अपने पुस्तकालय में सार-सम्भाल कर रखने की प्रवृत्ति रहेगी। दूसरा इससे स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि प्रतियोगिता के प्रश्नों का उत्तर देते समय इन अंकों को कई बार पढ़ा जायेगा, जिससे कई पुराने लेख पुनः तरोताजा हो जायेंगे। इसके आयोजन हेतु हृदय से आभार।

## ज्ञान-बिन्दु

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म. सा.

- अगर हमारे चित्त में किसी प्रकार का दम्भ नहीं है, वासनाओं की गंदगी नहीं है और तुच्छ स्वार्थ-लिप्सा का कालुष्य नहीं है तो हम वीतराग के साथ अपना सान्निध्य स्थापित कर सकते हैं।
- जिनशासन में तप का महत्त्व है, पर ज्ञानशून्य तप का नहीं।
- ज्ञान न मिलने का अंतरंग कारण तो है ज्ञानावरण कर्म और ज्ञान न मिलने का बाहरी कारण है ज्ञानी जनों की संगति का अभाव।
- ज्ञानावरण का जोर रहा और बाहरी साधनों-संगति, पुस्तक आदि का संयोग नहीं मिला तो ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। ज्ञानावरण का जोर घटा, क्षयोपशम हुआ और ज्ञानी की संगति मिली तो ज्ञान प्राप्त होगा।
- जिस तत्त्व के द्वारा धर्म, अधर्म, सत्य, असत्य जाना जाय, उसको ज्ञान कहते हैं। ज्ञान आत्मा का गुण है।
- जिन व्यक्तियों में सदाचार तथा सदगुणों की सौरभ नहीं होती, वे संसार में आकर यों ही समय नष्ट कर चले जाते हैं।
- दुर्लभ नर-जीवन को व्यर्थ में गंवाना, अज्ञानता की परम निशानी है।
- मोह के कारण ही त्याग की बुद्धि उत्पन्न नहीं होती है।
- गुणों का महत्त्व भूलकर गुणी का तिरस्कार करना उचित नहीं।
- आत्मा की कीमत सोने के आभूषणों से नहीं, वरन् सदाचार, प्रामाणिकता और सदगुणों से है।
- यदि जीवन का निर्माण करना है तो प्रत्येक को स्वाध्याय करना पड़ेगा। स्वाध्याय के बिना ज्ञान की ज्योति नहीं जलेगी।
- हमारे शिक्षणालयों का उद्देश्य होना चाहिए कि उनमें अध्ययन करने वाले छात्र सदाचारी एवं ईमानदार बनें।
- आज के अध्यापक का जितना ध्यान शरीर, कपड़े, नाखून, दांत, आदि बाह्य स्वच्छता की ओर जाता है, उतना छात्रों की चारित्रिक उन्नति की ओर नहीं जाता।
- बाह्य स्वास्थ्य जितना आवश्यक समझा जा सकता है, अंतरंग स्वास्थ्य उससे कहीं अधिक आवश्यक है।

प्रेरक-संदेश

## आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : संघ सेवा : महानिर्जरा का कारण

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। हमारे निवेदन पर पूज्यप्रवर ने संघसेवा के महत्त्व पर अपने प्रेरक विचार व्यक्त किए हैं, जिनका संकलन श्री जगदीशजी जैन, अध्यापक द्वारा किया गया है। -**सम्पादक**

सिद्धि के सत्पथ पर आगे बढ़ने वाले साधक के प्रमुख दो कर्तव्य बताये हैं- सेवा और स्वाध्याय। सेवा की आवश्यकता होने पर साधक का प्रथम कर्तव्य है- सेवा। साधक दिवस के प्रथम प्रहर में गुरुदेव को वन्दन करके निवेदन करता है कि मुझे करना है? आप अपनी इच्छा से वैयावृत्य में अथवा स्वाध्याय में नियुक्त करें।

पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायत्वं मए इह ?  
इच्छं निओइउं भन्ते! वेयावच्चे व सज्झाए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 26.9

वैयावृत्य (सेवा) में नियुक्त किये जाने पर मुनि ग्लान रहित होकर सेवा कार्य करे। वैयावृत्य का जिनशासन में अत्यधिक महत्त्व है। शासनपति भगवान महावीर ने इसे आभ्यन्तर तप में परिभाषित किया है। वैयावृत्य तप भी अन्य तपों की भांति संसार से शीघ्र तिराने वाला तप है। सेवा करने की भावना प्रायः हर साधक के मन में हमेशा हिलोरें लेती रहती हैं। सेवा का अवसर उपस्थित होने पर उसका मन मयूर नाच उठता है। साथी साधकों (साधर्मिकों) की सेवा करके वह आनन्दित हो जाता है। जिस क्रिया का निरन्तर पालन किया जाये उसे चरणसत्तरी कहते हैं। उस चरणसत्तरी में वैयावृत्य के 10 भेद हैं। साधक वही है जो हमेशा सेवाभावना से ओतप्रोत रहता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 26 वें अध्ययन में मुनि के आहार करने के 6 कारण बताये हैं- उनमें द्वितीय कारण वैयावृत्य ही बताया है। वहाँ स्पष्ट घोषित हो रहा है- जब सेवा कार्य उपस्थित हो और शरीर में शक्ति का अभाव हो तो अनशन को गौण करके सेवा हेतु आहार करें। निशीथ सूत्र के 10 वें उद्देशक में ग्लान की सेवा में प्रमाद करने का प्रायश्चित्त भी बताया है। व्यवहार सूत्र के 10 वें उद्देशक में भी वैयावृत्य के 10 प्रकारों का उल्लेख है- आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, शैक्ष (नवदीक्षित) ग्लान (रोगी), साधर्मिक, कुल, गण और संघ। इन दस की वैयावृत्य करने वाला महानिर्जरा और महापर्यवसान (मोक्ष) का अधिकारी होता है। आचार्य, उपाध्याय या ग्लान की भाँति चतुर्विध संघ की वैयावृत्य करना भी साधक का पुनीत कर्तव्य है। यह संघ सेवा

भी साधक को सुलभबोधित्व प्रदान करके सिद्धत्व में स्थापित करने वाली है। साधु शब्द की व्युत्पत्ति है- “स्व-पर-कार्याणि साध्नोति इति साधुः।” अर्थात् जो स्वकल्याण के साथ अन्य मुमुक्षुओं को भी साधना में सहयोग प्रदान करे- वह साधु है। संघ का हमारे ऊपर अनन्त उपकार है। संघ के सहयोग से हमारी संयम-साधना निर्मलता से होती है। वे जीव भी साधना में, समाधि में आगे बढ़कर सिद्धि के अधिकारी बनें, ऐसी मंगल भावना व कल्याणकारिणी प्रेरणा का प्रयास रहे। इसी में स्व और पर दोनों का हित-निहित है। यह प्रवृत्ति रत्नों की अनमोल दलाली के सदृश है। सम्यक्त्व अवस्था में भी श्री संघ की सेवा करते हुए तीर्थंकर गोत्र उपार्जन करने वाले दो उदाहरण हमारे सामने हैं- वासुदेव श्री कृष्ण और सप्पाट श्रेणिक का। तीर्थंकर भगवन्त स्वयं श्री संघ की सेवा करते हैं। तीर्थंकर भी संयम स्वीकार करते समय श्री संघ को ‘नमो तित्थस्स’ या ‘नमो संघस्स’ कहकर नमस्कार करते हैं। अनेकानेक आचार्य इस जिनशासन की सेवा करके संसार सागर तिरने वाले बन गये हैं। जो भी संत इस संघ की अहोभाव से सेवा करते हैं वे भवों को सीमित करने में सफल हुए हैं। साधक जिस साधना का आनन्द स्वयं प्राप्त कर रहा है उसकी भावना रहती है कि यह संसारी प्राणी भी मोह को दूर करके आंतरिक आनन्द की अनुभूति करे। उसके लिये बिना किसी कर्तृत्व भाव के (अहंकार रहित होकर) मात्र अनुकम्पा बुद्धि से प्रवृत्ति करता है। यह प्रवृत्ति भी शुभ योग वाली होने से संवर रूप ही है, जो आत्म-साधक के लिये उपादेय है।

भगवतीसूत्र में इस विषय में कहा है- “समाहिकारेहिं समाहिं पडिलब्भइ।” अर्थात् जो दूसरों को साता या समाधि उपजाता है, वह स्वयं भी साता-समाधि को प्राप्त करता है। कुछ इसमें उपेक्षा करते हैं, उन्हें अपने विचारों को परिमार्जित करना चाहिये। मात्र भीड़ इकट्ठी करना या अहंकार का पोषण करना इसके लिये प्रवृत्ति करने का निषेध है। यह तो कर्मबन्ध करने वाली या संसारवर्धक है। जिज्ञासुओं को श्रुतज्ञान के माध्यम से साधना में आगे बढ़ाना है। जिनकी अभी साधना में रुचि नहीं है, उन्हें भी साधना के सूत्र प्रदान करके साधनाशील बनाने का प्रयत्न करें। स्वयं केशीस्वामी ने परदेशी राजा को प्रेरित करके अनेक युक्तियों के माध्यम से दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी श्रावक बना, आराधक बना दिया। मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ा दिया। यहाँ प्रश्न हो सकता है कि जीव अपने उपादान से धर्मी बनता है, यह ठीक है, परन्तु हमारे द्वारा की गई शुभ प्रेरणा का सुफल तो हमें मिल ही जायेगा। कभी हम उसमें निमित्त भी सिद्ध हो सकते हैं। हालांकि साधक का मुख्य कर्तव्य आत्मकल्याण है, परन्तु दर्शनार्थ आगन्तुक की जिज्ञासा को भी हमें नकारना नहीं है। जिनशासन में अनेक प्रभावक आचार्य हुए हैं अगर वे ऐसा सोच लेते तो विरासत में जो सुन्दर पृष्ठ भूमि मिली हुई है, उससे वंचित तो रहते ही, साथ ही जिनशासन की प्रभावना सम्यक् प्रकारेण वर्धापित कैसे हो पाती। उन्होंने अपने चारित्र में दृढ़ रहते हुए अनेक राजा-महाराजाओं को जिनशासन का

हितैषी बनाया है। आचार्य भद्रबाहु द्वारा संघ-सेवा गौण करने पर संघ के सुविज्ञ श्रावकों ने प्रायश्चित्त के विधान का खयाल दिलाकर सावचेत किया था। यह जिनशासन इसी कारण जयवन्त है।

भगवती आराधना नामक ग्रन्थ में वैयावृत्य के 18 गुणों का वर्णन आया है, यथा- गुण ग्रहण के परिणाम, श्रद्धा भक्ति, वात्सल्य, पात्रता की प्राप्ति, विच्छिन्न सम्यक्त्व आदि का संधान, तप, पूजा, तीर्थ-अव्युच्छित्ति, समाधि, जिनाज्ञा, संयम-सहाय, दान, निर्विचिकित्सा, प्रवचन प्रभावना, पुण्य संचय और कर्तव्य का निर्मोह।

ध्यातव्य है कि जिनशासन की सेवा करना जिनाज्ञा है, कर्तव्य का निर्वाह है। इससे जीव मोक्षमार्ग में वर्धापक एवं अखूट पुण्य का संचय करने वाला बनता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन की 43 वीं पृच्छा में वैयावृत्य करने वाले के तीर्थंकर नाम गोत्र कर्मबंध होने का कथन है, जो एक उत्कृष्ट पुण्य प्रकृति है। कई संत-सती तो उत्साहपूर्वक अहोभाव से इसमें रुचि लेकर पुरुषार्थ से कर्मों की महानिर्जरा करते हैं, जिनशासन की महती प्रभावना करते हैं तो कतिपय संत-सती इस कार्य में उपेक्षा बरतते हैं, आलस करते हैं या उदासीन रहते हैं, यह सर्वथा उचित नहीं। आचार्य भगवंत पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने अपने समूचे संयमी जीवन में अर्जन भी खूब किया तो विसर्जन में भी उदारता बरती। वृद्धावस्था में भी सुदूर दक्षिण क्षेत्र तक पधारकर श्रावक-श्राविकाओं को साधना के क्षेत्र में जागृत कर श्री संघ की विशेष वैयावृत्य और जिनशासन की महती प्रभावना की। बाड़मे जैसे रेतीले सीमा प्रांत के प्रदेश में जाकर संघ की प्रभावना की, इसके साथ पोरवाल क्षेत्र में भी सामायिक-स्वाध्याय की प्रवृत्ति का बीजारोपण कर उसे सरसब्ज बनाया। आने वाले हर व्यक्ति को धर्मस्थान में आने की प्रेरणा कर सामायिक स्वाध्याय से जोड़ने का अभियान चलाया। वे जीवन भर सामायिक स्वाध्याय का बिगुल बजाते रहे तथा हर आगत को कुछ न कुछ देते रहे। जीवन के अन्तिम क्षणों तक भी यह क्रम अनवरत बना रहा।

सेवा करने में किसी प्रकार की ऐहिक-पारलौकिक कामना अन्तर्मन में न हो। किसी पद-प्रतिष्ठा को पाने के लिये सेवा नहीं करें, अपितु परम पद में प्रतिष्ठित होने की भावना से सेवा का रूप हो। आगत भक्त को सिर्फ अपने से ही न जोड़ें, उसे धर्म से जोड़ें, संघ से जोड़ें, भगवान से जोड़ें। स्वयं भीतर से असंग रहकर, श्रद्धालु को धर्म संघ से जोड़ना हानि का नहीं, अपितु स्व-पर दोनों के लिये महान् निर्जरा का ही कारण है।

आपकी प्रेरणा से यदि कोई जीव सम्यक् दर्शन को प्राप्त करता है तो उस जीव के लिये महानतम कार्य तो होगा ही, साथ ही जिनशासन की सुन्दर सेवा का रूप भी समावेशित होगा। हरिभद्राचार्य के शब्दों में-

सयलमवि जीव लोए तेण इ इ घोसिओ अमारिओ।  
इक्कमि जो दुहत्तं सत्तं बोहेइ जिणवयणे॥  
सम्भत्तदायगाणं दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु।  
सव्वगुणमीलियाहि वि उवयार सहस्सकोडिहि॥

उक्त दोनों गाथाओं में बताया है कि जो भव्यात्मा किसी एक भी दुःखार्त जीव को भी जिन प्रवचन में प्रतिबोधित करता है तो वह जीव समस्त जीव लोक में अमारि घोषणा करवाने का कार्य भी करता है, ऐसा जानना चाहिए। क्योंकि वह प्रतिबोधित जीव पूर्ण अहिंसक बनकर समस्त जीवों को अभयदान देने वाला होता है।

बहुत से भवों में समस्त गुणों से युक्त करोड़ों (हजारों करोड़) प्रकार के उपकार करने पर भी सम्यक्त्व प्राप्त कराने वाले परमोपकारी के उस परम उपकार का प्रत्युपकार होना अत्यन्त कठिन है। अर्थात् उनका उपकार चुकाया नहीं जा सकता।

सम्यक्त्व दान समस्त उपकारों में महान् उपकार है। इससे बढ़कर कोई अन्य उपकार नहीं हो सकता। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं— सभी प्रकार के दान सभी प्रकार की सेवा और सभी तरह के उपकार, सम्यक्त्व दान के करोड़वें अंश में भी नहीं आ सकते।

इस संघ में पूर्वाचार्यों के श्रेष्ठ संस्कारों की लम्बी शृंखला है। ग्लानादि की सेवा में संत-सती अग्रणी रहे हैं। आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) ने पूज्यपाद शोभाचंद जी म.सा. के लिये सेवा के संदर्भ में भजन की पंक्तियों के माध्यम से भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति की है— “पूज्य विनयचंदजी की सेवा करैया हो तो ऐसे हो।” शोभाचन्द्रजी म.सा. ने अपने गुरुभाई पूज्य आचार्य श्री विनयचंदजी म.सा. की अग्लान भाव से लम्बे समय तक बेजोड़, अद्भुत सेवा कर आदर्श उपस्थित कर इतिहास रच दिया। ऐसी सेवा स्व-पर दोनों के लिये उपकारी है। वे मात्र कायिक साता उपजने तक की ही सेवा नहीं करते, अपितु मानसिक समाधि का भी ध्यान रखते थे। ऐसी सेवा के संस्कार आज भी संघ में प्रवर्धमान हैं। सेवा करके किसी तरह के अहंकार का पोषण न हो, इस बात का बराबर उपयोग रखें। पूज्य आचार्य भगवन्त द्वारा रचित भजनों की पंक्ति आप सभी की जुबान पर है— “गजेन्द्र सब पूज्यों का अनुचर” ऐसी लघुता के साथ सेवा होती रहेगी तो प्रभुता अवश्य मिलेगी। मुनि नन्दीषेणजी हमारी सेवा के आदर्श हैं। जिनकी सेवा की सौरभ देवलोक तक पहुँच गई— देव उनकी परीक्षा लेने आए। ऋजुता, सहनशीलता के साथ सेवा भावना को देखकर वह नतमस्तक हो गया। सेवा लोक-दिखाऊ नहीं हो, अपितु आन्तरिक सेवा भाव से सेवा कर सच्चे मायने से सेवाभावी बनें।

सेवा की महिमा को महिमामण्डित करते हुए मनीषियों ने कहा भी है— “सेवा धर्मः परम गहनो, योगिनामप्यगम्यः।” अर्थात् सेवार्थ अत्यन्त गहन है, यह योगियों के लिये

भी अगम्य है। ऐसे सेवा धर्म को हम चारित्री अपने जीवन में चरितार्थ कर कृत-कृत्य बनें। इसी सेवा धर्म को उत्तराध्ययन सूत्र के 32 वें अध्ययन की तृतीय गाथा में मुक्ति का सोपान बताया है। “तस्सेस मग्गो गुरुविद्ध सेवा।” अर्थात् उस मोक्ष का मार्ग दाता गुरु और वृद्धजनों की सेवा है। नीतिकारों ने इस विषय में सटीक शब्दों में कहा भी है- “अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः, चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥” जो अभिवादन के स्वभाव वाला है एवं वृद्धजनों की नित्य सेवा करता है, उसकी चार चीजें बढ़ती हैं- आयु (अकाल मृत्यु नहीं होती), विद्या, यश और बल। इन्हीं चार चीजों की प्राप्ति के लिये आज का सारा संसार भाग-दौड़ कर रहा है। पर यह चमत्कारिक रहस्य है कि ये चारों बिन्दु विनम्रता और सेवापरायणता के अधीन हैं।

अभी तो संघ सेवा की प्रधानता से अपनी बात रख रहा हूँ। ग्लानादि की सेवा के साथ चतुर्विध संघ-सेवा को भी महत्त्व देंगे तो इस संघ की दीप्ति में चार चाँद लग जायेंगे। इस संघ में अनेक प्रतिभा सम्पन्न संत-सती हैं। वे अपने सामर्थ्य का सदुपयोग कर ही रहे हैं। उन्हीं से प्रेरणा लेकर अन्य संत-सती भी सेवा में आगे आएँ। अपने जीवन में चारित्रिक उत्थान वाली पहचान, सद्गुणों के विकास के साथ सेवा भावना को दीर्घकालीन प्रवृत्ति के रूप में प्रस्फुटित करेंगे, ऐसी भावना है।

हर संत-सती अपने सामर्थ्य के अनुसार वृद्ध, ग्लानादि की सेवा के साथ संघ-सेवा करके कर्मों की महानिर्जरा करें, शासन की प्रभावना करें। अपनी योग्यता में विकास करें। सेवा की भावना से सहज ही योग्यता में विकास सधने लगता है। अभ्यास से, लगन से सब संभव है।

श्रावक-श्राविकाएँ भी संघ सेवा में ओर आगे आयें। अध्ययन-अध्यापन की सेवा, विहार सेवा, ग्लानादि की सेवा में विशेष सहयोग करते हुए भी महानिर्जरा कर भवों का अवसान कर मुक्ति पथ प्रशस्त करें। कवि की भाषा में-

“संतन की सेवा कियों, प्रभु रीझत हैं आप।  
जांका बाल खिलाइये, वां का रीझत बाप॥”

जैसे किसी के बालक को खिलाने से उसके माता-पिता खुश रहते हैं वैसे ही संत-सतियों की सेवा करने से प्रभु (भगवान) अपने आप इस सेवा करने वाले पर रीझ (प्रसन्न होना) जाते हैं। वैसे भी संत-सतियों के समीप रहने से संसार का राग घटता है, धर्मानुराग बढ़ता है, बोधि बीज प्राप्त होता है जो मुक्ति का मूल है। अतः संघस्थ श्रमण-श्रमणी व श्रावक-श्राविकाएँ आत्म-आराधना के साथ चतुर्विध संघ की भी सेवा करके कर्मों की महान् निर्जरा करेंगे, इसी मंगल मनीषा के साथ.....।

-जगदीश जैन

## समाज की विकृतियों का निवारण कैसे?

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राजस्थान) में 01 सितम्बर 1991 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक जिनवाणी, जोधपुर द्वारा किया गया है, जो आज भी प्रासंगिक है।-सम्पादक

आज सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का च्यवनकल्याणक है। त्रैलोक्य में शान्ति और समाधि की स्थापना करने वाले, सम्पूर्ण राज्य में फैली हुई महामारी के प्रकोप का निवारण कर जन-जन के अधीर मानस को धैर्य एवं शांति प्रदान करने वाले एवं जीवन की प्रत्येक विकृति का शमन कर जीवन में विकास का पथ अंगीकार करने वाले भगवान शांतिनाथ के श्री चरणों में कोटि-कोटि वन्दना।

बंधुओं! जगत का प्रत्येक प्राणी शान्ति और समाधि की कामना रखता है। जहाँ असमाधि है, विकृति है, वहाँ कहीं भी शान्ति नहीं, सुख-चैन व आराम नहीं। प्रकृति की ओर दृष्टिपात करिए- आकाश यदि अशांत है तो वायुयान उड़ान नहीं भर सकेंगे और धरा अशांत है तो प्राणिमात्र बेचैन रहेगा। मौहल्लों में हड़ताल आदि भी हो तो आप अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहेंगे।

अशान्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व का मार्ग अवरुद्ध कर देती है। जहाँ अशान्ति है वहाँ विकास की गति स्वतः रुक जाती है। जीवन में विकास के लिए और अशांत मानस में शान्ति का स्रोत बढ़ाने के लिये व्यक्ति क्या करे? कहाँ जाए? यह एक विषम समस्या है। समस्या का अत्यन्त सहज समाधान भी है और वह है तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी, उसके अनुसार आचरण। जीवन से अशान्ति को दूर करने एवं शान्ति व समाधि का राजमार्ग बताने वाले तीर्थंकर भगवन्तों ने प्राणिमात्र के लिए अपने अहं को त्याग कर, मैं और मेरेपन को छोड़ कर, स्व तथा पर हित में अपने को तथा समाज को आगे लाने की बात जगत के समक्ष रखी। व्यक्ति यदि उस मार्ग पर चले तो जीवन में कहीं भी अशांति का नाम नहीं रहेगा।

किसी भी विकृति के मूल में होता है- व्यक्ति का अहं। सबसे बड़ा कारण है यह विकृति का। आज व्यक्ति-समूह का सर्वाधिक हिस्सा अपने अहंकार की तुष्टि में अपने

अमूल्य जीवन का सर्वनाश कर रहा है। “मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ, मैं जो चाहूँ हो सकता है। मैं ऐसा कुछ कर दिखाऊँ कि लोग केवल मुझे ही देखें, देखते रह जाएँ। मुझ पर, मेरे कार्य-कलापों पर सभी का ध्यान लगा रहे, सभी सोचें मेरे व्यक्तित्व के बारे में।” बस इन्हीं सब में डूबा वह अपने रहन-सहन, खान-पान एवं पारिवारिक रीति-रिवाजों को प्रदर्शन की वस्तु बना देता है। उसकी बस एक ही चाहना रहती है- “लोग दूसरों के नाम को भूल जाएँ, मेरा नाम याद करें।”

मानव का अहं भाव उसके जीवन की सबसे बड़ी विकृति तो है ही, साथ ही अन्य विकारों का जन्म भी उसके इसी अहं भाव की देन है। मानव जीवन के सबसे बड़े शत्रु इस अहं भाव का पोषण होता है- अन्यायोपार्जित धन से। सामान्य व्यक्ति जो न्याय-नीतिपूर्वक ईमानदारी और सच्चाई से जीवन यापन करता है, उसके जीवन में विकारों का स्थान प्रायः नहीं होता। यदि कहीं होता भी है तो नहींवत्। ऐसे व्यक्ति को अपने और अपने परिवार के जीवन को चलाने एवं विकास करने के अतिरिक्त किसी अन्य बात के लिए अवकाश ही कहाँ मिल पाता है।

विकृति की जड़ अहं में है तथा अहंभाव की वृद्धि का एक कारण अन्याय से उपार्जित धन है। किसी एक समाज के लिए ऐसा सोचना बेमानी है। आज विकृतियों का फैलाव कहाँ नहीं है? विश्व का कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ के लोगों के मन में विकारों का समावेश न हो। कोई जाति, कोई समाज ऐसा बता दीजिए जहाँ विकृतियों ने प्रवेश न लिया हो और उनमें बढ़ोतरी न हुई है। जब सम्पूर्ण मानव जाति ही अनेकानेक विकारों से ग्रसित है और इसी कारण व्यथित, अशांत एवं बेचैन है तो केवल किसी एक समाज में, किसी एक जाति में ही उसको देखना कहाँ तक उचित है?

मूल में एक भूल और भी हो रही है। नादान और नासमझ व्यक्ति ‘सामाजिक विकृति’ को धर्म के साथ जोड़ देते हैं। विचार-विमर्श के लिए विषय रख देते हैं- “जैन धर्म में विकृति है।” सत्य तो यह है कि जहाँ धर्म है वहाँ विकृति कैसी? और जहाँ विकृति है वहाँ धर्म कैसा? धर्म और विकृति कभी साथ-साथ नहीं रह सकते। जिन्होंने जैन धर्म को पढ़ा है, उसके बारे में जाना समझा है एवं जैन दर्शन के सिद्धान्तों के बारे में यत्किंचित् भी जानकारी है, वे जानते हैं कि विकृति और विकारों से रहित आत्म-धर्म की ओर बढ़ना ही इस धर्म का लक्ष्य है। अतः इसका विकृति से सम्बन्ध जोड़ना और इसमें विकृति को सिद्ध करने की चेष्टा करना हास्यास्पद है। हाँ, समाज के साथ इन विकारों को जोड़ा जा सकता है। विकृति का उद्गम- स्थल व्यक्ति है, समाज है। धर्म तो सदैव विकृतियों का विनाशक रहा है। चिन्तन-मनन ही करना है तो उचित रहेगा कि आप ‘मानव समाज और विकृतियाँ’

जैसे विषय पर चिन्तन करें।

विकृति व्यक्तिगत होती है, अतः उसका प्रारम्भ व्यक्ति से ही होता है। व्यक्तियों का समूह है- समाज। एक व्यक्ति की विकृति जब चाहे, अनचाहे अन्य व्यक्तियों से जुड़ती है तो वह सामाजिक-विकृति का रूप धारण कर लेती है। इन विकृतियों से बचने के लिए समाज को, समाज में रहने वाले व्यक्ति को सचेतन बनकर, जागरूक बनकर वे कारण दूर करने होंगे, जिनसे विकृतियाँ होती हैं। साथ ही जो विकृतियाँ अब तक विकसित हो चुकी हैं, उन्हें नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील भी बनना होगा।

आचार्य भगवन्त इन विकृतियों से बचने की प्रेरणा देते हुए फरमाते हैं- “स्वाध्याय वह मार्ग है जिस पर चलकर व्यक्ति और समाज विकृतियों से निर्लिप्त रह सकता है। स्वाध्याय सद्विचारों को जन्म देता है और सद्विचारों से आचरण में शुद्धि आती है। आचरण में शुद्धि विकृतियों को नष्ट कर देती है। जिसके पास सामायिक, स्वाध्याय तथा आत्मचिन्तन का बल है, उसके निकट विकृतियाँ रह ही नहीं सकतीं।” यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि केवल पठन-पाठन मात्र ही स्वाध्याय नहीं है। पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना और इससे आगे बढ़कर जब चिन्तन, अनुप्रेक्षा के साथ अपने आपको आत्मस्वरूप में स्थित करने की स्थिति आने लगे तभी सही रूप से स्वाध्याय होता है। आज स्वाध्याय में आत्मस्वरूप तक पहुँचने का प्रयत्न होता नहीं। केवल पठन-पाठन तक सीमित हो रहा है- स्वाध्याय। उसके शेष महत्वपूर्ण अंग लुप्त हो रहे हैं, गौण समझे जा रहे हैं, तभी तो व्यक्ति विकृतियों का पात्र बनता जा रहा है और वे कम होने के स्थान पर बढ़ती जा रही हैं।

आज मानव अंधाधुंध भौतिकवाद की चकाचौंध के पीछे भाग रहा है। धन, ऐश्वर्य, मान-सम्मान, वैभव-सम्पदा, सत्ता एवं शासन के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। न्याय-अन्याय, नीति-अनीति तथा कर्तव्य-अकर्तव्य का विवेक वह त्याग चुका है। उसे तो धन चाहिए, भले ही वह किसी भी ढंग से प्राप्त हो। ऐसा अन्याय-अनीति का धन, दो नम्बर का धन, भ्रष्ट आचरण से प्राप्त धन व्यक्ति के आचरण को भ्रष्ट ही बनाएगा। ऐसे में विकृतियों का समावेश अवश्यंभावी हो जाएगा। यही हो रहा है आज। व्यक्ति विकृतियों का पुतला बन गया है। उसका खान-पान, रहन-सहन, उसके रीति-रिवाज सभी विकृतियों से भर गए हैं। यह फैशन, यह आडम्बर, यह प्रदर्शन, शादी विवाहों में महंगे खर्चीले भोज, विद्युत् सजावट, फोटो, टी.वी., वीडियो, आतिशबाजी, नाच-गाना तथा मदिरापान आदि जिस तरह से जैन-समाज में घुसकर उसके जैनत्व को खोखला बना रहे हैं उससे आप सभी परिचित हैं। क्यों हो रहा है यह सब? स्पष्ट है समाज ने भी धनार्जन में

न्याय-नीति को ताक पर रख दिया है, खूटी पर टांक दिया है।

यदि धनार्जन न्याय-नीतिपूर्वक हो रहा हो तो विकृतियों के आने की कोई संभावना नहीं बनती। आपने पूनिया श्रावक का नाम सुना है। वह न्याय-नीतिपूर्वक आवश्यक-तानुसार धन का उपार्जन कर अपनी जीविका सन्तोष के साथ चलाता था। एक समय नित्य नियमानुसार वह सामायिक-व्रत लेकर स्वाध्याय, मनन-चिन्तन करने लगा। लेकिन सदैव की भाँति आज उसका मन नहीं लगा। वह विचार करने लगा- “क्या बात है? आज मेरा मन अशांत अस्थिर क्यों है? उसका चिन्तन चलता है। अपनी विगत दिनचर्या पर गहन चिन्तन करने पर भी दिनभर के कार्यकलापों में उसे कोई विपरीतता नज़र नहीं आती है, कोई भूल दिखाई नहीं देती, सामायिक का समय पूर्ण होने पर विधिपूर्वक सामायिक पालकर श्रावक जी सारी बात श्राविका से कहते हैं। श्राविका का चिन्तन चलता है, उसे याद आता है कि कल चूल्हा जलाने पड़ौस के घर से आग लाने गई तो वहाँ से बिना पूछे एक छाणा (गोबर का उपला) ले आई थी। श्रावकजी से वह यह बात कहती है बगैर पूछे पड़ौसी का एक उपला ले लेना मन की शान्ति भंग कर देता है। अब आप चिन्तन करिए। अपने जीवन की, अपने व्यवहारों पर नज़र पसारिए। क्यों अशांत हैं आप सभी? क्या कारण है कि आपका मन सामायिक-स्वाध्याय में नहीं लगता? क्यों सभी गृहस्थ आज मानसिक तनाव से ग्रस्त हैं? आपने कभी इन बातों पर चिन्तन ही नहीं किया। चिन्तन करते तो पता लगता कि जिस जीवन को जिया जा रहा है, वह काले धन पर, दो नम्बर के व्यवसाय पर फल-फूल रहा है। ये बंगले, कारें, कीमती कपड़े, ब्लेक मनी जहाँ होगी वहाँ विकृतियाँ नहीं तो और क्या होगा? वहाँ शान्ति और समाधि कैसे आयेगी?

धन आप सभी को चाहिए। धन गृहस्थ जीवन की आवश्यकता है। अतः धन का उपार्जन बुरा है, ऐसा कहना तो न्याय संगत नहीं होगा, पर इतना अवश्य कहूँगा आप सभी से कि नीति, न्याय, सदाचरण एवं ईमानदारी पूर्वक धनार्जन होना चाहिये। जैन श्रावक के लिए स्पष्ट निर्देश है कि वह नीति, न्याय, सदाचरण एवं ईमानदारी पूर्वक धनार्जन करे। मार्गानुसारी के पैँतीस बोलों में एक बोल आता है- “न्यायसम्पन्न विभवः।” जो जीव पुण्यशाली हैं, पूर्व जन्मों में जिन्होंने मुक्त हस्त से दान दिया है, ऐसे जीव जहाँ जायेंगे वैभव उनके साथ जायेगा। जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़ेंगे, वहाँ-वहाँ कमल खिलेंगे। धनराजी की तरह पुण्यशाली जीव अपनी सम्पत्ति छोड़ यदि सुनसान जंगल में भी चले जाएं तो वहाँ भी मंगल हो जायेगा। पुण्यवान व्यक्ति गंगा के किनारे खड़ा हो जाए तो वहाँ भी चिन्तामणि रत्न निकल सकता है। किसी खेत में खड़ा हो जाये तो वहाँ भी तो सोने के चरु निकल सकते हैं। राजदरबार में चला जाए तो उसका स्वागत होगा। आवश्यकता इस बात की है

कि पुण्यार्जन किया जाए। न्याय-नीति से धनार्जन कर सर्वकार्यों में उसका विसर्जन किया जाए।

आप कहते हैं- “जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन”। बात सत्य है। व्यक्ति का जैसा आहार हो गया उसी के अनुरूप उसके विचार बनेंगे और जैसे विचार होंगे उसी के अनुरूप उसका आचरण होगा। यही कारण है कि हमारे पूज्य धर्माचार्यों ने पन्द्रह कर्मादानों से उपार्जित किए जाने वाले धन से बचने पर बल दिया है। पाप और अनीति से अर्जित धन आपके जीवन को पतन के मार्ग पर ले जा रहा है। आप अपने जीवन के लक्ष्य को समझें। जिस दिन लक्ष्य समझ कर उस मार्ग पर चलेंगे, विकृतियों का पनपना बंद हो जायेगा। यदि लक्ष्य को जाने-समझे बिना ही पथ निर्धारित कर लिया तो जीवन में दुर्व्यसन बढ़ेंगे।

आपका यह समाज, ओसवाल समाज, जिसके लिए कहा जाता था- ओसवाल भोपाल। आज क्या दशा है उस समाज की? दुर्व्यसनों से दूर रहने वाला और सप्त कुव्यसनों का जन्मजात त्यागी यह समाज आज व्यसनों में कहाँ तक डूब चुका है! आपके समाज में कोई शराब नहीं पीता था। अन्य समाजों में इस बात के लिए आपकी प्रतिष्ठा थी। आज अधिकांश युवा वर्ग मदिरापान के व्यसन में जकड़ा हुआ है। राजस्थान से बाहर तो इसका एवं अन्य दुर्व्यसनों का विषम रूप है ही, पर राजस्थान में भी ओसवाल समाज इन सबसे अछूता नहीं रह गया है। ग्रामानुग्राम विहारी हम सन्तों ने पाली और बालोतरा देखा है। आचार्य भगवन्त की सेवा में वहाँ चातुर्मास के अवसर भी हमें मिले थे। इन क्षेत्रों में समाज-व्यवस्था का कुछ साफ-सुथरा, सुधरा हुआ अपेक्षित रूप दिखाई पड़ता था और यही कारण है कि तब वहाँ समाज में एक विशेष अनुशासन था। आज इन क्षेत्रों की स्थिति भी बदल गई है।

जोधपुर में भी ओसवाल समाज की एक संस्था ‘ओसवाल सिंह सभा’ के नाम से है, लेकिन इस संस्था का अपने समाज पर प्रभाव एवं अंकुश शायद नगण्य है, तभी यहाँ के ओसवाल समाज का संगठन, समाज-व्यवस्था और अनुशासन जैसा होना चाहिए वैसा नहीं रहा है। यदि सिंह सभा का अपना प्रभाव अनुशासन और विशिष्ट कार्यप्रणाली होती, उसका कार्य क्षेत्र विस्तृत होता, उसमें समर्पित कार्यकर्ता होते तो विकृतियाँ नहीं बढ़ती।

संघ और संगठन जहाँ जागरूक है। समाज के प्रमुख, अग्रगण्य, मुखिया लोग यदि जाग्रत हैं तो समाज में व्यवस्था और अनुशासन निश्चित रूप से बना रहेगा। आचार्य भगवन्त के रायचूर चातुर्मास के पश्चात् की एक घटना है। रायचूर चातुर्मास सम्पन्न कर आचार्य भगवन्त विहार कर अनेक क्षेत्र-स्पर्श करते हुए हैदराबाद आए। हैदराबाद की एक इस्लाम धर्मावलम्बी बहन अपने परिजन के साथ सिनेमा देखने गई, बहिन के बाल खुले थे।

सिर पर पल्लू नहीं था, कहना चाहिए—सिर ढका हुआ नहीं था। सिनेमा हॉल में उस महिला की कुर्सी के पीछे की सीट पर बैठे किसी चंचल युवक के पास संयोगवश कैंची थी। अपनी छेड़खानी करने की आदत से मजबूर उस युवक ने बहुत ही आहिस्ता से कैंची चला दी। मुस्लिम बहन की चोटी के कुछ बाल कट गए। घर आने के बाद यह बात एक से दूसरे को, दूसरे से तीसरे को मालूम हुई, बात फैल गई तो समाज एकत्रित हुआ। वहाँ के मुस्लिम समाज ने तब निर्णय लिया कि इस क्षेत्र की कोई भी इस्लामी बहू-बेटी सिनेमा देखने नहीं जाएगी। जो घर इस नियम का पालन नहीं करेगा, उस घर का समाज का कोई पुरुष मरण-गमी, होने पर कंधा देने नहीं जाएगा। सच मानिए, उस समाज में उस नियम का पालन बिना किसी चौकसी (चौकीदारी) के हुआ।

आपका यह ओसवाल समाज विश्वभर के अन्य समाजों में एक विशिष्ट स्थान, एक विशेष प्रभाव, एक गौरवशाली प्रतिष्ठा रखता है। क्या कमी है आपके इस समाज में? धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, बुद्धि, नाम, प्रतिष्ठा सब कुछ तो है आपके समाज के पास। कमी एक ही है, इस समाज में और वह है—हिम्मत और साहस का अभाव। समाज में झगड़े खड़े हो रहे हैं, विकृतियाँ आ रही हैं, आडम्बर बढ़ रहा है पर देखते-जानते हुए भी किसी की कुछ कहने की हिम्मत नहीं है। बन्धुओं! आपका समाज शायद कुछ मर्यादाएँ या नियम निर्धारित कर सकता है, पर उसका पालन कितना हो रहा है, यह कैसे ज्ञात होगा? ज्ञात हो गया तो अंकुश कैसे लगेगा? आपके घर में मांस-मिट्टी खाने के लिए नियम बनाने की कभी आवश्यकता ही नहीं थी, फिर इस अभक्ष्य का खान-पान समाज में क्यों प्रारम्भ हो गया? कारण स्पष्ट है, आप जानते हैं ऐसा हो रहा है पर उसे प्रकट करने, कहने की हिम्मत आपमें नहीं। समाज की कोई विकृति आपसे छिपी नहीं, देखते, जानते हैं, मानते हैं सब, पर कहने का करने का, सामर्थ्य नहीं, साहस नहीं।

आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ जैनेतर समाज के अनेक श्रद्धालुजन आते थे। एक बार चौधरी समाज के एक दर्शनार्थी भाई ने बताया कि उनके यहाँ शादी-विवाह में अमल की अत्यधिक मनुहार की जाती थी तथा चाय-पान का भी बहुत रिवाज था, पर हमने समाजगत नियम बना दिया कि शादी-विवाह में अमल नहीं गालेंगे और न चाय पिलायेंगे। समाज की बात न मानने पर समाज की पंचायत दण्ड देगी। कितनी सुन्दर व्यवस्था है इस सामाजिक पंचायत की। क्या आप ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं? आप से पूछा जाए तो आप बातें तो बहुत सी कर लेंगे, पर नियमों में रहकर चलने की बात पर चुप्पी साध लेंगे, पीछे हट जायेंगे। अरे, समाज की बात तो दूर, आप अपने घर में अपने बच्चों तक को कुछ नहीं कह पाते। हिचकिचाते हैं, उनसे डरते हैं कि कहीं युवा रक्त आपके सामने कुछ कह न दे,

कुछ कर न दे। ऐसी हालत में व्यवस्था, अनुशासन भला कैसे रह सकता है? समाज में अनुशासन रखना है तो समाज के लोगों का मानस बदलना होगा। मानसिक वृत्ति से ही स्वानुशासन रह सकेगा या फिर भय अर्थात् दण्ड-विधान होना चाहिए। समाज में न तो मानसिकवृत्ति ही है और न ही दण्ड-भय।

समाज-सुधार का जब प्रश्न आता है तो वहाँ समाज-ऐक्य की बात पहले खड़ी होती है। यदि समाज में संगठन नहीं, एकता नहीं तो एक नियम आज बनता है, कल वह तोड़ दिया जाता है। सामाजिक एकता का कुछ रूप सिंवाची पट्टी के लोगों में देखने को मिलता है। जोधपुर के ओसवाल समाज में सुधार के लिए विकृतियाँ दूर करने के लिए, आडम्बर और प्रदर्शन मिटाने के लिए समाज को पहले एक बनना चाहिए। सिंह-सभा के नाम से संगठन तो है, परन्तु उसका वह रूप नहीं है जो समाज में सुधार ला सके।

समस्या कोई ऐसी नहीं होती जिसका उचित समाधान न हो। जन्म-जन्मान्तर की विकृतियाँ भी नष्ट हो सकती हैं, तो फिर समाज में प्रादुर्भूत विकार भला कैसे दूर नहीं होंगे, निरन्तर प्रयास करने होंगे।

आपके सामने ही कितने ही समाज ऐसे हैं, कितनी ही जातियाँ ऐसी हैं, जिन्होंने अपनी विकृतियाँ-बुराइयाँ दूर की हैं। सांसी जाति, बलाई जाति, खटीक जाति आदि कितनी ही जातियाँ है ऐसी। खटीक समाज जिसमें व्यक्ति के हाथों में छुरी रहती थी, हिंसाही उसका व्यापार था, आज वह समाज अहिंसक समाज है।

कभी कितना सुन्दर था आपका समाज। अहिंसक वस्त्र पहनना, अहिंसक जूते पहनना, मदिरा-मांस का सेवन न करना, जुआ न खेलना, सामाजिक भोजों में सूर्यास्त पूर्व भोजन करना व करवाना, सामूहिक जीमणवार में जमीकन्द के प्रयोगों का निषेध, बारात आदि में केवल शिष्ट प्रदर्शन होता था। आज स्थिति कितनी विषम बन गई हैं। सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो गया है। अरे आप व्रत-प्रत्याख्यान, सौगन्ध भी लेते हैं तो आडम्बर, प्रदर्शन के साथ और उसमें भी गली रख लेते हैं। रायपुर, नागपुर तथा अनेक स्थानों पर आचार्य भगवन्त से कई लोगों ने दहेज न लेने का नियम लिया, पर जब बच्चे की शादी का समय आया तो गली निकाल ली- “बाबू ने मांग कर दी, उसके तो ऐसा नियम लिया हुआ था नहीं।” बन्धुओं! इस तरह की गलियाँ निकाल लेने से सुधार होने वाला नहीं है। समाज को संगठित होकर, एकजुट होकर विकृतियाँ दूर करने की कठोर व्यवस्थाएँ बनानी होंगी।

आपने सामाजिक विकृतियों को दूर करने के प्रयास में भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध आदि के आयोजन किए। हम संतों को भी बुलाया है, जिससे हमारे कथन का, प्रवचन का समाज पर असर हो। अच्छा ही कर रहे हैं आप, पर देखिए आपके जोधपुर नगर में आज से

नहीं वर्षों से कोई न कोई संत विराजमान रहे ही हैं। धर्मोपदेश से यह नगर कभी वंचित रहा हो, ऐसी बात मेरे ध्यान में नहीं। उधर इस्लाम सम्प्रदाय की तरफ नज़र डालिए, कौनसा फकीर आया उनके सम्प्रदाय का यहाँ, फिर भी उनके भीतर अपनी समाज-व्यवस्था है, उस व्यवस्था का एक निश्चित, निर्धारित स्वरूप है।

बन्धुओं! समाज सुधार के लिए परिवर्तन की दिशा में इतना आप सभी से कहना चाहूँगा कि विकृतियों को दूर हटाने के लिए आप स्वयं को प्रयत्नशील होना होगा, आगे आना होगा, साहस दिखाना होगा, आप समाज की विकृतियों को जहाँ भी देखें तो बुलन्दी से कहने की हिम्मत दिखाएँ। उन विकृतियों से आप स्वयं अपने को अलग-थलग रखें। विशेष अवसरों पर समाज के प्रतिष्ठितजन और अन्य भी अपने अहंकार के पोषण की भावना का त्याग करें। आप बुराई को बुराई समझकर विकृतियों के निवारण के लिए व्यक्तिगत एवं संगठित प्रयास करें। ऐसा करने पर ही आपके जीवन से एवं समाज से विकृतियाँ हट सकेंगी।

## जीत वही पाता इसको

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म. सा.

जब भाव हमारा पर से जुड़ता, आसक्ति कहलाता है,  
जीत वही पाता इसको, निज ज्ञान का आदर करता है।  
पुण्य योग से मिला है जो भी, सदुपयोग बस करना है,  
सुखमय जीवन और लक्ष्य मुक्ति का, मार्ग श्रेष्ठ यह लगता है।  
अज्ञान तिमिर के हटने से ही, अंतर ज्ञान की ज्योति जलती,  
पुरुषार्थ सतत करते रहने से, मुक्ति की मंजिल मिलती।  
हम कभी न भूलें अपने भीतर, अखंड ज्ञान का दीप जलाना,  
घातक पवन प्रलयकारी सम, अहंकार से इसे बचाना।  
अहंकार है दोष भयंकर, न जगने देता गुण जो भीतर,  
पुरुषार्थ हमारा निष्फल करता, तृण-समूह में चिनगारीवत्।  
जितना गहरा चिंतन होगा, हिताहित का बोध मिलेगा,  
गुरु चरणों की छाया में ही, आत्म-ज्ञान आलोक मिलेगा।  
गुरु ज्ञान के सागर और, अतिशय गुण के धारक हैं,  
'प्रमोद' गुणी के गुण का करने, मेरे भाव समर्पित हैं।

-संकलन: श्री दिलरखुशराज जैन, सिद्धार्थ नगर, गोरगांव (प.), मुम्बई (मह.)

## कृतित्व का अभिमान : सबसे बड़ा दोष

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 20 नवम्बर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

‘आप जानते हैं कर्म बंध का सबसे बड़ा कारण क्या है? वह कौनसा खतरनाक दोष है, जिसके कारण सर्वाधिक व्यर्थ के कर्म बंध होते हैं? कृतित्व का अभिमान ऐसा दोष है जिसके फलस्वरूप जीवन में सबसे अधिक कर्म बंध होते हैं। मैंने ऐसा किया, मेरे कारण परिवार चल रहा है, मुझमें ऐसी-ऐसी खूबी है, यदि मैं नहीं होता तो ऐसा नहीं हो सकता था, मेरी वजह से ही उसका भला हो सका, मेरी मदद या सिफारिश से उसका हित हो पाया, मैंने जीवन में ऐसे-ऐसे ऊंचे कार्य किए, मेरे जैसा अन्य कोई यह कार्य कर ही नहीं सकता, मैं ही सबसे अच्छा व्याख्यान दे सकता हूँ। अपनी प्रशंसा स्वयं करना और अपने को ही सही-अच्छा-समझदार-बुद्धिमान-विवेकी-ज्ञानवान-तपस्वी-सेवाभावी या ऊंचा समझना ये सब कृतित्व के अभिमान हैं। व्यक्ति छोटी-छोटी व मामूली बातों व कार्य करने में बहुत जल्द अभिमान को ले आता है। जितना कर्म बंध हिंसा के कार्य से नहीं हो पाता, उससे अधिक कृतित्व के अभिमान से होता है। मन के दूषित व गलत विचारों से व्यक्ति अपना अहित करता है। सपने में भी इंसान के बुरे विचार इसलिये चलते हैं क्योंकि भव-भव के नकारात्मक विचार मस्तिष्क में भरे पड़े हैं।

गुणों का अभिमान ही दोषों की उर्वरा भूमि है। सारे दोष चन्द गुणों के अभिमान से उत्पन्न हो जाते हैं। मेरा जैसा कोई तपस्वी नहीं। स्वाध्याय व सामायिक मैं सबसे अधिक करता हूँ। खूब दान करता हूँ और सब जगह मेरे नाम का डंका बज रहा है। यही तो अहंकार है। मजे की बात यह है कि कृतित्व के अभिमान से भीतर ही भीतर उत्पन्न होने वाले ये दोष किस तीव्रता से कर्म बंध में सहायक बने हैं, वे हमें दिखाई नहीं देते हैं, लेकिन पाप का मीटर निरन्तर चलता रहता है। इसलिये हर कार्य में जो सहज व निष्काम बना रहता है और कर्म के उदय में किसी को भी दोषी नहीं मानता, वही ऊँचा उठ सकता है। कर्म फल में आसक्ति से बचने वाला ही अपनी आत्म-पूँजी बढ़ा पाता है। बाहर की कोई भी सकारात्मक क्रिया हो, मगर अन्दर से जीव न्यारा रहे, यही चौकीदारी कर्म बंध से बचा

सकेगी। विडम्बना यह है कि बाहर थोड़ी सी कोई उपलब्धि-प्रगति-सम्पत्ति में बढ़ोतरी करता है, उतना ही आदमी भीतर से छोटा व संकीर्ण हो रहा है। साथ ही दुनिया भर की व्यर्थ व अनर्थ बातों में अपना सर्वाधिक समय गंवाकर उनका मैल अपने माथे पर लगा रहा है। चूंकि आप नहीं जान पा रहे कि संसार की तेरी-मेरी, उठा-पटक, निंदा-आलोचना, राग-द्वेष करके जीव व्यर्थ में कितना पाप कर्म बंध कर रहा है। सकारात्मक व पावन विचारों की जगह नकारात्मक व दूषित विचारों का दावानल निरन्तर धधक रहा है। फिर भी हमें हर विपरीत हालात व परिस्थितियों के बीच रहते हुए स्वयं की स्वयं रक्षा करनी है। परमात्मा की वाणी हम सबके लिये बहुत उपकारी है जिसका सहारा लेकर हम व्यर्थ व अनर्थ के कर्म बंध से बच सकते हैं। इनसे बचना ही तो वास्तविक धर्म है।

गुणी जनों के जीवन को देखकर खुद के दोष देखने वाला अपनी आत्मा के निकट जा सकता है। खुद की आलोचना करने पर ही भीतर के भाव निर्मल-विशुद्ध-पावन हो पाते हैं। सेवा करे, करनी ही चाहिए, परन्तु सेवा का कभी अभिमान न हो। मन में कभी किसी भी सेवा व अच्छे कार्य के प्रति खेद-खिन्नता नहीं वरन् उत्साह और बढ़े, तभी तो सकारात्मक सोच अशुभ व गलत विचारों से बचा पाएगी। चाहे सेवा हो या परोपकार, मानवीय कर्तव्यों का निर्वहन हो या फिर आत्म-साधना, गुणी जनों का पावन सानिध्य हो या साधु-संतों की सेवा अथवा उनकी सार-सम्भाल, उन सबके प्रति भाव विभोर होना, प्रमोद भावना लाना कोई गलत नहीं है वरन् यह मन की उमंग का परिचायक है, परन्तु भीतर के अपने परिणामों में लेश मात्र भी अभिमान की बू नहीं आनी चाहिए। घमण्ड की गंदगी ही तो सारे परिणामों को दूषित करती है। संयम व समता के भाव निर्मलता से पलें, वही सही अर्थों में शुद्ध सामायिक है। केवल मुँह पर पट्टी बाँध कर बैठने मात्र से कभी कर्म क्षय होने वाले नहीं है बल्कि अपने परिणामों की निर्मलता, निष्कपट जीवन शैली और अभिमान रहित सोच के द्वारा ही हम कर्म बंधों से बच सकते हैं। मोक्ष मार्ग वही पाते हैं जो वृक्ष की तरह निःस्वार्थ भाव से हर पथिक को छाया-फूल-फल प्रदान करते हैं और बदले में कुछ चाहते नहीं। वृक्ष की उदारता से हम सीखें जो पत्थर मारने पर भी बदले में मीठे-मीठे फल देता है। हम अपना जीवन देखें तो ज्ञात होगा कि थोड़ा सा भला करने पर बदले में ढेर सारा उपकार या सम्मान चाहने लग जाते हैं। यही तो अभिमान को जन्म देता है जो हमारे सारे पुण्य पर पानी फेर देता है। हम सिर्फ कर्तव्यनिष्ठ व निष्काम सेवा भावी बनकर जीना सीखें और बदले में कुछ नहीं चाहें, यही सम्यक् साधना है। कार्य के साथ अहंकार लाने वाला डूब जाता है और जो कार्य या सेवा के संग विनयशील बना रहता है, वह एक दिन तिर जाता है। भगवान किसी को नहीं तिराते वरन् भव सागर से तिरने के लिये खुद को ही नाविक

बनना पड़ता है। जो जिनवाणी माँ का आलम्बन लेकर नाविक बन पाता है, वह एक दिन जरूर संसार से पार होता है, होता आया है। कृतित्व का अभिमान नहीं करने वाले ही संसार में सुखी और परभव में मुक्ति की राह पाते हैं। अतः कर्म-फल में कैसी भी आसक्ति को अब उदय में नहीं आने दें, रसातल में जाने से बच जाओगे। ■

## अय महावीर!

श्री माणकचन्द कोटेचा

हिंसा के फैले महाताण्डव में  
 तुम्हारे शाश्वत सत्य दर्शन ने  
 तुम्हारे केवलज्ञान के आलोक ने  
 अनेकानेक आत्माओं को  
 परम सत्य का मार्ग दिखाया है।  
 तुम्हारे चिन्तन के उजाले में  
 हर समस्या का समाधान पाया है  
 तुम अतीत ही नहीं  
 वर्तमान और भविष्य भी हो।  
 तुम्हारी करुणा और वात्सल्य ने  
 समस्त प्राणी जगत् को अभय प्रदान किया  
 रूढ़ परम्पराएँ एवं कुरीतियाँ विलुप्त हुईं  
 युग ने क्रांतिकारी करवट ली  
 सत्य की खोज एवं साधना ने  
 तुम्हें अनन्तशक्ति-सम्पन्न बनाया।  
 आज फिर इस युग ने  
 तुम्हारा द्वार खट-खटाया है  
 तूफानों में कांपती लौ को  
 जीवित रखने का वक्त आया है  
 उस अमर उजाले के साये में  
 आत्म-ज्ञान, आत्म-संयम की  
 धरोहर का दीप जलाते हैं  
 अय महावीर! तेरे चरणों में  
 श्रद्धासिक्त शीष झुकाते हैं।

## नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा

महासती भाग्यप्रभाजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की प्रशिष्या एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती भाग्यप्रभाजी म.सा. प्रतिदिन 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा को सम्बोधित करते हैं। विभिन्न कक्षाओं में 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पद के सम्बन्ध में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए, उनका संकलन कर श्रावकरत्न श्री अशोकजी कवाड़, चेन्नई ने हमें उपलब्ध कराया है।-सम्पादक

नमस्कार महामंत्र का पंचम पद है "नमो लोए सव्व साहूणं"। अपेक्षा से अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय इन तीन पदों में भी 'साधुत्व' शोभा पाता है।

जैन श्रमण को इस दुनियाँ का आभूषण, इस जगत् का शिखर, इस विश्व की धरोहर, इस ब्रह्मण्ड का सार तत्त्व एवं समूचे संसार का प्राण भी कहा जा सकता है। श्रमण दिनचर्या को कोई भी नवीन व्यक्ति सुन ले व देख ले तो वह आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता। जैन साधु के त्याग की तुलना जगत की अन्य संत परम्पराओं से कोई निष्पक्ष होकर करे तो यह हस्तामलकवत् स्पष्ट है कि वह प्रभु वीर के साधुओं को प्रथम दर्जे में खड़ा करेगा।

"नमो लोए सव्व साहूणं" यह पद अपेक्षा से मंत्र भी है तो एक सजीव प्रेरणा भी है, यह दुनियाँ का अजूबा भी है, तो शासन का गौरव भी है। इस पद को जो स्वीकारता है वह तो धन्य-धन्य होता ही है, इस पद के ध्याता को भी मंगल कल्याण की प्राप्ति होती है। आध्यात्मिक जगत में यह पद विशेष गौरवान्वित है। पंच परमेष्ठी का प्रवेश द्वार है। अनेक जीव जो कि भौतिकता की चकाचौंध में उलझे हैं तथा त्रस्त, उद्विग्न एवं चिंतित हैं उन्हें इन सभी मानसिक क्लेशों से मुक्त होने के लिये पग-पग पर "नमो लोए सव्व साहूणं" बोलना चाहिए।

घाटा लगा, चिंता हो रही है तो 'नमो लोए सव्व साहूणं'। सोचे मेरे पास तो इतना है, धन्य हैं जो पूरा त्याग चुके। इस चिन्तन से निस्पृहता बढ़ती है। देह में बीमारी है तो जपे 'नमो लोए सव्व साहूणं' मेरे पास तो डॉक्टर, दवा, पथ्य, भोजन सभी हैं, धन्य हैं जो देह की ममता त्याग चुके। ऐसे चिन्तन से सहनशीलता बढ़ती है। कोई पारिवारिक वियोग हो तो

ध्यायें 'नमो लोए सव्व साहूण'। सोचें मेरा तो एक सम्बन्धी छूटा है, धन्य हैं वे जो सारे रिश्ते छोड़ चुके। इससे आर्तध्यान छूटकर धर्मध्यान आता है। कोई वस्तु गुम हो जाये एवं दुःख हो रहा हो तो गाएँ 'नमो लोए सव्व साहूण'। सोचें मेरे परिग्रह के भगोने से एक बूँद गई है, धन्य हैं वे जो परिग्रह के पूरे पात्र पर ठोकर मार गए। इससे अनासक्ति बढ़ेगी। कभी सदीं-गर्मी से बेचैनी हो रही है तो सुमरें 'नमो लोए सव्व साहूण'। सोचें मुझे तो इतनी व्यवस्थाएँ प्राप्त हैं, धन्य हैं वे जो ऋतुओं से होने वाली वेदनाओं का निवारण नहीं करते इससे समता बढ़ेगी। किसी से झगड़ा हो जाए तो ध्यान धरें 'नमो लोए सव्व साहूण' और सोचें मैं इतने से अपराधी को क्षमा नहीं दे रहा, धन्य हैं क्षमाश्रमण अनगार, मुझे भी उनका अनुयायी होने के नाते क्षमा धारण करनी चाहिए। अतः 'नमो लोए सव्व-साहूण'।

यह पद संगीत है, धुन है, मंत्र है, यंत्र है, तंत्र है, औषध है, शक्ति है, देवकृत सेवा है, अमृत है, जो श्रद्धा से इन्हें सुमरते हैं वे अनुभव को पाते हैं।

1. जो दिखने वाले ही नहीं, नहीं दिखने वाले जीवों को भी अपने आत्मतुल्य समझकर उनकी प्राणों से रक्षा करते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूण"।
2. जो जीवन पर्यन्त एक भी झूठ वाक्य नहीं बोलते व व्यवहार में भी झूठ न लग जाए एतदर्थ सतक रहते हैं अर्थात् जिनके मुख से निकला हर वाक्य, हर शब्द सत्य होता है, अतः "नमो लोए सव्वसाहूण"।
3. जो पर द्रव्य लेना तो दूर, उसे बिना आज्ञा छूते तक नहीं, यावत् उसे चाहते तक नहीं, अतः "नमो लोए सव्वसाहूण"।
4. जो जीवन पर्यन्त अपनी वासना को विफल करते हैं, दुर्जेय काम-भाव पर विजय मिलाते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूण"।
5. जो जीवन पर्यन्त एक दिन के जन्मे हुए विपरीत लिंगी को स्पर्श तक नहीं करते, अतः "नमो लोए सव्व साहूण"।
6. जो सोने व मिट्टी को, हीरे व कांच के टुकड़े को, नोट व रद्दी कागज को, खण्डहर व बंगले को, रत्नों व कंकरों को, रंगीन कपड़ों व कफन को एक मानकर त्याग चुके हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूण"।
7. जो अपनी समस्त समृद्धि का त्याग करके अकिंचन बने हैं अतः "नमो लोए सव्व साहूण"।
8. जिन्होंने माता-पिता के रिश्तों का त्याग किया व संयम के बाद जिनमें उन रिश्तों के प्रति अपनत्व की एक तरंग भी नहीं उठती, अतः "नमो लोए सव्व साहूण"।

(क्रमशः)

## पर्यावरण-सुरक्षा में जैन जीवन-शैली की उपयोगिता\*

प्रो. (डॉ.) प्रेम सुमन जैन

### प्राणि-संरक्षण की प्राचीन परम्परा :

इस देश में अहिंसा की, प्राणि-संरक्षण की प्राचीन परम्परा रही है। जीवन में कई आवश्यकताएँ हो सकती हैं, किन्तु उनकी प्राथमिकता तय करने में जीव-मूल्य को कसौटी माना जाता रहा है। इतनी ही वस्तुओं एवं साधनों से अपने जीवन को चलाना-चाहिए, जिनकी प्राप्ति में कम से कम जीवों का घात हो। आवश्यकता की अपेक्षा जीवों के प्राणों का मूल्य अधिक आंका जाता रहा है। करुणा और जीव-रक्षण के कई प्रेरक प्रसंग भारतीय इतिहास में भरे पड़े हैं।

श्रमण-परम्परा अहिंसक प्रयोगों के उदाहरणों से समृद्ध है। तीर्थंकरों ने पर्यावरण के संरक्षण से ही अपनी साधना प्रारम्भ की है। ऋषभदेव ने कृषि एवं वन-सम्पदा को सुरक्षित रखने के लिये लोगों को सही ढंग से जीने की कला सिखायी। नेमिनाथ ने पशु-पक्षियों के प्राणों के समक्ष मनुष्य की विलासिता को निरर्थक प्रमाणित किया। स्वयं के त्याग द्वारा उन्होंने प्राणि-जगत् की स्वतन्त्रता की रक्षा की। पार्श्वनाथ ने धर्म और साधना के क्षेत्र में हिंसक अनुष्ठानों को अनुमति नहीं दी। अग्नि को व्यर्थ में जलाना और पानी को निरर्थक बहा देना भी हिंसा के सूक्ष्मद्वार हैं। महावीर ने जीवन को उन सूक्ष्म स्तरों तक अपनी साधना के द्वारा पहुँचाया है, जहाँ हिंसा और तृष्णा असम्भव हो जाय। षट्काय के जीवों की रक्षा में धर्म की घोषणा करके महावीर ने पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा, वनस्पति, कीड़े-मकोड़े, पशुपक्षी एवं मानव इन सबको सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है। तभी वे कह सके-

मिती मे सख्व भूयेसु, वेरं मज्झं ण केणइ

मेरी सब प्राणियों से मित्रता है, मेरा किसी से वैर नहीं है। इस सूत्र को जीवन में उतारे बिना संयम नहीं हो सकता, धर्म की साधना नहीं हो सकती। पर्यावरण की सुरक्षा नहीं हो सकती।

### जैन जीवन शैली में पर्यावरण-सुरक्षा :

जैन जीवन-शैली में पर्यावरण-सुरक्षा आरम्भ से ही ऐसी घुली-मिली रही है, अतः

\* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

उसकी ओर अलग से विचार किए जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। आज जब गिरते जीवन मूल्यों के कारण वह जीवन शैली ही प्रदूषित हो गई है और साथ ही पर्यावरण-प्रदूषण भी अपने चरम की ओर बढ़ रहा है तब यह आवश्यक हो गया है कि हर पहलू को पर्यावरण के संदर्भ में देखा-परखा जाए। जैन ग्रन्थों को पर्यावरण के दृष्टिकोण से देखने लगे तो जान पड़ेगा कि उस विषय की सामग्री स्थान-स्थान पर बिखरी पड़ी है। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पर्यावरण के सभी पहलुओं का महत्त्व समझ कर उसे जीवनोपयोगी बनाए रखने का सबसे प्राचीन, समन्वित, समग्र और वैज्ञानिक प्रयत्न संभवतः जैनों ने ही अपने ग्रन्थों के माध्यम से किया था।

आचारांग में पर्यावरण के प्रमुख घटकों को विभिन्न प्रसंगों में व्याख्यायित किया गया है। सर्वप्रथम पृथ्वीकायिक जीवों के प्रति होने वाली हिंसा का वर्णन किया है। पृथ्वीकायिक जीव पारम्परिक परिभाषा में वे सूक्ष्म जीव हैं जिनसे पृथ्वी तत्त्व का निर्माण होता है तथा जो जीवन के लिए पृथ्वी तत्त्व पर आश्रित हैं। ठीक इसी प्रकार जलकाय, वायुकाय और अग्निकाय के जीवों की बात इस ग्रन्थ में की गयी है। इन जीवों की परिभाषा तथा जीवन प्रणाली आदि विषयों की चर्चा एक सर्वथा अलग और अपने आप में विस्तृत विषय है। हमारे दृष्टिकोण के लिए इतना ही यथेष्ट है कि दृश्य जगत् से परे जीवों का एक सूक्ष्म जगत् भी है जिसमें होने वाली क्रियाएँ हमें प्रभावित करती हैं तथा हमसे वे प्रभावित होती हैं। ऐसी स्थिति में हमारी वह प्रत्येक क्रिया जो उस सूक्ष्म जगत् को हानि पहुंचाती है हिंसा है और त्याज्य है। पर्यावरण-संरक्षण का यह पहला सोपान है। भगवान महावीर ने आचारांगसूत्र में हिंसा की सूक्ष्म व्याख्या करते हुए उसे व्यक्तित्व को विकृत करने वाली कहा है। हिंसा की क्रियाएँ पर्यावरण असंतुलन में प्रमुख कारण हैं। आचारांग में वस्तु जगत् और प्राणिजगत् के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। उसमें बताया गया है कि मन-वचन-काय की क्रियाएँ आस-पास के वातावरण पर प्रभाव डालती हैं। अतः मन, वाणी और शरीर की हलचल के प्रति सचेत होना आवश्यक है। अनुचित कार्यों की पहिचान करना जरूरी है।

भगवान महावीर ने अनुचित कार्यों का मुख्य कारण अज्ञान और असावधानी (प्रमाद) को माना है। प्रमादी व्यक्ति और मूर्च्छित (अज्ञानी) व्यक्ति को सब ओर से भय रहता है। वह तनाव से घिरा हुआ होता है। इसलिए वह आस-पास के वातावरण पर शासन करने के लिए दूषित कार्य करता है। जैन ग्रन्थों में इन प्रदूषणों से बचने के लिए अज्ञान और प्रमाद को दूर करने की बात कही गई है। इसके लिए व्यक्ति को जागरूक रहने के लिए कहा गया है। संसार की वास्तविकता को समझना ही जागरूकता है। ऐसा ज्ञानी व्यक्ति अपनी क्रियाओं

से वातावरण को दूषित नहीं करता। वह स्वयं के अस्तित्व और अन्य प्राणियों के अस्तित्व का सम्मान करने वाला होता है। यही जैन आगमों की पर्यावरण चेतना है। इसके लिए अनासक्ति, समता, वैचारिक उदारता, करुणा आदि सूत्रों की व्याख्या जैन ग्रन्थों में प्राप्त है, जिसका विश्लेषण करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

### सांस्कृतिक मूल्यों की पहिचान

पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या जितनी प्राकृतिक है, उतनी ही सांस्कृतिक और मानसिक असंतुलन से जुड़ी हुई है। संवेदनशीलता और संतोष वृत्ति के अभाव ने पर्यावरण को असंतुलित एवं विनाशकारी बनाया है। अतः प्राकृतिक समाधान के साथ-साथ पर्यावरण-संतुलन के लिए उन आध्यात्मिक सूत्रों की खोज भी मानव को करनी होगी, जो सांस्कृतिक और मानसिक दृष्टि से मनुष्य को पूर्ण करें। प्राचीन आगम ग्रन्थों में अहिंसा, करुणा, आजीविका-शुद्धि, अपरिग्रह वृत्ति एवं सद्भावना आदि के मूल्य प्रतिपादित हैं, जो पर्यावरण-संतुलन के वास्तविक आधार हैं। जैन आगमों में इस प्रकार के सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिपादन है, जो मानव की संवेदना को बढ़ाते हैं तथा प्रकृति के संरक्षण में अहम भूमिका निभाते हैं।

जैन आगमों में पृथ्वीकायिक, वनस्पतिकायिक आदि जीवों की हिंसा करने में दोष लगने की बात कही गयी है। मृग आदि का शिकार करने और लकड़ियों में आग लगाने आदि की क्रियाओं को पापमूलक कहा गया है। वृक्ष के फल, शाखा, कन्द-मूल आदि को नष्ट करने की क्रिया को हिंसक वृत्ति माना गया है। भगवतीसूत्र में उल्लेख है कि तापस शिव राजर्षि भी अपनी पूजा के लिए हरी वनस्पति, कन्द-मूल, पुष्प आदि के उपयोग के लिए लोकपालों की अनुमति लेते हैं। ग्रन्थ में एक नर्तकी का उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है कि संसार में रहते हुए भी जीव एक दूसरे की स्वतंत्रता के हनन एवं हिंसा आदि से बच सकते हैं। जैन आगमों में श्रावकों के लिए जिन पन्द्रह कर्मादानों (आजीविका के कार्यों) का निषेध किया गया है, वे सब पर्यावरण-संरक्षण के ही उपाय हैं। अतः जैन आगमों में जीवन और जीविका दोनों को शुद्ध रखने की बात कही गयी है, जो प्रमुख आधार है पर्यावरण-संतुलन का। धार्मिक ग्रन्थों के विभिन्न सिद्धान्तों का पर्यावरण-संरक्षण के साथ तुलनात्मक अध्ययन अब विद्वान् करने लगे है।

प्रकृति और मनुष्य दोनों पर भावनाओं-क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों का प्रभाव पड़ता है। भगवतीसूत्र में भी वनस्पतिकाय के जीवों के विश्लेषण के प्रसंग में उनकी आहार संज्ञा आदि का विवेचन है। शालि इत्यादि वनस्पतियों में अन्य जीवों की तरह गति, परिमाण, अवगाहना, कर्म, लेश्या, उत्पत्ति आदि का अस्तित्व बताया गया है।

अन्य आगमों में भी वनस्पति और मनुष्य के स्वभाव के साथ तुलना के सन्दर्भ उपलब्ध हैं। आचार्य कुन्दकुन्द ने अनेक उदाहरण वनस्पति जगत् से दिये हैं। यह सब केवल इसलिए कि मनुष्य यह समझ जाय कि वनस्पति और मनुष्य में कई धरातलों पर समानता है। इसलिए मनुष्य वनस्पति को नष्ट न करें, उसका संरक्षण करें। आचारांग में दुःख प्रकट करते हुए कहा गया है कि मनुष्य क्षुद्र कारणों के वश वनस्पति आदि की प्राकृतिक सम्पदा को नष्ट करता है। आचारांग में कहा गया है कि यह दुःख की बात है कि वह कोई मनुष्य इस वर्तमान जीवन की रक्षा के लिए, प्रशंसा, आदर तथा पूजा पाने के लिए, भावी जन्म की उधेड़ बुन के कारण, वर्तमान में मरण भय के कारण तथा मोक्ष या परम शान्ति के लिए और दुःखों को दूर हटाने के लिए स्वयं ही वनस्पतिकायिक जीव-समूह की हिंसा करता है या दूसरों के द्वारा वनस्पतिकायिक जीव समूह की हिंसा करवाता है या वनस्पतिकायिक जीव समूह की हिंसा करने वाले का अनुमोदन करता है। वह हिंसा कार्य उस मनुष्य के अहित के लिए होता है। वह हिंसा कार्य उसके लिए अध्यात्महीन बने रहने का कारण होता है।

समारंभति, अण्णेहिं वा वणस्सतिस्सत्थं समारंभावेति,

अण्णे वा वणस्सतिस्सत्थं समारंभमाणे सम्णुजाणति।

तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

इसके अतिरिक्त श्रावक एवं साधु की सामान्य चर्या भी अनेक प्रकार से पर्यावरण-संरक्षण का ही प्रयत्न है। प्रतिक्रमण, सामायिक एवं ध्यान ध्वनि-प्रदूषण के लिए कवच हैं। अपरिग्रहवृत्ति प्रकृति-संरक्षण की आधारशिला है। जीवों के प्रति संवेदना वायु, जल एवं पृथ्वी को सुरक्षित रखने का उपाय है। वन-संरक्षण हरितनवन की रक्षा के नियम में निहित है। यत्नाचार जैन जीवन-पद्धति का केन्द्र बिन्दु है। यही जतन पर्यावरण-संरक्षण के लिए अनिवार्य है। जीवन शुद्धि के साथ जीविका शुद्धि भी आवश्यक है।

जीवन की जो मूलभूत आवश्यकताएँ हैं- प्राणवायु, जल, भोजन, वस्त्र और आवास, इनकी पूर्ति प्रकृति के साधनों से करते हुए शेष जीवन जीवोद्धार के कार्यों में लगाना ही सच्ची प्रगति है, विकास है। यही विकास आगे की पीढ़ियों को मार्गदर्शन दे सकेगा। यह विकास का मार्ग अपरिग्रह, सन्तोष एवं संविभाग के सिद्धान्त में ही छिपा है। महावीर ने लोभविजय, बुद्ध ने तृष्णाक्षय, कबीर ने संतोष-धन आदि पर विशेष जोर देकर मनुष्य को उपभोग से उपयोग की ओर लौटने की बात कही है। यही प्रदूषण की महाव्याधि से मानवता को स्वस्थ कर सकती है। कबीर की यह वाणी सुख, शान्ति और समृद्धि एक साथ प्रदान करने वाली है-

गोधन गजधन वाजिधन, और रतनधन खान।

जब आवै सन्तोषधन, सब धन धूरि समान।।

### संतोष की कुंजी-षड् लेश्या

इस सन्तोष-धन की बात हजारों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों ने प्रतिपादित की थी। जैनदर्शन में एक षट् लेश्या का सिद्धान्त है। मनुष्य का चिन्तन जैसा होता है, वैसा ही वह कार्य करता है। एक ही प्रकार के कार्य को भिन्न-भिन्न वृत्ति वाले लोग अलग-अलग ढंग से सम्पन्न करना चाहते हैं। दृष्टान्त दिया गया है कि छह लकड़हारे लकड़ी काटने जंगल में गये। दोपहर में जब उन्हें भूख लगी तो वे किसी फल के पेड़ को खोजने निकले। उन्हें एक जामुन का पेड़ दिखा जो पके फलों से लदा हुआ था। प्रथम लकड़हारे ने अपनी कुल्हाड़ी से पूरे पेड़ को काटना चाहा ताकि बाद में आराम से बैठकर जामुन खाये जा सकें। दूसरे ने एक मोटी शाखा को काटना ही पर्याप्त समझा। तीसरे लकड़हारे ने सोचा शाखा काटने से क्या फायदा? छोटी टहनियां काट लेना ही पर्याप्त है। चौथे ने टहनियों को नुकसान पहुंचाना ठीक नहीं समझा। उसने केवल जामुन के गुच्छों को काटना ही उचित माना। तब पांचवें ने कहा कि कच्चे जामुन लेकर हम क्या करेंगे? केवल पके जामुनों को ही पेड़ से तोड़ लेते हैं। छठे लकड़हारे ने सुझाव दिया कि तुम सब पेड़ के ऊपर ही क्यों देख रहे हो। जमीन पर इस पेड़ की पके हुए इतने जामुन पड़े हैं कि हम सभी की भूख मिट जायेगी। हम इन्हीं को बीन लेते हैं। सौभाग्य से उसकी बात मान ली गयी।

इन छहों व्यक्तियों के विचारों को छह रंग दिये गये हैं। प्रथम लकड़हारे के विचार सर्वनाश के द्योतक हैं, अतः वह कृष्णलेश्या वाला है। दूसरे से छठे तक के विचारों में क्रमशः सुधार हुआ है। सर्वकल्याण की भावना विकसित हुई है। अतः दूसरे को नीललेश्या, तीसरे को कापोतलेश्या, चौथे को पद्मलेश्या, पांचवे को पीतलेश्या एवं छठे लकड़हारे को शुक्ललेश्या वाला व्यक्ति माना गया है। काला, नीला, मटमैला, लाल, पीला और सफेद रंग क्रमशः विचारों की पवित्रता के द्योतक हैं। यदि आज का मानव जीवनमूल्यों के माध्यम से पद्मलेश्या तक भी पहुँच जाय तो भी विश्व की प्राकृतिक सम्पदा सुरक्षित हो जायेगी। लोगों की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी हो जायेंगी। महात्मा गांधी ने ऐसे ही विचारों के लोगों को ध्यान में रखकर जीवन के अन्तिम दिनों में कहा था- धरती माता के पास हर एक की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भरपूर सम्पदा है, लेकिन चन्द लोगों की लोभ-लिप्सा को सन्तुष्ट करने के लिए कुछ नहीं है।

### जैन संघचर्चा : प्रकृति का सम्मान

जैन दर्शन की जीवनपद्धति में अहिंसा, अपरिग्रह, शाकाहार, अभय आदि के

अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी इतनी महत्वपूर्ण हैं, जो पर्यावरण की शुद्धता में सहायक हो सकती हैं। जैन साधु जीवनभर पैदल चलते हैं। उनकी यह पद-यात्रा प्रकृति के साथ सीधा तादात्म्य स्थापित करती है। चातुर्मास में जैनसाधु एक स्थान पर रुककर प्रकृति के उल्लास का स्वागत करते हैं। उनका दृष्टिकोण होता है कि वर्षा ऋतु में हरियाली, पानी, वनस्पति सब अपने विकास पर हैं। असंख्य कीड़े-मकोड़े भी अपनी विश्वयात्रा पर इस समय निकलते हैं। उन सबके संचरण में, विकास में मनुष्य को चाहिए कि वह अपना गमन करके बाधा न पहुँचाए। इस अवधि में वह कम से कम खाये और सादगी से रहे। वास्तव में चातुर्मास सादगी की शिक्षा का त्यौहार है।

जैन-साधना पद्धति में गृहस्थ एवं साधु सभी प्रतिक्रमण और सामायिक की साधना करते हैं। प्रतिक्रमण का अर्थ है- अनधिकृत क्षेत्र से वापिस लौट आना। मनुष्य के मन, विचार, क्रिया को वहाँ से खींच लिया जाय, जहाँ वे किसी को बाधा पहुँचा रहे हों, किसी के स्वभाव को विभाव में बदल रहे हों। इतना अभ्यास मानव यदि प्रतिदिन करे तो वह कभी प्रदूषण का भागी नहीं हो सकता, कभी किसी के हक को वह नहीं छीन सकता। दूसरी क्रिया सामायिक की साधना है। व्यक्ति बाहर से अपने मन-वचन-काय को लौटाकर अपनी आत्मा को स्वभाव में स्थिर करे। सामायिक का अर्थ है विषमताओं पर विजय प्राप्त करना। आज की सबसे बड़ी समस्या द्वन्द्व और विषमता की है। इसी से मनुष्य के भीतर अशान्ति है। इस अशान्ति को मनुष्य बाहरी शोरगुल से भूलना चाहता है। विश्व का ध्वनि-प्रदूषण मनुष्य के भीतर की अशान्ति का परिणाम है। यदि सामायिक द्वारा हृदय की अशान्ति, विषमता को कम किया जाय तो भाग-दौड़ कम होने से ध्वनि-प्रदूषण काफी हद तक कम हो सकता है। साधु-जीवन में पांच समितियों और तीन गुप्तियों द्वारा भी मन, वचन, काय की क्रियाओं पर संयम किया जाता है। संयम की यात्रा कोई भी हो, उससे पर्यावरण में शुद्धता आती ही है।

जैनधर्म में पर्यावरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। श्रमण-श्रावक दोनों की चर्या में अहिंसा की आधारभूमि है। यहाँ जल को छानकर पीने की पृष्ठभूमि के पीछे शुद्ध जल का प्रयोग करने की भावना है, साथ में अहिंसा की भावना भी विद्यमान है। यह समझा जाता है कि छानकर पानी न पीने से जीव हत्या होती है या होने की संभावना है, जल द्वारा सूक्ष्म कीटाणु पेट में जा सकते हैं। छानकर पानी पीना नीरोगता, अच्छे स्वास्थ्य की ओर प्रेरित होना है। हमारे औद्योगिक संयंत्रों ने जल को इतना अधिक प्रदूषित कर दिया है कि नदी, नालों, झीलों, तालाबों में जलचर जीव मर जाते हैं। वह जल पीने में हानिकारक है। जलप्रदूषण हिंसाजनक है। साथ में असंख्य नाभिकीय परीक्षण भी जल को, वायुमण्डल को

प्रदूषित करते हैं और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस भयंकर स्थिति को देखते हुए यह कहने में कोई संकोच नहीं कि जल को छानकर उपयोग में लाने से, प्रासुक जल के प्रयोग से बहुत हद तक जल-प्रदूषण से मुक्ति पायी जा सकती है।

पर्यावरण की चर्चा के साथ अहिंसा और जीवदया की भावना भी सामने आती है। महावीर आत्मतुलावाद के प्ररूपक थे। उन्होंने संयम, आचरण, करुणा, जीवदया पर विशेष बल दिया। सृष्टि-संतुलन का जो सूत्र महावीर ने दिया, वह आज भी बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा- जो पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति के अस्तित्व को स्वीकार करता है। अपने अस्तित्व के समान उनका अस्तित्व है। हम इस तुला से तौलें तो न केवल अहिंसा का सिद्धान्त ही फलित होता है, अपितु पर्यावरण विज्ञान की समस्या को भी महत्वपूर्ण समाधान प्राप्त होता है।

### नियम युक्त जीवन शैली

संयम के द्वारा व्यक्ति अपने स्वभाव की पहिचान बनाये रख सकता है और अमर्यादित न होने के कारण वह दूसरों के जीवन में कांटे भी नहीं बो सकता। इसके लिए जैनागमों में बड़ी सार्थक उक्ति कही गयी है-

सूईं जहा असुत्ता न नस्सई, कयवरम्मि पडिआ वि।

जीवो वि तह असुत्तो, न नस्सई गओ वि संसारे।।

जैसे धागे में पिरोई हुई सुई कचरे में गिर जाने पर भी गुम नहीं हो पाती है, उसी प्रकार नियम से युक्त संयमी व्यक्ति संसार में परिभ्रमण करने पर भी अपनी पहिचान नहीं खोता है। यहां सुई का उदाहरण बड़ा सार्थक है। धागा एवं सुई का समुचित योग आवश्यक है। उसके बिना वह जोड़ने का काम नहीं कर सकती है। बिना धागे के यदि सुई लावारिस पड़ी हो तो वह लोगों के पैरों में चुभ सकती है। उससे घातक घाव हो सकता है। आज की सुई सारी वैज्ञानिक प्रगति है। तरह-तरह की मशीनें हैं। दोनों ही लोहा हैं। यदि यन्त्रों के साथ वैज्ञानिक उपकरणों के साथ मनुष्य का मर्यादित, संयमित मस्तिष्क न हो तो वे प्राणी जगत् का विनाश कर डालेंगे, प्रकृति को उजाड़ देंगे, पर्यावरण को दूषित कर देंगे और यदि मानव संयम का धागा अपनी विकास रूपी सुई के साथ पिरो दें तो यह सब विनाश की लीला बच सकती है।

### शुद्ध आहार एवं शुद्ध आजीविका :

जैन आगमों में आहार के विषय में विस्तार से वर्णन है। बहुत से धान्यों, बीजों, फलों और साग-पत्तों को भोजन में न लेने के निर्देश यहां दिये गये हैं। शुद्ध आहार लेने का विधान किया गया है। यह सब व्रत-नियम आदि के लिए तो हैं ही, साथ ही इस प्रकार के

उल्लेख/सन्दर्भ शाकाहार के द्वारा शुद्ध वातावरण बनाने के लिए भी हैं। मांसाहार से कितने दुष्परिणाम और अशुद्ध पर्यावरण का सामना करना पड़ता है, इससे हम सभी परिचित हैं। वनस्पति जगत् के साथ-साथ पशुजगत्, प्राणि-जगत् की रक्षा की भावना भी शुद्ध आहार के प्रयोग में छिपी हुई है। अतः जैन आगमों में केवल कायिक हिंसा से विरत रहने की बात नहीं कहीं, अपितु हिंसा आदि कार्यों के संकल्प करने को (संरम्भ), प्राणियों को परिताप-संताप देने को (समारम्भ) तथा जीवों की हिंसा करने को (आरम्भ) भी रोका गया है। ये सब निर्देश पर्यावरण-संतुलन की दिशा में आगे बढ़ने के कदम हैं। आचारांगसूत्र के इन चरणों की अन्य आगमों में विस्तार से व्याख्या है।

जैन आगमों में जीवन-चर्या को मर्यादित करने का प्रयत्न रहा है। जीवन की पद्धति शुद्ध होगी तो पर्यावरण स्वयमेव शुद्ध और संतुलित रहेगा। संवेदनशील और शाकाहारी जीवन पद्धति का निरूपण कर जैन आगमों में जीवन के साथ आजीविका को भी शुद्ध और संयमित करने के उपदेश दिये गये हैं। श्रावकों के व्रतों में उपभोग परिभोग परिमाण व्रत के अन्तर्गत इक्कीस वस्तुओं के परिमाण का निरूपण है, वे सब व्यक्तिगत रूप से उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएँ हैं। किन्तु उनका उद्योग-धन्धों से भी संबंध है। जब वस्तुओं के अनावश्यक उपभोग में कमी होगी तब उनका उत्पादन भी संयमित हो सकेगा। यह मूल कारण को पकड़ने की प्रक्रिया है। श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र के उपभोग-परिभोग परिमाण-व्रत में छब्बीस बोलों में उक्त/पदार्थों के अतिरिक्त जिन पांच विधियों को सम्मिलित किया गया है, वे भी उद्योग-धन्धों के अनावश्यक विस्तार को रोकने वाली हैं। वाहनविधि और सचित्त विधि इनमें प्रमुख है।

उपभोग-परिभोग-परिमाण व्रत के अतिचारों के अतिरिक्त उपासगदशांगसूत्र में 15 कर्मादानों के केवल नामों का उल्लेख है। किन्तु परवर्ती साहित्य में इन कर्मादानों के स्वरूप आदि पर प्रकाश डाला गया है। उन ग्रन्थों में श्रावकप्रज्ञप्तिटीका, योगशास्त्र, सागारधर्माभूत आदि प्रमुख हैं। जैन आगमों में कतिपय उद्योग-धन्धों को जब हिंसा, लोभ आदि वृत्तियों को ध्यान में रखकर निषेध करने की परम्परा चली तो उसका प्रभाव परवर्ती जैन साहित्य पर भी पड़ा। धन कमाने, आजीविका चलाने के निन्दित और अनिन्दित साधनों की एक सूची साहित्यकार अपने ग्रन्थों में देने लगे। आठवीं शताब्दी के जैन आचार्य उद्घोतनसूरि ने अपनी पुस्तक कुवलयमाला कथा में धन कमाने के विभिन्न उपायों की विस्तृत व्याख्या की है। इन सबके मूल में यही है कि व्यक्ति हिंसा, लोभ, लालच, छल-कपट आदि दुष्प्रवृत्तियों को आजीविका के साधनों में न अपनाए और अनावश्यक रूप से उद्योग-धन्धों से प्रकृति के संतुलन को न बिगाड़े, प्रदूषण न फैलाए।

### कतिपय प्रभावी कदम :

पर्यावरण की शुद्धता को बनाये रखने के लिए धर्म मनुष्य को उसके स्वभाव से परिचित करा सकता है, किन्तु अपने स्वभाव के अनुसार जीवन-यापन करना तो मनुष्य के हाथ में ही है। इसके लिए उसे कोई लम्बे-चौड़े कार्यक्रम नहीं करना है, केवल अपने चारों ओर के जीवन को सम्मान देना सीखना है। अपनी आदतों को थोड़ा बदलना है। धर्म के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण की शुद्धता के लिए कुछ प्रमुख सूत्र इस प्रकार हो सकते हैं-

1. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पति में भी प्राण हैं। अतः उनको अपने उपयोग के लिए कम से कम प्रयोग में लाना, अल्पारम्भी होना है।
2. भ्रमरवृत्ति को अपनाते हुए प्रकृति को बिना नुकसान पहुंचाये उसका उपयोग-करना।
3. वस्तुओं के अनावश्यक संग्रह में लिप्त नहीं होना, स्वयं अभय होना एवं सभी प्राणियों को अभय करना।
4. शरीर शाश्वत रहने वाला नहीं है, अतः उसकी अमरता का भ्रम नहीं पालना। इसलिए शरीर की पुष्टता, सुन्दरता आदि के लिए ऐसे भोजन एवं प्रसाधनों का उपयोग नहीं करना जो शोषण और हिंसा से जुड़ा हुआ हो।
5. आजीविका के लिए उन्हीं साधनों का सीमित प्रयोग करना, जिनमें प्रकृति का स्वाभाविक सन्तुलन नहीं बिगड़ता हो और हिंसा का कम से कम समावेश हो।
6. आत्मा की निर्मलता, स्वच्छता का जितना प्रयत्न हम करें उतना ही प्रयत्न अपने चारों ओर के पर्यावरण को स्वच्छ रखने में भी होना चाहिए। हमारी गन्दगी दूसरे को साफ न करना पड़े, इसका ध्यान रखना।
7. आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए जैसे रत्नत्रय (दर्शन, ज्ञान, चारित्र) की आवश्यकता है, वैसे ही सांसारिक जीवन को सुख, शान्ति और समृद्धि से युक्त करने के लिए सादागी, शाकाहार और सदाचार इस रत्नत्रय के पालन की आवश्यकता है।
8. अहिंसा, अभय, अपरिग्रह और अनेकान्तवाद इस चतुष्पदी को जीवन में अपनाने से धर्म और पर्यावरण दोनों की शुद्धता को साधा जा सकता है।

पर्यावरण की शुद्धता के प्रति एक बार लोकमत में जागृति आ जाय तो वह प्रदूषण एवं हिंसा के दानव का मुकाबला ही नहीं कर सकेगा, अपितु हमेशा के लिए उस पर विजय भी प्राप्त कर लेगा। यही जैन संस्कृति की और जैन जीवन शैली की सार्थकता होगी।

महावीर ने एक सूत्र दिया - संयम का। जहां संयम और संतुलन नहीं, वहीं पर्यावरण

की समस्या है, प्रदूषण है, हिंसा है, मोहातिरेक मूर्च्छा है, परिग्रह है, द्वेष और घृणा है। वनस्पति, पेड़-पौधे, वनराजि, नदी, पशु-पक्षी सभी के जीवन में संयम-सुरक्षा की भावना हो। सह-अस्तित्व पर विश्वास हो तो न हिंसा होगी, न घृणा, न प्रदूषण। लोभ-मोह हमारे पर्यावरण को दूषित करने के मूल कारण हैं और यहीं हिंसा की वृत्ति भी है। आज अपरिग्रह और अहिंसा का व्रत लेकर आगे बढ़ें तो इस धरती को अवश्य प्रदूषण-मुक्त किया जा सकता है। हमारा समाज सुखी और समृद्ध हो सकता है।

### उपयोगी पुस्तकें

1. प्रेम सुमन जैन, पर्यावरण और धर्म, अ. भा. जैन विद्वत परिषद, जयपुर, 1988
2. पं. कन्हैया लाल लोढा, जैन आगमों में वनस्पति विज्ञान, जयपुर, 1989
3. प्रेम सुमन जैन, पर्यावरण-सन्तुलन एवं शाकाहार, संघी प्रकाशन, जयपुर
4. P.S. Jain & R.M. Lodha (ed.) Medieval Jainism: Culture & Environment, Ashish Publishing House, New Delhi, 1990
5. जैन, हीरालाल : भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, भोपाल, 1964
6. सोगानी, कमलचन्द्र: एथिकल डॉक्ट्राइन्स इन जैनिज्म, सोलापुर, 1967
7. जैनी, पद्मनाभ : जैन पाथ ऑफ प्युरीफिकेशन, दिल्ली 1971
8. तत्त्वार्थसूत्र : सम्पादक- संघवी, पं. सुखलाल, वाराणसी, 1952 ( द्वि.सं.)
9. भार्गव, दयानन्द : जैन एथिक्स, दिल्ली, 1968
10. वर्ल्ड रिलीजनस् एण्ड द इनवायरनमेन्ट, गीतांजली प्रकाशन, दिल्ली, 1991
11. जैन, नेमीचन्द्र, शाकाहार : मानव सभ्यता की सुबह, दिल्ली, 1992
12. आचारांगसूत्र, आगम प्रकाशन, ब्यावर 1980
13. आचारांग चयनिका- सम्पा. डॉ. कमलचन्द्र सोगानी, प्राकृत भारती, जयपुर 1987
14. डॉ. मुनि श्री भुवनेश, जैन आगमों के आचारदर्शन और पर्यावरण-संरक्षण का मूल्यांकन, चैन्नई, 1998
15. प्रेम सुमन जैन, जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, अरविन्द प्रकाशन, उदयपुर 2001
16. जैन, भागचन्द्र भास्कर, जैनधर्म और पर्यावरण संरक्षण, दिल्ली 2001
17. आचार्य महाप्रज्ञ, आचारांगसूत्र एवं आचारांग भाष्य- जैन विश्व भारती लाइवूँ।
18. आचार्य महाप्रज्ञ, अहिंसा के अछूते पहलू, लाइवूँ 1992
19. हरिशचन्द्र व्यास, मानव और पर्यावरण, दिल्ली 1991
20. G.A. Thecolorson, Studies in Human Ecology, New York, 1961

## क्रोध से मुक्ति : क्यों एवं कैसे?

डॉ. सत्यनारायण शर्मा

कर्मबन्धन के अनेक कारणों में मुख्य है- कषाय की वृत्तियाँ। कष अर्थात् संसार एवं आय अर्थात् इनकम (लाभ, वृद्धि)। संक्षेप में जिससे संसार में परिभ्रमण की वृद्धि होती है, वह कषाय है। दूसरी परिभाषा के अनुसार जो आत्मा को कलुषित करता है, उसे कषाय कहते हैं। कषाय की वृत्तियों के कारण अनेक पाप किए जाते हैं- हिंसा, झूठ, चोरी आदि। इनके पीछे मुख्य कारण किसी न किसी रूप में हमारी कषाय की वृत्तियाँ हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र के 23 वें अध्ययन में कहा है- “कसाया अग्निणो वुत्ता सुयसीलं तवो जलं”। कषाय को अग्नि कहा है। उसको बुझाने के लिए श्रुत, शील और तप यह जल है। कषाय के चार भेद हैं- क्रोध, मान, माया एवं लोभ।

क्रोध की वृत्ति प्रत्येक मनुष्य में कम अथवा अधिक अवश्य पायी जाती है। क्रोध एक जटिल संवेग (Emotion) है। बौद्धिक रूप से इसे बुरा मानते हुए भी मनुष्य इसके प्रभाव में आ जाता है। इसकी उत्पत्ति के प्रमुख कारण हैं- हमारी इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य होना, हमारी स्वार्थपूर्ति में किसी तरह की बाधा उपस्थित होना। किसी के द्वारा हमारे प्रति अपशब्द बोलना अथवा अपमानित करना। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से क्रोध आने का जो केन्द्र है, वह है हमारा मस्तिष्क। सारी प्रवृत्तियाँ का संचालन मस्तिष्क के द्वारा होता है। अच्छी और बुरी सारी भावधारा मस्तिष्क में पैदा हो रही है। क्रोध करना, यह भाव भी मस्तिष्क से आ रहा है। दूसरे शब्दों में क्रोध का उद्दीपन भी होता है और क्रोध का नियमन भी होता है। हाइपोथैलेमस का एक भाग क्रोध को प्रकट करता है तो साथ ही दूसरा उसका नियमन भी करता है।

संवेग में मनुष्य की उत्तेजना तीव्र होती है। उस समय वह ऐसा काम कर लेता है जो उसे नहीं करना चाहिए। शरीर शास्त्र के अनुसार क्रोध में एड्रीनल ग्रन्थि सक्रिय होती है, एड्रीनल का स्राव अतिरिक्त होता है। मस्तिष्क मानवीय प्रवृत्तियों का संचालन करने वाला है। उसका एक भाग है-लिम्बिक सिस्टम और अवचेतन। क्रोध का स्थान भी यही है। यहाँ से एड्रीनल ग्रन्थि को क्रोधप्रज्वालक स्राव छोड़ने की प्रेरणा मिलती है। व्यक्ति गुस्से में आ जाता है। उसका सम्बन्ध भावनाओं से है।

मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार करें तो मूलवृत्ति है- युयुत्सा। मनुष्य में युद्ध करने या संघर्ष की वृत्ति है। संवेग है- क्रोध। क्रोध जितना तीव्र होता है, लड़ने की प्रवृत्ति उतनी प्रबल बन जाती है।

क्रोध का वेग समान नहीं होता। कभी वह मन्द होता है, कभी मन्दतर, कभी तीव्र और कभी तीव्रतर। जैन आगमों में क्रोध की विविध अवस्थाओं को उपमा से समझाया गया है- 1. पत्थर की रेखा के समान, 2. मिट्टी की रेखा के समान, 3. बालू की रेखा के समान, 4. जल की रेखा के समान।

क्रोध करके मैं दूसरों का नुकसान कर पाऊँ या न कर पाऊँ, लेकिन मेरा स्वयं कितना बड़ा नुकसान होता है, यह मुझे तब पता लगता है, जब मैं स्वयं के द्वारा किए गए क्रोध के दुष्परिणामों को अक्रोध की अवस्था में अर्थात् क्रोध शान्त होने पर देखता हूँ।

आचारांग में कहा गया है- “विगिंच कोहं अविक्कंपमाणे” अकम्प रहकर हमें क्रोध को पृथक् करना चाहिए। क्रोध एक प्रकार का ज्वालामुखी है, जो स्वयं भी जलता है और आसपास के पूरे क्षेत्र को जलाकर राख कर देता है। कहा है- ‘संचं सीलं विणयं हणेज्ज।’ अर्थात् क्रोध व्यक्ति के सत्य, शील और विनय का नाश कर देता है। क्रोध से 6 प्रकार की हानि होती है- शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, पारिवारिक, आर्थिक और आध्यात्मिक।

1. **शरीर के स्तर पर हानि**- क्रोध से पेट्टिक अल्सर, गेस्ट्राइटिस, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अस्थमा जैसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं। क्रोध में श्वसन गति अनियमित हो जाती है। पाचन तंत्र मंद और अस्त-व्यस्त हो जाता है। रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ जाता है। शरीर कृश हो जाता है।
2. **मानसिक स्तर पर हानि**- मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाता है, सिरदर्द, माइग्रेन, हृदय की बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। मानसिक शक्तियाँ, स्मृति, कल्पना और चिन्तन आदि का हास हो जाता है।
3. **भावनात्मक स्तर पर हानि**- भावनात्मक स्वास्थ्य कमजोर हो जाता है। भावनाएँ अशुद्ध हो जाती हैं एवं निषेधात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। धारणा क्षमता कमजोर हो जाती है। क्रोध के क्षणों में एक प्रकार का ज़हर और अग्नि पैदा हो जाते हैं, जो हमारे खून को जलाते हैं, हमारी स्मरण शक्ति और ज्ञान तन्तु को नष्ट कर देते हैं।
4. **पारिवारिक स्तर पर हानि**- क्रोध के आवेश में मनुष्य परिवार के सदस्यों के साथ, बच्चों के साथ, पत्नी के साथ गाली-गलौच, मारपीट आदि ऐसे व्यवहार कर लेता है,

जिनके कारण कई बार-अंग-भंग और हत्यायें हो जाती हैं। क्रोधी व्यक्ति के विवेक द्वार बंद हो जाते हैं। जैसे- सम्राट् अशोक ने कलिंग में लाखों लोगों को युद्ध में मारा।

5. **आर्थिक स्तर पर हानि-** घर में तोड़-फोड़, वस्तुओं को इधर-उधर फेंक देना, रुपयो को फाड़ना, अग्नि में डालना आदि ऐसे अनेक कार्य इस क्रोध के आवेश में मनुष्य कर देता है। शारीरिक रोग उत्पन्न होने पर उनकी चिकित्सा में भी धन-हानि होती है। विद्वानों का मत है कि क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।
6. **आध्यात्मिक स्तर पर हानि-** क्रोध के कारण चैतसिक विकास रुक जाता है, अतीन्द्रिय क्षमता का जागरण नहीं होता, आत्मा मलिन हो जाती है, अशुभ कर्मों का आकर्षण होता है। नैतिकता का हास होता है एवं चरित्र विकृत हो जाता है। जिस क्रोध के इतने भयंकर दुष्परिणाम हों, ऐसे क्रोध को एक धार्मिक प्रकृति का ज्ञानवान व्यक्ति अपने भीतर कैसे रख सकता है। क्रोध को दूर करने का एकमात्र स्थायी तरीका है- इसके दुष्परिणामों का सतत चिन्तन एवं व्यावहारिक प्रयोगात्मकोपाय।

### क्रोध नियन्त्रण हेतु उपाय

1. क्रोध नियंत्रण के लिए भगवान महावीर ने एक उपाय बताया- 'एगंतं कमेज्जा।' एकान्त में चले जाओ। इसी तरह के अन्य उपाय हैं- ठण्डा पानी पीओ, पूर्ण मौन हो जाओ, जीभ को उलट कर तालु से लगा लो, आहार का विवेक करो।
2. प्रतिपक्ष भावना करो, यथा- शान्त हूँ, उपशान्त हूँ, प्रशान्त हूँ का जप शुरु कर दो।
3. संयमित भोजन- तले हुए, चटपटे और उत्तेजक पदार्थों का परिहार और सुपाच्य सात्विक आहार का सेवन।
4. आसन- शशांकासन, योगमुद्रा, पवनमुक्तासन, यौगिक क्रियाएँ।
5. प्राणायाम- चन्द्रभेदी, शीतली, शीतकारी, अनुलोम-विलोम प्राणायाम नियमित करने से क्रोध नहीं आता।
6. कायोत्सर्ग एवं योगनिद्रा- रात्रि में सोने से पहले योगनिद्रा में जायें। शरीर को शिथिल करके शांति की भावना के साथ निद्रा में जायें।
7. श्वास समीक्षण- आने-जाने वाले श्वास को देखना।
8. शांति केन्द्र पर ध्यान के साथ भावना करें कि क्रोध शांत हो रहा है।

-नानेश नगर, दांता, तहसील-कपासन, जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)

स्तुति

## प्रभु वीर चालीसा

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

माँ त्रिशला का नैन सितारा, शासननायक वीर हमारा॥1॥  
 सिद्धारथ के कुल का 'हीरा', जय-जय बोलो जय महावीरा-2॥2॥  
 चेत सुदी तेरस को जन्मे, खुशियाँ छाई सबके मन में॥3॥  
 कुण्डलपुर का भाग्य सवाया, वीर ने पाई कंचन काया-2॥4॥  
 वर्धमान जब नाम बुलावे, माता-पिता का मन हर्षावे॥5॥  
 सुदर्शना नंदी का प्यारा, वीर अनुज है राजदुलारा-2॥6॥  
 ज्ञान ध्यान में बीता बचपन, यौवन में संयम का चिंतन॥7॥  
 उदासीन है भोगों से मन, पर कर्म योग से शादी बंधन-2॥8॥  
 दीक्षा की जब घड़ियाँ आई प्रियदर्शना की पितृ विदाई॥9॥  
 वीर की पत्नी वीर यशोदा, अब है बिन पानी के पौधा-2॥10॥  
 राजमहल का वैभव छोड़ा, संयम से अब नाता जोड़ा॥11॥  
 कष्टों की बरसात हुई है, अब सहने की शुरूआत हुई है-2॥12॥  
 कोई पाँव में आग जलाता, शूलपाणी विष नाग चलाता॥13॥  
 छः महीने तक दुःख की धारा, आखिर में संगम भी हारा-2॥14॥  
 कानों में कीलों की पीड़ा, दर्दनाक कर्मों की क्रीड़ा॥15॥  
 शीशे के बदले शूल लिया है, ब्याज मिलाकर मूल दिया है-2॥16॥  
 इन कर्मों का बदला भारी, राम, कृष्ण अब वीर की बारी॥17॥  
 तकलीफों में धीर बने हैं, वीर वो ही महावीर बने हैं-2॥18॥  
 भक्तिभाव में चंदनबाला, श्रद्धा के फूलों की माला॥19॥  
 धन्य है ऐसे शील का चंदन, दो आँसू से रुक गये भगवन्-2॥20॥  
 जयन्ती सुलसा मृगावती है, वीर की शिष्या शीलवती है॥21॥  
 चण्डकौशिक को दिया सहारा, विष के बदले अमृत धारा-2॥22॥  
 वीर में तप का तेज दमकता, तप कर सोना और चमकता॥23॥  
 वीर हुए हैं केवलज्ञानी, समोशरण में अमृतवाणी-2॥24॥  
 इन्द्रभूति थे मद में हरदम, वीर ने बोला "आओ गौतम!"॥25॥  
 मन का संशय दूर हुआ है, अहंकार भी चूर हुआ है-2॥26॥  
 अर्जुनमाली और सुदर्शन, पहुँचे वीर को करने वंदन॥27॥

सहनशीलता में जो जीता, श्रद्धा से भवसागर तिरता-2112811  
 पूरण की एक शुद्ध सामायिक, खरीद न पाया राजा श्रेणिक112911  
 नरक गति का भव अति दुष्कर, पर धर्म दलाली से तीर्थकर-2113011  
 शालिभद्र ने त्यागा सब धन, धन्नाजी का धन्य समर्पण113111  
 शरणागत की तकदीर फिरी है, एवंता की नाव तिरी है-2113211  
 वीतरागता की सृष्टि है, सब जीवों पर समदृष्टि है113311  
 गोशालक पर क्रोध नहीं है, गौतम से भी मोह नहीं है-2113411  
 वीर प्रभु इतने उपकारी, उत्तराध्ययन है अंतिम वाणी113511  
 शाश्वत सुख से मनी दीवाली, सब कर्मों की जल गयी होली-2113611  
 ग्यारह है भगवन् के गणधर, आर्य सुधर्मा वीर के पट्टधर113711  
 गौरवशाली वीर का शासन, तारणहारा यह जिनशासन-2113811  
 धन दौलत की प्यास नहीं है, नाम और यश की आस नहीं है113911  
 'तीर्थ' के मन की बस एक चाहत है, मोक्ष मिले तो मिलती राहत-2114011

-Old 14, Agraharam Street, Jai Jinendra Building,  
 Chintadripat, Chennai-600002 (T.N.)

## दिव्यता के दिवाकर

महासती श्री विवेकप्रभाजी म. सा.

- गु- गुरु हीरा आपका जीवन है आलीशान।  
 रू- रूपा माँ के लाडले के शिष्य बने आप महान।  
 ही- हीरा है आपका नाम पर कोमलता है आपकी पहचान।  
 रा- राहें पकड़ी महावीर की बन गए भगवान।  
 को- कोई नहीं इस धरती पर आप समान।  
 दी- दीर्घायु बनकर बढ़ा रहे जिनशासन की शान।  
 क्षा- क्षायिक समकित धारी क्या करे आपके गुणों का बखान।  
 दि- दिव्यता के दिवाकर गुरुदेव रखना हमारा भी ध्यान।  
 न- नयन सितारे प्राणों से भी प्यारे हैं।  
 मु- मुस्कराहट देखकर सब कहते हैं कि हे भाग्यवान!  
 बा- बाहर-भीतर सब गुणों में आप हैं प्रतिभावान।  
 र- रत्नवंश का राजहंस सदा स्वस्थ रहे यही है आह्वान।  
 क- कलियुग में आप हैं महावीर समान।  
 हो- होठों पे मुस्कान जिनके नृत्य करती है, ऐसे ज्ञानी गुरु का क्या करें गुणगान।

स्तुति

## कोटि-कोटि हम करते वन्दन

प्रेषक : श्री राकेश कोचर

अनंत ज्ञान, दर्शन के सागर, माता त्रिशला के प्यारे नंदन।  
 चौबीसवें आप जिनराज प्रभु, कोटि-कोटि हम करते वंदन॥1॥  
 नाम जिनका भजने से ही मिटे जन्म-मृत्यु का बंधन सारा।  
 ऐसे शासननायक वीर प्रभु को है कोटि-कोटि नमन हमारा॥2॥  
 अनंत ज्ञान, दर्शन से महका जिनका जीवन, जैसे महकता है चंदन।  
 ऐसे शासननायक वीर प्रभु को भाव-भक्ति सहित हम करते वंदन॥3॥  
 वर्धमान प्रभो की जो मिले शरण तो जीवन पावन धाम है।  
 हे वीर प्रभु! आपके पावन श्रीचरणों में हमारा बारम्बार प्रणाम है॥4॥  
 वीर प्रभु की राह चलने से महकेगा जीवन, जैसे महके सौरभ से चंदन।  
 हे देवाधिदेव तीर्थंकर प्रभो! हम भावभक्ति सहित आपको करते वंदन॥5॥  
 समभाव के थे पर्याय प्रभु, सहन करते थे उपसर्ग परिषह अपार।  
 ऐसे शासननायक वर्धमान जिनेश्वर को हम विधिवत् वंदन करते बारम्बार॥6॥  
 इस पाप भरे संसार में महावीर नाम का ही सहारा है।  
 शासननायक वीर प्रभु को भावभक्ति सहित वंदन हमारा है॥7॥  
 सब पर बरसाई कृपा आपने, अर्जुनमाली को भी आपने तारा।  
 कृपासिंधु, करुणासागर वर्धमान जिनेश्वर प्रभु को नमन हमारा॥8॥  
 पावन नाम जिनका सुमिरण करने से हम जीवन में सच्ची शांति पाते।  
 ऐसे शासनपति वर्धमान प्रभु के श्रीचरणों में श्रद्धा से हम शीश झुकाते॥9॥  
 वीर पथ पर जो भी चला, उसने पाया संसार सागर का किनारा।  
 हे देवाधिदेव तीर्थंकर प्रभो! आपको कोटि-कोटि है नमन हमारा॥10॥  
 शरण ले लो वीर प्रभु की, मिल जायेगा मुक्ति का वरदान।  
 कोटि-कोटि हम वंदन करते आपको, हे वीर प्रभो भगवान॥11॥  
 करुणासागर हो आप दयानिधान, भव्यों के भव को हरते।  
 चौबीसवें आप जिनराज प्रभु, श्रद्धा से हम वंदन करते॥12॥  
 जन्म-मृत्यु का बंधन तोड़ा आपने, दृढ़ संयम की शक्ति से।

वर्धमान जिनेश्वर भगवान को हम, वंदन करते अपूर्व भाव भक्ति से॥13॥  
 वीर, वर्धमान, सन्मति, देवार्य, ज्ञातपुत्र, महावीर, वैशालिक कहो या त्रिशलानंदन।  
 आपके पावन श्रीचरणों में हम भाव भक्ति सहित विनयपूर्वक करते वंदन॥14॥  
 कैसे करें हम स्तुति वीर प्रभु की, महिमा जिनकी अपरम्पार है।  
 श्रद्धापूर्वक बस हम इतना करते, प्रभु आपको वंदन बारम्बार है॥15॥  
 जिसने भी मानी आज्ञा वीर प्रभु की, उसकी महकी जीवन की फुलवारी है।  
 शासननायक वीर प्रभु के श्रीचरणों में विधिवत् वंदना हमारी है॥16॥  
 इंसान तो क्या इन्द्र, नरेन्द्र भी जिनकी महिमा गाकर अपूर्व सुख पाते हैं।  
 ऐसे शासननायक वीर प्रभु के श्रीचरणों में हम विनयपूर्वक शीश झुकाते हैं॥17॥  
 भयंकर उपसर्गों को सहन करते हुए भी जो ध्याते रहे धर्म-शुक्लध्यान को।  
 कोटि-कोटि है नमन हमारा, ऐसे शासननायक वीर प्रभु भगवान को॥18॥  
 शरण आपकी आये हैं प्रभो!, हमको भी दीजिए मुक्ति का वरदान।  
 भाव भक्ति सहित हम आपको वंदन करते, हे वीर प्रभो! भगवान॥19॥  
 महावीर प्रभु के गुण गाते-गाते थक नहीं सकती हमारी जिह्वा कभी।  
 जिनेश्वर भगवान, आपके पावन चरण कमलों में वंदन करते हम सभी॥20॥  
 चले जो राह वीर प्रभु की, उन सबका दिल से अभिनन्दन है।  
 शासनपति श्रमण भगवान महावीर स्वामी को हमारा भावसहित वंदन है॥21॥  
 प्रभो! आपकी वाणी जीवन में उतरे, तो जीवन में आ जाये नया उजियारा।  
 शासननायक त्रिशलानंदन वीर प्रभु को भावसहित है नमन हमारा॥22॥  
 इस जगत के आप उजियारे प्रभो!, माता त्रिशला के थे आप दुलारे।  
 वंदन करते हम वीर प्रभु को, जो माता-पिता और बंधु हमारे॥23॥  
 आठों कर्मों का क्षय करके आप पहुँच गये शिवपुर धाम।  
 हे वीर प्रभो भगवान्! हम सब करते आपको कोटि-कोटि प्रणाम॥24॥

-नागपुर (महट.)

### आवश्यक सूचना

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, आचारनिष्ठ परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद आरोहण को 25 वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 10 जून 2016 को जिनवाणी का 'आचार्यपद : स्वरूप एवं महत्ता' विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। अतः मई 2016 का अंक पाठकों के हाथों में पहुँच नहीं सकेगा।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

पुण्य-स्मृति पर विशेष

## आचार्य हस्ती : युगानुरूप दिशाबोध प्रदाता

डॉ. मंजूला बम्ब

संसार में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं और काल के प्रभाव में बह जाते हैं, किन्तु कुछ ऐसी विशिष्ट आत्माएं होती हैं जो देश-काल की परिस्थितियों से ऊपर उठकर अपने आत्म-कल्याण के साथ-साथ लोक-जीवन का भी उत्थान कर जाती हैं। ऐसी ही विशिष्ट आत्माओं में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की गणना होती है। वे ऐसे महापुरुष थे, जिनका जीवन ही अपने आप में इतिहास था। उन्होंने ज्ञान ज्योति से केवल अपना ही जीवन आलोकित नहीं किया, अपितु अनेक मुमुक्षु आत्माओं के जीवन को उज्ज्वल बनाया, साथ हजारों नर-नारियों को वह मार्ग बतलाया, जिससे वे भी अज्ञानान्धकार को दूर कर अपने जीवन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकें। ऐसा महान ज्ञान सूर्य 21 अप्रैल 1991 को रात्रि सवा आठ बजे सदा-सदा के लिए 13 दिवसीय तप-संथारे के साथ निमाज में अस्त हो गया। उन्होंने 71वर्ष का निर्मल निरतिचार संयम-जीवन जीया व 61वर्ष तक धर्मसंघ का संघनायकत्व किया। वे श्रमण भगवान महावीर के शासन के 81 वें कीर्तिमान पदधारी आचार्य थे। मात्र 29 वर्ष की युवावस्था में ही उन्होंने अपने द्वारा विरचित आध्यात्मिक रचनाओं में “मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप।” आदि रचनाओं का संघ, जिनशासन व संसार को बोध कराया।

कितनी गहन और महान थी उनकी साधना। जीवन के शैशव से ही वे जिनशासन के उपासक हो गये थे, बीस वर्ष की अत्यल्प लघुवय में वे जिनशासन के नायकत्व के उच्च धवल शिखर पर आरूढ़ हो गये थे। कितने ही अनुभवों से गुजरकर उनके दिव्य यशस्वी जीवन का निर्माण हुआ था। यौवन की चंचल अल्हड देहरी पर खड़े होकर भी वे प्रौढत्व की गंभीरता से संयुक्त हो गये थे। वे दिव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी थे। जिनशासन के महान ज्यातिर्धर आचार्यों की परम्परा में पूज्य आचार्य भगवन्त का जीवन और कृतित्व अपना एक सुयोग्य स्थान स्थापित किये हुए है और युगों-युगों तक रहेगा भी। आचार्यप्रवर एक परम्परा विशेष से आबद्ध होकर भी निराबद्ध थे। जहाँ-जहाँ भी जिन-जिन क्षेत्रों में पूज्य श्री का परिभ्रमण हुआ वहाँ-वहाँ उन्होंने विषमता की, रागद्वेष की जलती आग को बुझाने का प्रयास किया और समता के अपनत्व के सुनहरे सुरभित फूल ही बिछाये। इसके साथ ही अपने समस्त उपासकों को भी समताभाव का अमृत पिलाया। सामायिक-

स्वाध्याय की प्रेरणा के पीछे उनका यही आत्मीय भाव रहा था कि जिनशासन के उपासक वर्ग में समताभाव का संचार होना चाहिए। इसी शुभ भावना से उन्होंने सामायिक-स्वाध्याय का प्रचार गांव-गांव और घर-घर में किया।

पूज्यप्रवर का साहित्यिक योगदान आगमग्रन्थों के सम्पादन, जैन धर्म का मौलिक इतिहास, प्रवचन साहित्य आदि साहित्यिक गुलदस्तों से सजा हुआ है, जो उनकी गहन गंभीर दार्शनिकता, सूक्ष्म दृष्टिकोण और तत्त्वज्ञान की गहरी पकड़ को प्रकाशित करता है। आचार्यप्रवर आचार्य पद की गरिमा-महिमा से संयुक्त होकर भी विनय की साकार प्रतिमूर्ति थे। वे संघनायक होकर भी विनय, विनम्रता की दिव्यमूर्ति थे, ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, तप-संयम की एक भव्य विभूति थे। बीसवीं सदी के इस युग पुरुष की महिमा अपरम्पार है। गुरुपदधारी होकर भी सचमुच वे लघुता की प्रतिमूर्ति थे। केवली संयम का निरतिचार पालन करते हैं। मूल और उत्तरगुण सम्बन्धी दोषों का वे प्रतिसेवन नहीं करते हैं उसी प्रकार आचार्य भगवन्त ने भी संयम का जीवन पर्यन्त निरतिचार पालन किया।

प्रो. दयानन्द भार्गव ने पाली के चातुर्मास में 13 नवम्बर 2010 को अखिल भारतीय विद्वत् परिषद के दो दिवसीय कार्यक्रम में अपने वक्तव्य में अनुशासनप्रिय, अल्पभाषी, स्पष्टवादी, श्रमण जीवन का कठोरता से पालन करने वाले, अंधविश्वास व आडम्बर से दूर, लोक और आत्म कल्याण की भावना से ओत-प्रोत आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. को 'लोक केवली' विशेषण से अलंकृत किया और उन्होंने बताया कि जो युगानुरूप दिशा बोध देता है वह लोक केवली होता है, आचार्य हस्ती का व्यक्तित्व वैसा ही था। आचार्य हस्ती के दर्शन का प्रतिपादन करते हुए प्रोफेसर सा. ने कहा कि आचार्य हस्ती के अमृत वचन आगम की वाणी का सरल रूप है। आप श्री के जीवन ग्रन्थ (नमोपुरिसवर-गन्धहत्थीणं) में अमृत वाक् अध्याय अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायी है। इसमें आचार्य प्रवर के प्रवचनों एवं दैनन्दिनी से संकलित वचनों का संग्रह है। जन-जन के उत्थान के लिए इसके स्वतंत्र प्रकाशन की भी आवश्यकता बतलायी एवं बाद में उसका स्वतन्त्र प्रकाशन भी हुआ।

आपश्री के मुखारविन्द से निकले शब्दों में अनेक बार कई घटनाओं और प्रसंगों के पूर्वाभास की प्रतीति होती थी, लेकिन आचार्य भगवन्त सहज स्थिर भाव से यही कह कर लोगों को शान्त कर देते कि इन घटनाओं को चमत्कारिक रूप नहीं देना चाहिए। एक समय की बात है कि सेठ श्री चम्पा लाल जी बांठिया श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ के वार्षिक उत्सव में अध्यक्ष बनकर पधारे थे। संयोग की बात थी कि पूज्य श्री उन दिनों वहीं विराजित थे। उस दिन व्याख्यान करते हुए गुरुदेव ने कहा- "यहीं से कुछ मील जाने पर कार की

मशीनरी में कुछ गड़बड़ हो जाय व चलने से रुक जाय तो क्या आप गंतव्य स्थान पर पैदल पहुँच सकते हैं?" दैवयोग से जब बांठिया जी भोपालगढ़ से जोधपुर के लिए कार द्वारा खराना हुए थे तो मार्ग में कार खराब हो गई और फिर किसी अन्य साधन से जोधपुर पहुँचना पड़ा। इस तरह की घटनाओं के बारे में बांठिया जी ने आचार्य प्रवर से पूछ ही लिया कि क्या इन घटनाओं की जानकारी आपको पहले से हो जाती है? गुरुदेव ने सहज स्मित भाव से बताया कि इन घटनाओं को चमत्कारिक रूप नहीं देना चाहिए। गुरु हस्ती में इस घटना से लघुता गुण की प्रत्यक्ष झलक परिलक्षित होती है।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. उत्कृष्ट संयम-साधना के आत्मधर्मी आचार्य थे, पर लोकधर्म और लोकमंगल के प्रति कभी उन्होंने उपेक्षा का भाव नहीं रखा। आत्म-चैतन्य जागृत कर लोक में व्याप्त अज्ञान अंधकार और तन्द्रा को मिटाने की वे सतत प्रेरणा करते थे। चाहे साधना का पक्ष हो, चाहे साहित्य सृजन की बात या इतिहास लेखन का प्रसंग, आचार्य श्री लोकहित को सदैव महत्त्व देते थे। आत्मानुशासन और आत्म-जागरण के लिए वे सदा सजग और सचेष्ट रहते थे।

आचार्य श्री प्राकृत-संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रकाण्ड पंडित थे। न्याय, व्याकरण, दर्शन और इतिहास में उनकी गहरी पैठ थी। वे शास्त्रीयता के संरक्षक माने जाते थे, पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की यह विशेषता थी कि वे मन, वचन, कर्म में सहज सरल थे। एकरूप थे। लोकधर्म, लोक संस्कृति और लोक जीवन से वे कटकर नहीं चले। इस सबसे उनका गहरा जुड़ाव था। वे सहृदय कवि थे। उनकी कविताओं में आत्मानुभूति के साथ-साथ लोक जीवन और लोक धर्म की गहरी पकड़ मिलती है।

जागो-जागो हे आत्मबंधु मम, अब जल्दी जागो,

अनन्त ज्ञान श्रद्धाबल के हो, तुम पूरे भण्डार.....

'गजमुनि' विमल कीर्ति अरु जग का हो जावे उत्थान।

आचार्य श्री के प्रवचन आत्मधर्म और आत्म-जागृति की गुरु गंभीर बात लिए हुए होते थे, पर होते थे सहज-सरल। तत्त्वज्ञान की बात वे लोकधर्म और लोकजीवन से जुड़कर और जोड़कर समझाते थे। प्रवचनों के बीच-बीच स्वतः साधना में पकी हुई सूक्तियाँ अवतरित होती चलती थीं। सूक्तियों का निर्माण वे शास्त्र के आधार पर न कर लोकानुभव के आधार पर करते थे। आचार्य श्री ने एक जगह पर कहा है कि - "सत्संग एक सरोवर के सदृश है, जिसके निकट पहुंचने से शीतलता, स्फूर्ति तथा दिमाग में तरी आ जाती है" भक्त के हृदय में बहता हुआ विशुद्ध भक्ति का निर्झर उसके कलुष को धो देता है और आत्मा निष्कलुष बन जाता है। सत्संग और विवेक व्यक्ति को ममता और आसक्ति

में बांध देता है, वह अनावश्यक धन संग्रह और परिग्रह में उलझ जाता है।

अहिंसा पर तात्त्विक विचार करते हुए आचार्य भगवन्त ने कई बार फरमाया- “अहिंसा केवल परहित का ही नहीं, स्वहित और आत्म-संतोष का भी प्रमुख कारण है।” विधि और निषेध रूप से अहिंसा के दो पहलू बतलाये हैं, जैसे ऐसा कोई काम मत करो जिससे जीवों की हिंसा हो, यह अहिंसा का निषेध रूप है और यतना से उठो, बैठो, चलो, खाओ, पीओ- यह अहिंसा का विधि रूप है। आचार्य श्री के जीवन में साधना के दोनों अंग निषेधात्मक साधना एवं विध्यात्मक साधना परिपुष्ट परिलक्षित होती थी। दिन में सूर्योदय होते ही आचार्यप्रवर स्वाध्याय, लेखन, पठन-पाठन उद्बोधन आदि किसी न किसी सद्प्रवृत्ति में लग जाते थे और यह क्रम सूर्यास्त तक चलता रहता था। “खण निकम्मो रहणो नहिं, करणो आतम काज” अर्थात् साधना में क्षणमात्र का भी प्रमाद न करना। यह सूत्र आचार्य भगवन्त की साधना का मूल मंत्र था। वे स्वयं तो किसी न किसी सद्प्रवृत्ति में लगे ही रहते थे, साथ ही अपने पास बैठे दर्शनार्थियों को भी स्वाध्याय, जप, लेखन आदि किसी न किसी सद्प्रवृत्ति में लगा देते थे, भगवन्त का जीवन ही साधना था, साधना ही जीवन था। आपने साधना कर अपने जीवन को सफल बनाया।

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल म.सा. न केवल नाम से ‘हस्ती’ थे, अपितु कृतित्व में भी ‘हस्ती’ थे। उनका प्रादुर्भाव और अर्जित ज्ञान अन्तरात्मा में रम गया, उसका हुबहू रस परिणत हो गया। वे दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए आक्षेपिणी, विक्षेपणी-संवैगनी, निर्वेदनी इन चार प्रकार की कथाओं को प्रभावशाली वचनों से कहकर श्रोताओं के मन को प्रमुदित करते थे। भूत, भविष्य और वर्तमान में होने वाले हानि-लाभ को बड़ी दूरदर्शिता से जान लेते थे। शास्त्रों का जिन्होंने बोध कराया, स्वाध्याय की जिन्होंने राह दिखाई, आगम मनीषी उन गुरुदेव के जीवन में आगम गाथाएँ मानो जीवन्त प्रतीत होती थीं।

समझो चेतनजी अपना रूप, यो अवसर मत हारो,

ज्ञान, दरस-मय रूप तिहारो, अस्थि मांसमय, देह न धारो,

दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो।

इस अहिंसा के दिव्य सूर्य के दर्शन मात्र से दर्शकों का मन खिल जाता था। आपने अध्यात्म-जागरण की अमर बांसुरी को बहुत मधुर राग से अलापकर अपने अमृतोपम वचनों से सांसारिक रुग्णता को समाप्त करने में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखी थी। आपके कर्तव्य प्रधान प्रभावी व्यक्तित्व के सामने क्या संत, क्या सती, क्या श्रावक, क्या श्राविका, सभी सहज मन से श्रद्धायुक्त होकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते थे।

कवि वाल्मीकि इस संसार में नहीं हैं, किन्तु 'वाल्मीकि' रामायण' के रूप में आज वे संसार में मौजूद हैं। श्री राम के गुणगायक संत तुलसीराम जी पार्थिव रूप से नहीं है, किन्तु 'रामचरित मानस' के रूप में आज वे अमर हैं। इसी भांति पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. अपना अनित्य शरीर छोड़कर चले गये, किन्तु उनकी सुकृतियां आज जैन समाज के पास मौजूद हैं और वे इस संसार में अपना नाम अमर कर गए हैं, दुनियां सदैव उनको याद करती रहेगी।

मैंने अपनी आंखो से, सच ऐसे इंसान को देखा है,

जिसके बारे में जन-जन कहते हैं, धरती पर भगवान को देखा है।”

इस महान विभूति अमर आत्मा के चरणों में 25 वें स्मृति-दिवस पर हृदय की असीम आस्था से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

-326, उदय मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.)

आचार्यपद रजत साधना वर्ष

## मानवता को नया आयाम

श्री महावीर प्रसाद जैन 'अध्यापक'

आज जगत में चमक रहा गुरु हीरा का नाम।  
जिसने दिया मानवता को एक नया आयाम॥  
रात्रिभोजन त्याग का जिन्होंने अलख जगाया।  
जैनी होता कौन? यह जन-जन को समझाया॥  
व्यसन-मुक्ति हेतु किया गुरुवर ने आह्वान।  
व्यसन मुक्त ही जी सकता है जीवन स्वर्ग समान॥  
जीवन में हो सद्गुण सौरभ तो ही जीवन बने महान्।  
जो रत रहता व्यसनों में उसका जीवन नरक समान॥  
समता की पावन भूमि में ही शान्ति सरिता बहती है।  
जो साधक करता सामायिक, मुक्ति उसी को मिलती है॥  
राग-द्वेष व हर्ष-शोक में रहता है जो सदा समान।  
द्वन्द्वों से जो न घबराये, वह ही साधक प्रज्ञावान॥  
विनय धर्म की प्रथम सीढ़ी, विनय आत्मोन्नति का द्वार।  
अहंकारी तो हरदम केवल ढोता है जीवन का भार॥  
गुरु हीरा के इन पावन संदेशों को मन में रमायें।  
अपनी जीवन बगिया को हम चन्दन सम महकाएँ॥

-106, मस्जिद रोड़, राजपूत कॉलोनी, केशवपुर, कोटा-324004 (राज.)

## आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(वन्दना एवं आवर्तन सम्बन्धी कतिपय जिज्ञासा-समाधान)

**जिज्ञासा-** वन्दना कितने प्रकार की होती है?

**समाधान-** वन्दना जघन्य, मध्यम तथा उत्कृष्ट के रूप में तीन प्रकार की होती है। जघन्य वन्दना का दूसरा नाम फेटा वन्दन, मध्यम वन्दना का दूसरा नाम थोभ वन्दन तथा उत्कृष्ट वन्दना का दूसरा नाम द्वादशवर्त वन्दन भी कहा जाता है।

जघन्य वन्दना मार्ग में चलते हुए गुरु भगवन्तों को 'मत्थण वंदामि' कहकर, दोनों हाथ जोड़ कर, मस्तक झुकाकर की जाती है। स्थानकादि में प्रवेश करते जब सन्त-सतियों के दर्शन होते हैं, तब यदि मध्यम वन्दना की अनुकूलता न हो तो यह वन्दना की जाती है।

तिक्खुत्तो के पाठ से आवर्तन देते हुए दो हाथ, दो घुटने और मस्तक, ये पाँच अंग भूमि पर झुकाकर मध्यम वन्दना की जाती है। सामायिक, प्रतिकमण, वाचना, प्रश्नोत्तर, तत्त्वचर्चा आदि के पूर्व भी यह वन्दना की जाती है।

प्रातः सायं छह आवश्यक करते (प्रतिक्रमण करते) 'इच्छामि खमासमणो' के पाठ से छह-छह आवर्तन देते हुए वन्दना करना उत्कृष्ट वन्दना कहलाती है।

**जिज्ञासा-** तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना करने का क्या प्रमाण है?

**समाधान-** भगवतीसूत्र शतक 3 उद्देशक 1 (सूत्र संख्या 40 से 42 तक, पृष्ठ संख्या-288-289, युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी कृत) में उल्लेख है कि बलिचंचा राजधानी के अनेक असुरों, देवों तथा देवियों ने तामली तापस की तिक्खुत्तो के पाठ से आवर्तन देते हुए वन्दना की। दूसरी बार तथा तीसरी बार भी उनके द्वारा उसी प्रकार आवर्तन देते हुए तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना की गई।

इससे स्पष्ट है कि तीन बार वन्दना करने की प्राचीन परम्परा रही है, जन-सामान्य में यही विधि प्रचलित रही है। इसके साथ ही हमारे गुरु भगवन्त सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन तथा सम्यक् चारित्र इन तीन रत्नों के धारक होते हैं। उन तीन रत्नों के प्रति आदर-बहुमान प्रकट करने तथा वे तीन रत्न हमारे जीवने में भी प्रकट हों, इसलिए भी तीन बार वन्दना की जाती है।

**जिज्ञासा-** तिकखुत्तो के पाठ से वन्दना करते समय आवर्तन किस प्रकार दिये जाने चाहिए?

**समाधान-** तिकखुत्तो का पाठ बोलते तिकखुत्तो शब्द के उच्चारण के साथ ही दोनों हाथ मस्तक (ललाट) के बीच में रखने चाहिए। आयाहिणं शब्द के उच्चारण के साथ अपने दोनों हाथ अपने मस्तक के बीच में से अपने स्वयं के दाहिने (Right) कान की ओर ले जाते हुए गले के पास से होकर बायें (Left) कान की ओर घुमाते हुए पुनः ललाट के बीच में लाना चाहिए। इस प्रकार एक आवर्तन पूरा करना चाहिए। इसी प्रकार से पयाहिणं और करेमि शब्द बोलते हुए भी एक-एक आवर्तन पूरा करना, इस प्रकार तिकखुत्तो का एक बार पाठ बोलने में तीन आवर्तन देने चाहिए। तीनों बार तिकखुत्तो के पाठ से इसी प्रकार तीन-तीन आवर्तन देने चाहिए।

**जिज्ञासा-** आवर्तन देने की विधि को सरल तरीके से कैसे समझ सकते हैं?

**समाधान-** आवर्तन देने की विधि को सरलता से इस प्रकार समझा जा सकता है कि जैसे हम उत्तर या पूर्व दिशा में मुँह करके खड़े हैं अथवा गुरुदेव के सम्मुख खड़े हैं, तब हमारे सामने घड़ी मानकर जिस प्रकार घड़ी में सूई घूमती है ठीक उसी प्रकार हमें भी आवर्तन देने चाहिए। जिस प्रकार मांगलिक कार्यों में आरती उतारी जाती है, मन्दिरों में परिक्रमा दी जाती है, उसी क्रम से आवर्तन देने चाहिए। अन्य भी लौकिक उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि जैसे घड़ी चलाने की क्रिया, चरखा घुमाने की क्रिया, रोटी बेलने का क्रम, वाहनों की गति दर्शाने वाला मीटर जिस क्रम से आगे बढ़ता है, ठीक इसी प्रकार आवर्तन हमें अपने ललाट के मध्य से प्रारंभ करते हुए अपने दाहिनी ओर ले जाते हुए देने चाहिए।

**जिज्ञासा-** वन्दन करने वाले को अपने बायें से दाहिनी ओर (Left to Right) ही

आवर्तन प्रारंभ क्यों करने चाहिए?

**समाधान-** अपने बाये से दाहिनी ओर आवर्तन करना गुरुदेव के प्रति विनम्रता एवं समर्पण भाव का सूचक है, क्योंकि बाया अंग विनम्रता का प्रतीक माना जाता है। इसी कारण से नमोत्थुणं का पाठ बोलते समय भी नीचे बैठकर बायाँ घुटना ही खड़ा किया जाता है। अतः वन्दन करने वाले को दोनों हाथ ललाट के बीच में रखकर अपने बायीं ओर से प्रारंभ करते हुए दाहिनी ओर (Left to Right) घुमाते हुए आवर्तन देने चाहिए। पाँच पदों की भाव वन्दना के अन्तर्गत भी तिकखुत्तो का पाठ बोलते समय आवर्तन इसी प्रकार देने चाहिए।

**जिज्ञासा-** आवर्तन किसका करना चाहिए?

**समाधान-** करयल-परिगहियं दसण्हं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी- (रायप्पसेणीय सूत्र), राजप्रश्नीयसूत्र में सूर्याभ देव के वर्णन से स्पष्ट है कि आवर्तन अपने मस्तक के चारों ओर दोनों हाथों को घुमाकर देना चाहिए, तभी सिरसावत्तं शब्द की सार्थकता सिद्ध होगी। इसीलिए स्थानकवासी परम्परा में मन्दिर अथवा मूर्ति की परिक्रमा रूप आवर्तन नहीं मानकर सिरसावत्तं रूप आवर्तन देना माना जाता है।

**जिज्ञासा-** अपने दाहिनी ओर दोनों हाथों को घुमाते हुए आवर्तन देना चाहिए, इसके क्या-क्या आगम प्रमाण हैं?

**समाधान-** निम्नांकित आगम प्रमाणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमें आवर्तन अपने बायीं (Left) ओर से प्रारंभ करते हुए तथा गुरुदेव के दाहिनी (Right) ओर से प्रारंभ करते हुए दोनों हाथों को घुमाते हुए देने चाहिए-

1. श्रावक प्रतिक्रमण (आवश्यक) सूत्र- आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा., लुधियाना-सप्तम आवृत्ति- वि.सं.2056 पृष्ठ-2, गुरु महाराज के दक्षिण की ओर से लेकर तीन बार प्रदक्षिणा कर के नमस्कार करें।
2. अपनी परम्परा-भाग-1 (आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा.) पृष्ठ-129 पर दोनों हाथों से तीन बार वन्दनीय की दाहिनी ओर से बायीं ओर नीचे तक आवर्तन दिया जाता है।
3. रायप्पसेणीय सूत्र- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.-पृष्ठ-40 पर, श्रमण भगवान महावीर की दाहिनी ओर से प्रारंभ कर तीन बार प्रदक्षिणा

की गई।

4. औपपातिक सूत्र-युवाचार्य मधुकरमुनिजी म.सा.- पृष्ठ-104 पर भगवान को तीन बार आदक्षिणा-प्रदक्षिणा कर वन्दन नमस्कार किया।
5. आचारांग सूत्र में दिशाओं का क्रम भी आवर्तन के क्रम पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-उत्तर को सूचित कर रहा है।
6. सामायिक सूत्र- उपाध्याय अमरमुनिजी-पृष्ठ-183- गुरुदेव के दाहिनी ओर से बायी ओर (Right to Left) तीन बार अंजलिपुट हाथ-घुमाकर आवर्तन करने का नाम ही प्रदक्षिणा है।
7. भगवती सूत्र शतक 1.1.20 की टीका के अनुसार वन्दनीय के दाहिनी तरफ से प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

उक्त प्रमाणों में गुरुदेव के दाहिनी ओर से आवर्तन प्रारंभ करने का उल्लेख है, जो कि वन्दनकर्ता के बायीं ओर से प्रारंभ करने की सूचना देता है। ललाट के मध्य में दोनों हाथ रखकर अपने बांयी ओर से आवर्तन प्रारंभ करने चाहिए अर्थात् अपने स्वयं के बांये से दाहिनी ओर दोनों हाथों को घुमाते हुए आवर्तन देना चाहिए।

**जिज्ञासा-** क्या आवर्तन का प्रारंभ ललाट के बीच से न करके दाहिने कान से भी किया जा सकता है?

**समाधान-** यद्यपि कुछ परम्पराओं में आवर्तन का प्रारंभ दाहिने कान से भी किया जाता है। वे दाहिने कान से ललाट पर लाते हुए बायें कान की ओर ले जाते हुए वापस दाहिने कान से ललाट तक आते हैं। किन्तु आवर्तन का समापन तो ललाट के मध्य में ही किया जाना चाहिए। यदि ललाट के मध्य में समापन करेंगे तो आवर्तन तीन से अधिक अर्थात् लगभग सवा तीन होंगे। अतः उपयुक्त यही है कि आवर्तन का प्रारंभ तथा समापन दोनों ही सिरसावतं मानकर ललाट के मध्य में होना चाहिए।

तेजो लेश्या छोड़ने पर (भगवती शतक 15 ) उसकी किरणें रूप अजीव द्रव्य भी आत्म प्रतिष्ठित होने से सचित्त होता है। यह भी वंदनीय के दाहिनी ओर से प्रदक्षिणा करता है। सुखविपाक आदि में भी सम्यक्त्व के अभाव में भी इसी प्रकार से वंदना का उल्लेख है। भगवती शतक 12 उद्देशक 1 में उत्पला भार्या द्वारा पुष्कलीजी के लिये 'वंदइ नमंसइ' व पुष्कलीजी द्वारा शंखजी के लिये भी मात्र 'वंदइ नमंसइ' शब्द आया,

अर्थात् श्राविकाजी द्वारा श्रावकजी को, और श्रावकजी द्वारा श्राविकाजी को तीन बार आवर्तन बिना ही वंदना नमस्कार का उल्लेख है। वे ही श्रमणोपासक भगवान की तीन बार आदक्षिणा प्रदक्षिणा पूर्वक वंदन करते हैं। अर्थात् मिथ्यादृष्टि, सम्यग्दृष्टि श्रावक व साधुओं के साथ देवगण व इन्द्र भी एक समान आवर्तन करते रहे हैं, वह आवर्तन लोक प्रचलित धारणा के अनुरूप अपने दाहिनी ओर से नीचे उतर ऊपर बायें ओर से ऊपर चढ़ने पर वंदनीय को दक्ष मान, दक्षता प्राप्ति के लिये उपयुक्त प्रतीत होता है।

**जिज्ञासा-** शुद्ध भावों से वन्दना करने से क्या-क्या लाभ होते हैं?

**समाधान-** उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन में बतलाया कि वन्दना करने से नीच गोत्र कर्म का क्षय होता है। उच्च गोत्र का बन्ध होता है। दाक्षिण्य भाव प्राप्त होता है। लोकप्रियता प्राप्त होती है। अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

वन्दन करने से अहंकार नष्ट होता है। विनय की उपलब्धि होती है। सद्गुरुओं के प्रति अनन्य श्रद्धा व्यक्त होती है। तीर्थंकरों की आज्ञा पालन करने से शुद्ध धर्म की आराधना होती है।

अपने से अधिक सद्गुणों और विकसित आत्माओं को नमन करने से चित्त में प्रमोद भाव उत्पन्न होता है। प्रमोद भावना से सद्गुणों की प्राप्ति होती है। ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर आदि दुर्गुणों का समूल नाश होता है। साधक का हृदय विशाल, उदात्त और उदार बनता है। साधक के विचार पवित्र होते हैं। आत्मा में साहस और शक्ति का संचार होता है। दृढ़ संकल्प के साथ आराध्य जैसा बनने का प्रयास करता है। सद्गुणों को पाने की प्रबल प्रेरणा प्राप्त होती है। कर्मों की महती निर्जरा होती है। तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन भी हो सकता है। श्री कृष्ण महाराज को शुद्ध भावों से अरिष्टनेमि भगवान एवं उनके शिष्यों को वन्दना करने पर क्षायिक समकित की प्राप्ति होने का उल्लेख भी ग्रन्थों में मिलता है।

**जिज्ञासा-** वन्दना करते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

**समाधान-** वन्दना करते समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए-

1. वन्दना गुरुदेव के सामने खड़े होकर करना चाहिए। जहाँ तक हो सके उनके पीछे खड़े होकर वन्दना नहीं करना चाहिए।

2. यदि गुरुदेव सामने नहीं हों तो पूर्व दिशा, उत्तर दिशा अथवा ईशान कोण (उत्तर पूर्व दिशा के बीच में) में मुख करके खड़े होकर वन्दना करना चाहिए।
3. आसन से नीचे उतरकर वन्दना करना चाहिए, आसनादि पर खड़े होकर वन्दना नहीं करना चाहिए।
4. गुरुदेव सामने हों अथवा नहीं हों आवर्तन देने का तरीका एक समान ही अर्थात् ललाट के मध्य में दोनों हाथ रखकर अपने स्वयं के बांये से दाहिनी ओर दोनों हाथों को घुमाते हुए आवर्तन देने चाहिए।
5. गुरुदेव के निकट में यदि तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार विधि सहित वन्दना करने का अवसर हो तो ही वन्दना करना चाहिए।
6. तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना करते समय आवर्तन देने के पश्चात् 'वंदामि' शब्द नीचे बैठकर दोनों हाथ जोड़ते हुए बोलना चाहिए। 'नमंसांमि' शब्द का उच्चारण करते पाँचों अंग (दोनों हाथ, दोनों घुटने और मस्तक) गुरुदेव के चरणों में झुकाना चाहिए। इसी प्रकार इस पाठ का अन्तिम शब्द 'मत्थण्ण वंदामि' बोलते समय भी पंचांग गुरुदेव के चरणों में झुकाना चाहिए।
7. अनुशासित रहकर, विवेकपूर्वक, विनम्रतापूर्वक वन्दन करने का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
8. गुरुदेव को स्वाध्याय में, वाचना में, कायोत्सर्ग में, साधनादि संयम-चर्या में व्यवधान नहीं हो, इस बात का ध्यान रखते हुए दूर से ही वन्दना करनी चाहिए।
9. जब गुरु भगवन्त गोचरी कर रहे हों, तपस्या, वृद्धावस्था, बीमारी अथवा अन्य किसी भी कारण से सोये हुए हों, आवश्यक क्रिया कर रहे हों, गोचरी लेने जा रहे हों, तब भी गुरुदेव के निकट जाकर वन्दना करना विवेकपूर्ण नहीं माना जाता है।
10. श्रावक-श्राविकाओं के ज्ञान-ध्यान में, प्रवचन-श्रवण आदि में बाधा नहीं हो, इसका पूरा विवेक रखते हुए वन्दना करनी चाहिए।

**जिज्ञासा-** 'इच्छामि खमासमणो' के पाठ में आवर्तन किस प्रकार देने चाहिए?

**समाधान-** 'इच्छामि खमासमणो' के पाठ में छह आवर्तन होते हैं। 1. अ हो, 2. का यं, 3. का य, 4. ज ता भे, 5. ज्ज व णि, 6. ज्जं च भे।

इनमें पहले, दूसरे, तीसरे आवर्तन में प्रथम अक्षर के उच्चारण में दोनों हाथों की दसों अंगुलियाँ गुरु चरणों का स्पर्श करें तथा दूसरे अक्षर में दोनों हाथों की दसों अंगुलियाँ अपने मस्तक का स्पर्श करें, इस प्रकार आवर्तन दिये जाते हैं।

चौथे, पाँचवें, छठे आवर्तन में प्रथम अक्षर के उच्चारण में दोनों हाथों की अंगुलियों से गुरु चरणों का स्पर्श करें, दूसरे अक्षर के उच्चारण में दोनों हाथ हृदय कमल पर लगायें तथा तीसरे अक्षर के उच्चारण में दोनों हाथों को अपने मस्तक पर लगाना चाहिए।

अथवा दूसरी तरह से तिकखुत्तो के पाठ के समान भी अपने दोनों हाथों को ललाट के मध्य से अपने बांये से दाहिनी ओर घुमाते हुए भी चौथा, पाँचवाँ, छठा आवर्तन दिया जा सकता है। वर्तमान में रत्नसंघ में प्रायः प्रथम विधि से ही इच्छामि खमासमणो के पाठ में आवर्तन दिये जाते हैं।

**जिज्ञासा-** अनेक परम्पराओं में आवर्तन देने की अलग-अलग विधियाँ प्रचलित हैं, ऐसी स्थिति में श्रावक-श्राविकाओं को क्या करना चाहिए?

**समाधान-** सैद्धान्तिक व्याख्या ग्रन्थों में आवर्तन देने की विभिन्न विधियाँ मिलती हैं। जिस संघ के आचार्यादि को जो विधि अधिक उपयुक्त लगती है वे उसे स्वीकार करते हैं तथा अपने संघ में लागू करते हैं। अतः आवर्तन की विधियों में अन्तर दिखाई देना सहज है। फिर भी इतना अवश्य है कि जो श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी जिस संघ में, जिस आचार्यादि के नेतृत्व में अपनी साधना-आराधना कर रहे हैं, उनके आचार्यादि संघ प्रमुख जिस किसी भी विधि को मान्य करें, स्वीकृत करें, उस विधि को पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ अपनाना चाहिए। ऐसा करने से वह साधक, आराधक बन सकता है, अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। परमश्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. अपने स्वयं के बांये से दाहिनी ओर हाथ घुमाने की विधि को सही मानकर आवर्तन देते थे। आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी वर्तमान में इसी विधि को उपयुक्त मानकर वन्दनादि करते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

## युवापीढ़ी का सोच एवं समस्याएँ

श्रीमती बीना जैन

वर्तमान युग की ज्वलन्त समस्या है, बच्चों एवं युवा पीढ़ी की संस्कारहीनता। आज प्रायः अधिकांश माता-पिता या अभिभावकों की यह शिकायत है कि पता नहीं बच्चों को निरन्तर सिखाने के बाद भी तथा स्वयं के अनुशासित व व्यवस्थित रहने के बाद भी हम अच्छी आदत डालने में असमर्थ हैं, क्यों? यह एक ऐसा प्रश्न है जो सदा ही मन में उठता रहता है। मैं इस समस्या के हल ढूँढने में लगी हुई थी कि अचानक कॉलबेल बजी, देखा तो पड़ौस में रहने वाली भारत विकास परिषद् की एक जुझारू महिला सदस्या दरवाजे पर थी। उन्हें देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई, क्योंकि शिक्षा विभाग की सेवा निवृत्त मनोविज्ञान व्याख्याता थीं वह। समाज में होने वाले परिवर्तनों और समस्याओं पर परिचर्चा व सर्वेक्षण में उनकी बहुत रुचि थी।

औपचारिक अभिवंदन के उपरान्त बातचीत प्रारम्भ हुई। ऐसा लगा मानो उन्हें अपनी संतानों से बहुत असन्तोष था। दुःख दर्द बांटते हुए मैंने भी अपने मन में घुमड़ने वाले प्रश्नों के बारे में चर्चा शुरू की बोली- अरे! यही तो प्रश्न है जिसके बारे में मैंने सर्वेक्षण किया है। बातचीत आगे बढ़ी। सर्वेक्षण 12 से 20 वर्ष की आयु के किशोरों व किशोरियों पर किया गया था। जो तथ्य उनके सर्वेक्षण में सामने निकलकर आए वे इस प्रकार हैं-

1. अधिकांश किशोर-किशोरियों ने कहा कि हमें बार-बार किसी बात के लिये टोके जाना पसंद नहीं आता।
2. अभिभावक का नियंत्रण हमें पसंद नहीं, हम अपने ढंग से जब जो जी चाहें वह करना चाहते हैं।
3. पहले लोगों के पास समय था, वह हर समय अपनी वस्तुएं व्यवस्थित रख सकते थे, समय के बंधन में रह सकते थे, पर आज मोबाइल, टी.वी, लैपटॉप व मित्रों के कारण हम अन्य कार्यों को गौण मानते हैं।
4. हमारी अपनी जिन्दगी है, हमारे फैसले हम खुद ले सकते हैं, मां-बाप तो अपनी जिन्दगी जी चुके हैं, उन्हे हमारे फैसले के बीच में बोलने का अधिकार क्यों ?
5. माता-पिता हमारा पालन पोषण करते हैं तो यह कोई अहसान नहीं है, यह उनका नैतिक उत्तरदायित्व है।
6. यदि हमारा कमरा, बिस्तर, कपड़े, किताबें अव्यवस्थित रहती हैं तो माँम (मम्मी) को इससे क्या परेशानी है? हमारा जीने का यही तरीका है। जब हमारी मरजी होती है, ठीक

कर ही लेते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि आज युवा-पीढ़ी अपने तरीके से अपनी शर्तों पर जीना चाहती है। आज माता-पिता के आचरण को अपनाने में उसे संकोच है, अन्यथा छोटी-छोटी शिष्टाचार की बातें तो बच्चों को सिखानी भी नहीं पड़ती थी- जैसे खाने के बाद कुल्ला करना, स्नान के पश्चात् तौलिया धूप में डालना, खाने की मेज से उठने पर कुर्सी अन्दर करना, टॉयलेट की स्वच्छता पर ध्यान देना, वृद्धजनों की सहायता व सम्मान करना। यह सब बातें अनुकरण से ही बच्चा सीख जाता था।

यह तो ठीक है, लेकिन मिसेज मेहरा, बच्चों एवं युवाओं में आक्रोश व अवमानना की भावना कैसे घर कर जाती है? इसके लिए हम अकेली युवा पीढ़ी को दोष नहीं दे सकते। कहीं न कहीं हमारे सामाजिक ढांचे में कुछ इस तरह के परिवर्तन आये हैं, जिससे भटकाव की यह स्थिति हमारे समक्ष आई है।

आज भौतिकवादी संस्कृति ने हमें स्वार्थी एवं आत्मकेन्द्रित बना दिया है, हम केवल अपने बारे में सोचते हैं। एकाकी परिवार भी कहीं न कहीं इसके लिये उत्तरदायी है। आज महिला घर की चार दीवारी में केवल गृहस्थी नहीं सम्भाल रही है, उसका भी अधिकांश समय बाहर बीतता है, जिससे बच्चों में माता-पिता के प्रति उपेक्षा का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार में वृद्ध व अनुभवी लोगों का प्यार-दुलार, संरक्षण व मार्गदर्शन मिलता था, आज उसका अभाव है। संयुक्त परिवार में सब एक दूसरे का खयाल रखते थे, आदर सम्मान करते थे, अतः बच्चे अप्रत्यक्ष रूप से यह आचरण में अपना लेते थे।

मेरा तो युवा पीढ़ी से अनुरोध है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में न आकर अपनी भारतीय संस्कृति की परम्परा व आदर्शों को यथा सम्भव अपनाकर भटकाव की इस अन्धेरी गुफा से बाहर निकलें तथा बदले हुए परिवेश व समाज की आवश्यकताओं के साथ समायोजन करें। मां-बाप का सम्बल बनें। यदि आपके आचरण की थोड़ी सी परिवर्तित आदतें उनको खुशी दे सकती हैं तो अवश्य दें। आदतों में परिवर्तन के लिये संकल्प की दृढ़ता बहुत आवश्यक है। आज जब माता-पिता बच्चों के निर्णय को सम्मान दे रहे हैं तो क्या युवा पीढ़ी मां-बाप के लिये इतना भी नहीं कर सकती?

—द्वारा- श्री अनिल कुमार, आर. के. हार्डवेयर, निरंजनपुरी,  
रामघाट रोड़, अलीगढ़-202001 (उ.प.)

### हार्दिक निवेदन

महावीर जयन्ती को संघ का हर श्रावक एवं हर श्राविका, हर बच्चा अपने नजदीकी स्थानक में जाकर तीन सामायिक करें, तीन नहीं तो कम से कम एक सामायिक अवश्य करें एवं यथाशक्ति तप-त्याग सहित महावीर जयन्ती मनाएँ।—पूरणराज अम्बानी, महामंत्री

## वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (21)

मधुर व्याख्यात्री श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-सम्पादक

(तर्ज:- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥

उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥

(तीसवाँ अध्ययन : तपोमार्ग)

राग-द्वेष से संचित होते, पापकर्म दुःख भारी,  
कर्म क्षीण हो जाते तप से, तप की महिमा न्यारी,  
तप है मोक्षमार्ग अवलम्बन, इसका ज्ञान करालो॥610॥  
हिंसादि पापों से रक्षण, पंच समिति पालन,  
त्रिगुप्ति और शल्यहीन, गर्व रहित आराधन,  
पापों का आस्रव रुकता है, तप की राह सम्भालो॥611॥  
जल रहित होता है सर जब, द्वार बन्द हो पहले,  
संचित नीर सुखा करके फिर, जल विहीन तब करले,  
वैसे ही सब पाप कर्म को, रोको और सुखालो॥612॥  
तप के भेद कहे दो प्रभु ने, बाह्य और आभ्यन्तर,  
छःछः भेद कहे दोनों के, आतम हित में शुभकर,  
तप के भेद-प्रभेद समझ कर, कर्म भस्म कर डालो॥613॥  
अनशन और ऊनोदरी तप के, विविध भेद बतलाये,  
आगम गाथाओं को पढ़कर, अपना ज्ञान बढ़ायें,  
विधियुक्त तप निष्पादन कर, कर्म संग छुड़ालो॥614॥  
भिक्षाचर्या भी एक तप है, अष्ट विधि बतलाई,  
सप्त एषणा में हो सजगता, अभिग्रह विधि सिखाई,

उच्च नीच मध्यम कुल में जा, अकल्प्य पिंड को टालो॥615॥  
 रस परित्याग तपस्या गहरी, काम विकार नहीं आता,  
 मुख्य प्रयोजन स्वाद विजय है, आसक्ति को घटाता,  
 नीरस भोज से संयम सधता, नित्य नियम अपनालो॥616॥  
 काय-क्लेश तप कहा प्रभु ने, तन आसक्ति तजना,  
 प्रतिसंलीनता तप धारण कर, अशुभ वृत्ति से बचना,  
 तप का मर्म समझ कर गहरा, तप का रंग लगाओ॥617॥  
 आभ्यन्तर तप के उपक्रम में, प्रायश्चित्त तप पहला,  
 दशविध दोष शुद्धि होती है, मन हो जाता उजला,  
 प्रमादजन्य दोषों को हर कर, आत्म विशुद्धि पालो॥618॥  
 अन्तर तप है विनय धर्म भी, गुरु की भक्ति करना,  
 हाथ जोड़ उठना आने पर, आसन सम्मुख धरना,  
 शीश झुकाकर गुरु आज्ञा का, पालन कर सुख पालो॥619॥  
 वैयावृत्य भी तप है ऊँचा, प्रभु ने है बतलाया,  
 यथाशक्ति दशविध सेवा का, उत्तम पाठ सिखाया,  
 तन पाने का सार यही है, मन में इसे बसालो॥620॥  
 स्वाध्याय के पाँच भेद हैं, शास्त्र वाचना करना,  
 पढ़े पाठ को दुहराना फिर, अनुप्रेक्षा चित्त धरना,  
 धर्मकथा है भेद पाँचवाँ, स्व का भान जगालो॥621॥  
 आर्त्त रौद्र ध्यान को तज के, धर्म शुक्ल को ध्याये,  
 क्षमा, मुक्ति, मृदुता, ऋजुता का, आलम्बन ही पाये,  
 मिथ्यामल को दूर करे यह, शुद्ध स्वरूप को पालो॥622॥  
 कायोत्सर्ग अन्तिम तप जिसमें, तन की ममता तजना,  
 हर चर्या में आत्मज्ञान का, लक्ष्य सदा ही रखना,  
 भेद ज्ञान की अनुमति करके, पर का संग छुड़ालो॥623॥

### (इकतीसवाँ अध्ययन : चरण विधि)

चरण विधि बतलाई प्रभु ने, जीवों को सुखदाई,  
 पालन करके तिरे अनन्ते, दुःख से मुक्ति पाई,  
 श्रद्धा पूर्वक करें आचरण, ऐसी शक्ति जगालो ॥624॥

असंयम का वर्जन करना, संयम में पग धरना,  
 राग-द्वेष हैं पाप प्रवर्तक, इनसे सदा ही बचना,  
 चरण विधि का पालन करके, जग का बन्ध छुड़ालो ॥625॥  
 गौरव, दण्ड, शल्य तीनों ही, जो साधक है तजता,  
 देव, मनुज, तिर्यंच कष्ट को, जो भिक्षु है सहता,  
 समभावों में रह कर भिक्षु, जग का बन्ध छुड़ालो ॥626॥  
 जो साधक विकथा नहीं करता, चार कषायों से टलता,  
 आर्त, रौद्र, और संज्ञाओं का, अपवर्जन है करता,  
 अशुभ भाव को तज कर भिक्षु, जग का बन्ध छुड़ालो ॥627॥  
 पंच महाव्रत, समिति पालन, इन्द्रिय निग्रह करना,  
 वर्जन करने पाँच क्रिया का, यत्न नित्य ही रखना,  
 निर्मल मन से व्रत पालन कर, जग का बन्ध छुड़ालो ॥628॥  
 छह काया, छह लेश्याओं में, और आहार ग्रहण में,  
 अशुभ भाव के परिहरण में, शुभ भावों के वरण में,  
 भिक्षु यतना रखकर इनमें, जग का बन्ध छुड़ालो ॥629॥  
 सप्त एषणा और प्रतिमा में, यतना जो है रखता,  
 विचलित ना हो सप्त भयों से, जग से जो नहीं डरता,  
 निर्भय होकर विचरण करके, जग का बन्ध छुड़ालो ॥630॥  
 तज कर अष्ट मदों को करता, ब्रह्म गुप्ति नौ पालन,  
 दशविध श्रमण धर्म अपनाता, दस पापों का भंजन,  
 विधि-निषेध में यतना रख कर, जग का बन्ध छुड़ालो ॥631॥  
 एकादश श्रावक की प्रतिमा, द्वादश प्रतिमा भिक्षु,  
 इनका यत्न करे दृढ़ता से, खोल ज्ञान के चक्षु,  
 श्रद्धा से आचार पाल कर, जग का बन्ध छुड़ाओ ॥632॥  
 उपयोग रहे तेरह क्रिया में, चौदह जीव का रक्षण,  
 परमधार्मिक पर्यायों के, भावों का हो उत्सर्जन,  
 तज कर हेतु पाप कर्म के, जग का बन्ध छुड़ालो ॥633॥  
 गाथा सोलह सूयगडांग की, और सत्रह असंयम,  
 विधि-निषेध के पालन में, यतना रखे हरदम,

संयम में रत रह कर भिक्षु, जग का बन्ध छुड़ालो ॥634॥  
 अष्टादश अब्रह्मचर्य कहे, विरत भिक्षु उनसे,  
 'ज्ञाता' के उन्नीस अध्ययन, बोध जगाले उनसे,  
 बीस असमाधि से निवृत्त हो, जग का बन्ध छुड़ालो ॥635॥  
 तजे सबल इक्कीस दोष, बाईस परीषह सहना,  
 सूयगडांग के तेईस अध्ययन, यत्न से पालन करना,  
 अनुसरण कर चौबीसी का, जग का बन्ध छुड़ालो ॥636॥  
 पच्चीस भाव महाव्रतों के, संयम रक्षा करने,  
 छब्बीस सूत्रत्री उद्देशक, चरण विधि में सजने,  
 सम्यक् इनका पालन करके, जग का बन्ध छुड़ालो ॥637॥  
 सत्ताईस अणगार गुणों में, अट्ठाईस आचारम्,  
 आचार धर्म का पालन करने, हो मजबूत विचारम्,  
 अनाचार से सदा विरत रह, जग का बन्ध छुड़ालो ॥638॥  
 उन पाप श्रुतों से दूर ही रहना, जो उन्तीस बतलाये,  
 महामोहनीय कर्मबन्ध के, तीस कारण कहलाते,  
 अपवर्जन करके इन सबका, जग का बन्ध छुड़ालो ॥639॥  
 सिद्धों के इकतीस गुणों से, अन्तर्मन को जगाले,  
 प्रवृत्ति हो बत्तीस योग में, तैंतीस आशातन टाले,  
 विनय भक्ति कर गुरुजनों की, जग का बन्ध छुड़ालो ॥640॥  
 इनमें जो श्रम करता भिक्षु, और उपयोग है रखता,  
 पालन चरण विधि का करके, अशुभ भाव से बचता,  
 अनुपालन कर उपादेय का, सिद्धि का सुख पालो ॥641॥

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,  
 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्तरसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

## रचनाएँ आमन्त्रित

जिनवाणी के लिए मौलिक एवं स्तरीय रचनाओं/आलेखों का सदैव स्वागत है।  
 आपकी रचनाओं से ही यह पत्रिका दीसिमान हो रही है। इस वर्ष भी कतिपय श्रेष्ठ  
 रचनाओं को पुरस्कृत किया जाएगा।-सम्पादक

## धर्म: प्राकृतिक नियमों का पालन

श्री प्रमोद महनोत

धर्म क्या है? इस विषय को समझते हुए प्रायः प्रवचनों में गुणीजनों द्वारा बतलाया जाता है कि “वत्थु सहावो धम्मो” अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही उसका धर्म है। अगर हम अपने असली स्वभाव के विपरीत कोई काम करते हैं तो वह धर्म नहीं, बल्कि विकृति के समरूप होगा। जब हम अपने स्वभाव में लौटते हैं तथा उसके अनुरूप कोई क्रिया करते हैं तो वह हमारा धर्म कहलायेगा।

जैन धर्म को हम बोझ नहीं समझ कर बोझ कम करने वाला समझें। जैन धर्म जीवन जीने की प्राकृतिक विधि है। यह पर्यावरण के लिए भी हितकर है। जैन धर्म अपने शरीर से, वचन से व मन से प्रकृति के नजदीक लाने की जीवन शैली है। प्रकृति में सभी जीवों का समावेश है हमारा स्वभाव ‘धर्म’ ऐसा हो कि सब जीवों का संरक्षण करें, उनका अस्तित्व बचायें। इस तरह के सहअस्तित्व को बनाये रखने के लिये अहिंसा ही एकमात्र उपाय है। हर जीव को पनपने का अवसर दें, यह तभी संभव है, जब उसे सब प्राकृतिक संसाधनों में सहभागिता मिले, बराबर का हक हो। दूसरों जीवों का ध्यान रखते हुए अपनी जरूरतों को निम्न रखें तथा सिर्फ अपने लिए संग्रह करने की प्रवृत्ति से बचें। ऐसी स्थिति में चोरी का भाव भी नहीं आयेगा।

चार सार्वभौमिक सिद्धान्त (Universal Principles) हैं- 1. अहिंसा (Non-violence), 2. सत्य (Truth), 3. अपरिग्रह (Limiting requirements), 4. अचौर्य (Non-stealing)

जैन धर्म उपर्युक्त सिद्धान्त दर्शाता है, अतः जैन धर्म एक प्राकृतिक व सार्वभौमिक पद्धति है। A natural and truly universal philosophy, a code of conduct to be observed by all human beings. this will result in an environment of peace & happiness for all including animal & Plant kingdom.

तीर्थंकरों के द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त चार सूत्र जैन धर्म के मुख्य आधार हैं। इसके अलावा पाँचवा ब्रह्मचर्य (Celibacy) का सिद्धान्त उचित यौन आचरण का है, जिसका प्रभु महावीर स्वामी ने समावेश किया था। ये पाँचों जैन धर्म के महाव्रत एवं अणुव्रत हैं जो परमज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। साधु के लिए महाव्रत तथा श्रावक के लिए अणुव्रत हैं।

जैन धर्म प्राकृतिक नियमों (Laws of Nature) के अनुसार चलता है। इन नियमों का अनुभव प्राप्त करने पर हमारी अज्ञानता, डर व मोह-माया खत्म होगी। हमारा आचरण सही हो जायेगा, तो हम कर्म बंधनों से मुक्त हो मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होंगे।

श्री महावीराय नमः ॥  
॥ जय गुरु हस्ती ॥

श्री महावीराय नमः ॥  
॥ जय गुरु हस्ती ॥

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य  
आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०७३

वीर सम्वत् 2542-43

( निणय सागर पंचाग से सम्पादित )

सन् 2016-2017

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्षवी दिनांक	घड़ी पल	षण्य तिथि	गृह्य तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र	विशेष विवरण
१	चैत्र सुदि	दि १४ गुरु	२१.०४.२०१६	०५-२०	३ शनि	१४ गुरु	५ सोम	६ शुक्र	-आपत्कित ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ८ गुस्कार १४.४.२०१६। -मगवान मलवीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ मंगलवार १६.४.२०१६।
२	वैशाख वदि	३० शुक्र	०६.०५.२०१६	४७-२८	-	-	-	-	-आपत्कित ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ शुक्रवार २२.४.२०१६। -अक्षय तृतीया (वर्षातिथ पारणा) वैशाख सुदि ३ सोमवार ६.५.२०१६।
३	वैशाख सुदि	१५ शनि	२१.०५.२०१६	५२-०८	-	-	२ रवि	६ गुरु	-आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की २५ वीं पुष्य तिथि वैशाख सुदि ८ शनिवार १४.५.२०१६।
४	ज्येष्ठ वदि	१४ शनि	०४.०६.२०१६	१५-००	८ रवि	३ बुध	३० रवि	-	-मगवान मलवीर केवल कल्याणक वैशाख सुदि १० सोमवार १६.५.२०१६। -संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि ११ मंगलवार १७.५.२०१६।
५	ज्येष्ठ सुदि	१४ रवि	१६.०६.२०१६	२४-१०	१ रवि	१० बुध	-	५ गुरु	-आचार्य धर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २६ वं आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रवार २७.५.२०१६।
६	आषाढ वदि	३० सोम	०४.०७.२०१६	२६-३०	११ गुरु	-	१३ शनि	-	-परणा का मूल पुत्र पुत्र्य पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म. सा. की २३३ वीं पुष्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ शनिवार २८.५.२०१६।
७	आषाढ सुदि	१५ मंगल	१६.०७.२०१६	५६-०३	-	-	-	२ बुध	-क्रियोद्धारक पुष्य आचार्य श्रीतन चन्द जी म. सा. की १७१ वीं पुष्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ शनिवार २८.५.२०१६।
८	श्रावण वदि	३० मंगल	०२.०८.२०१६	५०-१५	१३ रवि	-	१० शुक्र	३० मंगल	-ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार १६.६.२०१६। -आद्या नक्षत्र प्रारम्भ: आषाढ वदि १ मंगलवार २१.६.२०१६।
९	श्रावण सुदि	१४ बुध	१७.०८.२०१६	२५-२८	-	६ मंगल	-	-	इसके पश्चात् गाज-बीज होने पर सूत्र की अस्तव्यव नहीं रहेगी। -२२० वं क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि २ बुधवार २२.६.२०१६।
१०	भाद्रपद वदि	३० गुरु	०१.०९.२०१६	२०-२५	४ रवि	-	६ शुक्र	१३ मंगल	-चतुर्मास प्रारम्भ (चतुर्मासी पक्की) आषाढ सुदि १५ मंगलवार १६.७.२०१६।
११	भाद्रपद सुदि	१५ शुक्र	१६.०९.२०१६	४५-१५	१३ बुध	६ रवि	-	-	-पुष्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की ६८ वीं पुष्यतिथि श्रावण वदि ३० मंगलवार २८.८.२०१६।
१२	आश्विन वदि	३० शुक्र	३०.०९.२०१६	५७-५०	६ बुध	-	७ गुरु	११ सोम	-सप्तम वदि ५ मंगलवार ६.९.२०१६।
१३	आश्विन सुदि	१४ शनि	१५.१०.२०१६	१६-४३	-	१ रवि	-	-	-आपत्कित ओली प्रारम्भ: आश्विन सुदि १० मंगलवार १०.१०.२०१६।
१४	कार्तिक वदि	३० रवि	३०.१०.२०१६	४०-४५	१ रवि	-	४ बुध	८ रवि	-पुष्य आचार्य श्री भूपरानी म. सा. की पुष्य तिथि आश्विन सुदि १० मंगलवार ११.१०.२०१६।

- संवत्सरी महापर्व श्रावण सुदि ५ मंगलवार ६.६.२०१६।  
 -वसुधैव कुटुम्बकम्, आशुतोष शुद्धि १०.२०१६।  
 -पूज्य आचार्य श्री चतुर्वेदी म. सा. की पुण्य तिथि आशुतोष सुदि ३० मंगलवार ११.१०.२०१६।  
 -आशुतोष ज्योती पूर्ण आशुतोष सुदि १५ शुक्रवार १६.१०.२०१६।  
 -स्वाति त्रय प्रारम्भ कार्तिक वदि ८ रविवार २३.१०.२०१६।  
 -इसके पश्चात गणनीय होने पर सूत्र की अवज्ञाय रहेगी।  
 -मंगलवार महावीर निर्वाण कल्याणकार्तिक वदि ३० रविवार ३०.१०.२०१६।  
 -श्री संवत् २५४३ प्रारम्भ एवं नौम्य प्रतिष्ठा कार्तिक सुदि १ सोमवार ३१.१०.२०१६।  
 -ज्ञान पर्वणी कार्तिक सुदि ५ शनिवार ५.११.२०१६।  
 -आचार्य प्रवर १००८ श्री हीरावन्दनी म. सा. का ५४ वां शिवा दिवस कार्तिक सुदि ६ रविवार ६.११.२०१६।  
 -वायुगणिक पक्खी (वायुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोकशाह जयन्ती कार्तिक सुदि १५ सोमवार १४.११.२०१६।  
 -आचार्य पूज्य श्री विनयवन्द जी म.सा. की १०१ वीं पुण्य तिथि मार्गशीर्ष वदि १२ शनिवार २६.११.२०१६।  
 -नौम्य एकदशी मार्गशीर्ष सुदि ११ शनिवार १०.१२.२०१६।  
 -मंगल्य पर्वदशम जन्म कल्याणक पौष वदि १० शुक्रवार २३.१२.२०१६।  
 -फाल्गुनी चतुर्मासी एवं (चतुर्मासी पक्खी) फाल्गु सुदि १५ रविवार १२.०३.२०१७।  
 -मंगल्य आदिपंचम जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीरावन्दनी म. सा. का ७६ वां जन्म दिवस वैश्व वदि ८ मंगलवार २१.३.२०१७।

१३	आशुतोष सुदि	१५-१६-२०१६	१६-१७	-	१ रवि	-	-	-
१४	कार्तिक वदि	१७-१८-२०१६	१८-१९	१ रवि	-	४ बुध	८ रवि	-
१५	कार्तिक सुदि	१८-१९-२०१६	२०-२१	१२ शुक्र	४ शुक्र	-	-	-
१६	मार्गशीर्ष वदि	२०-११-२०१६	२०-२५	४ गुरु	११ शुक्र	२ बुध	६ शनि	-
१७	मार्गशीर्ष सुदि	१३-१२-२०१६	०४-४८	१५ मंगल	-	१४ मंगल	-	-
१८	पौष वदि	२८-१२-२०१६	०७-५०	-	१३ मंगल	-	४ शनि	-
१९	पौष सुदि	१२-०१-२०१७	२३-५०	११ रवि	-	१३ मंगल	-	-
२०	माघ वदि	२७-०१-२०१७	५५-२०	-	-	-	१ शुक्र	-
२१	माघ सुदि	१०-०२-२०१७	००-२३	१५ शुक्र	-	१० सोम	१४ शुक्र	-
२२	फाल्गुन वदि	२५-०२-२०१७	३५-२८	-	५ गुरु	-	-	-
२३	फाल्गुन सुदि	१२-०३-२०१७	३३-४३	७ शनि	-	८ रवि	१२ गुरु	-
२४	चैत्र वदि	२७-०३-२०१७	१०-१५	-	७ सोम	-	-	-

### गुरु हस्ती के दो फरमान - सामायिक स्वाध्याय महान्

### गुरु हीरा का यह सन्देश - व्यसन मुक्त हो सारा देश

प्रिय महानुभावों! शुद्ध चित्त से दोनों समय प्रतिक्रमण करने से निर्जरा होती है। उत्कृष्ट रसायन आने से तीर्थंकर गोत्र की उपाजना होती है। अतः दोनों समय प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। यदि प्रमादवश न हो सके तो पक्खी को तो अवश्य करना चाहिये। पांचवे आवश्यक के काउंसग में देवसी को ४, पक्खी को ८, चौमासी को १२, और सम्बत्सरी को २० लोगस का चिन्तन करना अजमेर सम्मेलन का नियम है। सामायिक स्वाध्याय का घर-घर प्रचार करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें व व्यसनों का त्याग करें।

**स्व. श्री सम्पतचन्द जी सिधवी एवं स्व. श्री रिखबचन्द जी सिधवी की स्मृति में सप्रेम भेंट**

भेंटकर्ता (प्रादिन स्थान) :- श्री चंचलचन्द सिधवी 507 ए 5-बी रोड, सदरदारपुरा, जोधपुर-342003 फोन : 09460767029

संस्कार

## संस्कार केन्द्र सर्वांगीण विकास के प्रकल्प

प्राणिमित्र श्री नितेश नागौरता जैन

संस्कार केन्द्रों की स्थापना से-

- जीवन संस्कारित बनेगा।
- गावं-गांव घर-घर में संस्कारों का दीप जलेगा।
- कंठस्थ ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होगा।
- वर्तमान और भविष्य सुखद बनेगा।
- नैतिकता, सदाचार, कर्तव्यपरायणता को बल मिलेगा।
- जैनत्व का गौरव बढ़ेगा।
- बल-बुद्धि, शक्ति का सदुपयोग होगा।
- आत्म भावों में विस्तार होगा।
- सहयोग भावों का संचार होगा।
- धार्मिक दृढ़ता-श्रद्धा में बढ़ोतरी होगी।
- सम्यक भावनाओं में दृढ़ता आयेगी।
- व्रत-नियमों का प्रचार-प्रसार होगा।
- संवर-निर्जरा भाव बढ़ेंगे।
- वैराग्य की ज्योति जलेगी।
- त्याग-तप में अभिवृद्धि होगी।
- बाल-युवा-प्रौढ़ का सर्वांगीण विकास होगा।
- जिनशासन की सेवा होगी।
- भव सुधरेगा।
- समय का सदुपयोग होगा।
- लाभ ही लाभ मिलेगा.....

जिस प्रकार से हीरा छोटा सा होता है, किंतु वह बहुमूल्य होता है। पानी का मटका भले ही छोटा सा होता है, किंतु सैकड़ों प्यासे कंठों को तृप्त करता है। ठीक इसी प्रकार से संस्कार केन्द्र भले ही प्रकल्प छोटा सा है, किंतु इस एक प्रकल्प से अनेक आत्माओं को धर्म के सही स्वरूप के साथ-साथ निज जीवन को संस्कारित और नैतिक बनाने की सहज ही प्रेरणा मिलना संभव है। यह दिखने में छोटा सा प्रकल्प है, किंतु हमारा भव भ्रमण घटाने में प्रेरक भूमिका का निर्वहन कर सकता है। वस्तुतः यह छोटा सा प्रकल्प हमारे वर्तमान और भविष्य को सफल बनाने वाला प्रेरक प्रकल्प है।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी (राज.)

## विमलवाहन को वैराग्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

दुःख एवं उसके कारणों से मुक्त होने की इच्छा मुमुक्षा है। जो इस मुमुक्षा से युक्त हैं वे मुमुक्षु हैं। मुमुक्षु होना महान् सौभाग्य का विषय है। हर मानव के लिए तथा विशेषकर मुमुक्षु भाई-बहिनों के लिए पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. ने जो संदेश तीर्थंकर भगवान श्री अजितनाथ के जीव के माध्यम से दिया है वह जैन धर्म का मौलिक इतिहास (वृहद् व संक्षिप्त) से चयनकर यहाँ दिया जा रहा है। हर एक के लिए, विशेषकर मुमुक्षुओं के लिए, पठनीय, चिन्तनीय व हृदयंगम करने योग्य है।

1. सुखपूर्वक राज्य करते हुए प्रजावत्सल राजा विमलवाहन (भगवान श्री अजितनाथ का जीव) एक दिन आत्म-निरीक्षण करने लगा कि मानव भव पाकर प्राणी को क्या करना चाहिए? संसार के अनन्त प्राणी कराल काल की विकराल चक्की में अनादि काल से पिसते चले आ रहे हैं। चौरासी लाख जीव योनियों में जन्म-मरण के असह्य व दारुण दुःखों को भोगते हुए तड़प रहे हैं, सिसक रहे हैं और करुण क्रन्दन कर रहे हैं। इस जन्म, जरा, मरण रूपी कालचक्र का कोई ओर है न कोई छोर ही। भवाटवी में अनादि काल से भटकते हुए उन अनन्तानन्त प्राणियों में मैं भी सम्मिलित हूँ। मैं इस भयावह भवाटवी के चक्रव्यूह से, इस त्रिविध ताप से जाज्वल्यमान भट्टी से और जन्म-मरण के भयावह भव-पाप से कब छुटकारा पाऊँगा? चौरासी लाख जीव योनियों में केवल एक मानव योनि ही ऐसी है, जिसमें प्राणी साधना पथ पर अग्रसर हो सभी सांसारिक दुःखों का अन्त कर भवपाश से मुक्त हो 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के सही स्वरूप को प्राप्त कर अनन्त-अव्याबाध-शाश्वत सुखधाम शिवपद को प्राप्त कर सकता है। मुझे भवपाश से विमुक्त होने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। अनाद्यनन्त काल तक दुस्सह दुःखपूर्ण विविध योनियों में भटकने के पश्चात् पूर्वोपार्जित अनन्त-अनन्त पुण्य के प्रताप से मुझे यह दुर्लभ मानव जन्म मिला है। कर्मभूमि के आर्यक्षेत्र में किसी हीन कुल में नहीं, अपितु उत्तम आर्य कुल में मेरा जन्म हुआ है। मुझे स्वस्थ, सशक्त, सुन्दर शरीर मिला है। ऐसा सुन्दर, सुनहरा सुयोग अनन्तकाल तक भव-भ्रमण करने के अनन्तर अनन्त पुण्योदय के प्रभाव से ही प्राप्त होता है। इस अमूल्य मनुष्य जीवन का एक-एक क्षण अनमोल है। फिर मैं कैसा अभागा मूढ़ हूँ जो मैंने इस चिन्तामणि

तुल्य तत्काल अभीप्सित अमृतफल प्रदायी महाधर्म्य मानव जन्म की महत्त्वपूर्ण घड़ियों को क्षणभंगुर एवं मृगमरीचिका के समान वास्तविकता-विहीन सांसारिक सुखोपभोग में नष्ट कर दिया है।

2. स्वप्न का दृश्य तभी तक दिखता है, जब तक कि आँखे बन्द हैं, आँखे खुलते ही वह दृश्य तिरोहित हो जाता है और स्वप्नद्रष्टा समझ जाता है कि वह दृश्य जंजाल था, धोखा था, अवास्तविक था, किन्तु जागृत अवस्था में दिखने वाला यह संसार का दृश्य तो स्वप्न के दृश्य से भी बहुत बड़ा धोखा है। यह दृश्य जंजाल होते हुए भी, जब तक आँखे खुली रहती हैं, तब तक प्राणी को सच्चा प्रतीत होता है और आँखें बन्द हो जाने पर झूठा जंजाल, अवास्तविक, अस्तित्वविहीन अथवा असत् प्रतीत होता है। जीवन भर प्राणी असत् को सत् समझता हुआ भ्रम में रहे, भुलावे में रहे और सब कुछ समाप्त होने पर मानव-जन्म रूपी चिन्तामणि रत्न लुट जाने के पश्चात् मरणोपरान्त वास्तविकता का उसे बोध हो, ऐसा भ्रामक व धोखाघड़ी से ओतप्रोत है यह सांसारिक दृश्य। सन्त कबीर ने ठीक ही कहा है- 'माया महा ठगिनी मैं जानी।' इससे बढ़कर धोखा और क्या हो सकता है? कितने भुलावे में रहा हूँ मैं? कितना बड़ा धोखा खाया है मैंने कि जो भवसागर से पार उतारने वाले महापोत तुल्य महत्त्वपूर्ण महान् निर्णायक मनुष्य जीवन को विषय-वासनाओं के एकान्ततः असत् इन्द्रजाल में व्यर्थ ही व्यतीत कर दिया। अब उन बीती अमूल्य घड़ियों का एक भी बहुमूल्य क्षण लौटकर नहीं आ सकता। जो अनन्त मूल्यवान समय हाथ से निकल गया, उसके लिये हाथ मल-मल कर पछताने पर भी कुछ हाथ आने वाला नहीं है। जो बीता सो बीत गया, अब आगे की सुध लेना ही बुद्धिमत्ता है। अब जो जीवन शेष रहा है, उससे अधिकाधिक आध्यात्मिक लाभ मिलना ही मेरे लिये परम हितकर होगा। महापुरुषों का कथन है कि अध्यात्म मार्ग पर प्रवृत्त अन्तर्मुखी प्रवृत्तिवाला प्रबुद्ध आत्मदर्शी आत्मा उत्कट भाव द्वारा एक क्षण में भी जो अक्षय आत्म-निधि अर्जित करता है, उस एक क्षण में उपार्जित आत्मनिधि के समक्ष संसार की समस्त सम्पदाएँ, समग्र निधियाँ तृण तुल्य तुच्छ हैं। अतः अब मुझे इन सब निस्सार ऐहिक भोगोपभोग, ऐश्वर्य और वैभवादि को विषवत् त्याग कर स्व-पर कल्याणकारी साधना-पथ पर इसी क्षण अग्रसर हो जाना चाहिए।
3. इस प्रकार संसार से विरक्त हो महाराज विमलवाहन ने आत्महित साधना का सुदृढ़ संकल्प किया। उन शुभ भावनाओं का अचिन्त्य अद्भुत चमत्कार हुआ। अन्तर्मानस में शुभ भावना की तरंग के उद्भूत होते ही तत्काल आचार्य अरिदमन के समागम का

अमर अमृतफल मिला।

4. आचार्य अरिदमन का अमरता प्रदान करने वाला उपदेश सुनकर राजा विमलवाहन का प्रबल वैराग्य अत्युत्कट हो गया। उसने आचार्यदेव से विनयपूर्वक प्रश्न किया— “भगवन्! अनन्त दारुण दुःखों से ओतप्रोत इस संसार में घोरतिघोर दुःखों को निरवच्छिन्न परम्परा से निरन्तर निष्पीडित और प्रताड़ित होते रहने पर भी साधारणतः प्राणियों को संसार से विरक्ति नहीं होती। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है। ऐसी स्थिति में आपको संसार से विरक्ति किस कारण एवं किस निमित्त से हुई?”

■ आचार्य श्री अरिदमन ने कहा— “राजन्! विज्ञ विचारक के लिए संसार का प्रत्येक कार्यकलाप वैराग्योत्पादक है। विचारपूर्वक देखा जाय तो सम्पूर्ण संसार वैराग्य के कारणों और निमित्तों से भरा पड़ा है। प्रत्येक प्राणी के समक्ष, उसकी प्रत्येक दिन की दिनचर्या में पग-पग पर, प्रतिपल-प्रतिक्षण वैराग्योत्पादक प्रबल से प्रबलतर निमित्त प्रस्तुत होते रहते हैं। परन्तु मोह-ममत्व के मद से मदान्ध बना संसारी प्राणी उन निमित्तों को बाह्य दृष्टि से देखकर भी अंतर्दृष्टि से न देखने के कारण देखी को अनदेखी कर देता है। सुलभबोधि प्राणी तो संसार की स्वानुभूत अथवा परानुभूत प्रत्येक घटना को वैराग्य का निमित्त समझकर साधारण से साधारण और छोटी से छोटी नगण्य घटना के निमित्तों से प्रबुद्ध होकर संसार से तत्क्षण विरक्त हो जाता है।”

■ “राज्य सिंहासन पर आरूढ़ होने के कुछ समय बाद मैंने दिग्विजय करने का निश्चय किया और अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ विजय-यात्रा पर निकल पड़ा। उस यात्रा के समय मैंने एक स्थान पर नन्दनवन के समान एक अति रमणीय उद्यान देखा। वापी-कूप-तड़ाग एवं लता मंडपों से आकीर्ण वह उद्यान स्वर्ग-सा प्रतीत हो रहा था। उस उद्यान की मनोहर छटा पर मैं मुग्ध हो गया। अपने सामन्तों और सेनापतियों के साथ उस उद्यान में कुछ समय तक विश्राम करने के बाद मैंने पुनः दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया।” “उस विजय यात्रा में मैंने अनेक देशों पर अपना आधिपत्य जमाया, किन्तु वैसा नयनाभिराम उद्यान फिर कभी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। दिग्विजय के पश्चात् जब मैं पुनः अपनी राजधानी की ओर लौटा तो उस उद्यान को पूर्णतः विनष्ट और उजड़ा हुआ पाया। घने विशाल फल-फूलों से लदे वृक्षों की जगह खड़े टूट प्रेतों के समान भयावह लग रहे थे। यह देखकर मेरे मन-मस्तिष्क को बड़ा गहरा आघात पहुँचा। मुझे सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् क्षणभंगुर प्रतीत होने लगा और मन में विचार आया कि संसार के सभी प्राणियों को देर-सबेर इस स्थिति को प्राप्त होना है।”

■ “जो बच्चा आज जन्मा है, वह अनुक्रमशः कालान्तर में किशोर, युवा एवं जराजर्जरित

वृद्ध होगा और एक दिन कराल काल का कवल बन जायेगा। आज जो स्वस्थ, सुडौल एवं सुन्दर प्रतीत होते हैं, वे भयंकर रोगों से ग्रस्त हो नरकोपम-दारुण दुःखों को भोगते हुए, सिसकते, कराहते, करुण क्रन्दन करते-करते एक दिन कालकवलित हो जाते हैं। जो आज राजा है, वही कल रंक बनकर घर-घर भीख मांगता हुआ भटकता है। जिसके जयघोषों से एक दिन गगन गूँजता था वही दूसरे दिन जन-जन द्वारा दुत्कारा जाता है। जो आज बृहस्पति तुल्य वाग्मी है, वही पक्षपात, विक्षिप्ता आदि रोगों से ग्रस्त हो महामूढ़ बन जाता है। किस क्षण, किसकी, कैसी दुर्गति होने वाली है, यह किसी को विदित नहीं। संसार के सभी जीव स्वयं द्वारा विनिर्मित कर्म-रज्जुओं से आबद्ध हो असह्य दारुण दुःखों से ओतप्रोत चौरासी लाख जीव-योनियों में पुनः-पुनः जन्म जरा-मृत्यु की अति विकराल चक्की में निरन्तर पिसते हुए चौदह रज्जू प्रमाण लोक में भटक रहे हैं। किसी बाजीगर की डोर से बंधे मर्कट की तरह परवश हो अनन्त काल से नटवत् विविध वेश धारण कर नाट्यरत हैं। भवानि की भीषण ज्वालाओं में धुकधुकाती हुई इस संसार रूपी भट्टी में झुलस रहे हैं, भुन रहे हैं, जल रहे हैं, भस्मीभूत हो रहे हैं। इन घोर दुःखों का कोई अन्त नहीं, एक क्षण भर के लिये भी कोई विश्राम नहीं, सुख नहीं, शान्ति की श्वास-उच्छ्वास लेने का भी अवकाश नहीं।”

■ “यही चिन्तन का प्रवाह आत्मनिरीक्षण की ओर मुड़ा तो मैं काँप उठा, सिहर उठा। अनन्त काल से जन्म-मरण की चक्की में पिसते चले आ रहे, दुःख-दावाग्नि में दग्ध होते आ रहे अनन्त-अनन्त संसारी प्राणियों में मैं भी एक संसारी प्राणी हूँ। हाय! मैं भी अनन्त काल से इन अनन्त दुःखों को भोगता आ रहा हूँ। यदि इस समय मैंने सम्हल कर, साधनापथ पर अग्रसर हो इन दुःखों के मूल का अन्त नहीं किया तो मैं फिर अनन्त-अनन्त काल तक इन असह्य दुःखों से त्रस्त रहूँगा, भीषण भवाटवी में भटकता रहूँगा।”

■ “मुझे उसी क्षण संसार से विरक्ति हो गई। मुझे यह सम्पूर्ण संसार एक अति विशाल अनिकुण्ड के समान दाहक प्रतीत होने लगा। विषय भोगों को विषवत् ठुकराकर मैंने श्रमण धर्म की दीक्षा ग्रहण कर ली। तभी से मैं शाश्वत सुखप्रदायी पंच महाव्रतों का पालन कर रहा हूँ।

5. आचार्य श्री अरिदमन के वचनों को सुनकर राजा विमलवाहन ने भी अपने पुत्र को राज्यभार सँभलाकर श्रमण धर्म स्वीकार कर लिया। मुनि बनने के पश्चात् विमलवाहन ने गुरु की सेवा में रहकर तपश्चरण के साथ-साथ आगमों का अध्ययन किया। सुदीर्घकाल तक पाँच-समिति, तीन गुप्ति की विशुद्ध साधना की और अनन्त काल से

संचित कर्मों की निर्जरा की। अरिहन्त भक्ति आदि 20 बोलों में से कतिपय बोलों की उत्कट आराधना की और तीर्थंकर नाम गोत्रकर्म का उपार्जन किया। अन्त में अनशनपूर्वक आयु पूर्णकर विजय नामक अनुत्तरविमान में तैंतीस सागर आयु वाले देव रूप में उत्पन्न हुए। उसके अगले जन्म में तीर्थंकर भगवान श्री अजितनाथ हुए।

6. सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन पाकर भी क्या हम उसका उत्तम सदुपयोग कर रहे हैं या इस दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ गवाँ रहे हैं और साथ ही साथ नरक या तिर्यंच गति में जाने की तैयारी कर रहे हैं? आत्म-निरीक्षण करने की महती आवश्यकता है। यह आत्म-निरीक्षण ही मुमुक्षा की ओर अग्रसर करता है। वे धन्य हैं, जो मुमुक्षु हैं तथा निरन्तर अपनी वैराग्य भावना को पुष्ट करने हेतु सजग एवं सन्नद्ध हैं। वे इसके लिए ज्ञानार्जन में समय व्यतीत करते हैं तथा संत-महापुरुषों की संगति करते हैं।

-प्रथम सेवक, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई (तमिलनाडु)

## जीवन-व्यवहार

## जीवन के सत्य

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म. सा.

### चंचल मन

मन चंचल है, इसकी जानकारी  
 किसे नहीं है, यह प्रश्न है,  
 परन्तु लक्ष्मी चंचल है, जवानी चंचल है,  
 आयुष्य चंचल है  
 ये सभी जानकारियाँ कितनों को है  
 यह भी प्रश्न है।  
 और यह जानकारी जिन्हें हैं,  
 उनमें से कितने लक्ष्मी, जवानी एवं  
 जीवन का सदुपयोग कर रहे हैं  
 यह भी प्रश्न है।

### परीक्षा

परीक्षा में 'फैल होने' के  
 खराब रिजल्ट को जलाने से  
 कुछ नहीं होता।  
 उसके लिए तो पढ़ाई में होशियार  
 बनना पड़ता है।  
 जीवन में आने वाले दुःखों के सामने  
 विद्रोह करने से जीवन  
 स्वस्थ नहीं बनता।  
 पापों को अलविदा करने से  
 जीवन स्वस्थ बनता है।

- 'इशारा' पुस्तक से साभार

## लगन की वेला (19)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

### महाप्रयाण

आचार्यदेव के शरीर पर वृद्धता पूरी तरह से अधिकार जमा चुकी थी। मस्तक पर कुछ ही केश शेष थे। वे रजत के समान बिल्कुल धवलोज्ज्वल हो गये थे। मुख में कुछ ही दन्त-दाढ़ शेष रहे थे। वे भी जीवन-व्यवहार में सहयोगी नहीं-बाधक बन रहे थे और विदा होने की तैयारी में थे। शरीर में दिन-दिन दुर्बलता व्याप्त होती जा रही थी। परन्तु वे महान् आत्मबली थे। उनकी किसी भी चर्चा में लेशमात्र भी शैथिल्य नहीं था। वृद्धत्व का भी एक अनूठा सौन्दर्य होता है-यह आचार्यश्री के दर्शन से ही ज्ञात होता था। वस्तुतः आचार्यश्री ने उसे चिर सहचर के रूप में स्वीकार किया। इसलिये उन्होंने उसे अपने सहयोगी के रूप में परिणत कर लिया।

शिवसुन्दर आचार्यदेव से अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसे वे परम ज्ञान-निधि लगे। अब आचार्य श्री के दर्शन का उसका नित्य क्रम हो गया। कभी-कभी वह उभय काल गुरुदेव के दर्शन करने आ जाता था। अरूण अभी स्थानक में विशेष नहीं आ पाता था। गुरुदेव के दर्शन भी वह कभी-कभी नहीं कर पाता था। अतः उसकी भेंट अरूण से प्रायः नहीं होती थी। गंगेश भी व्यस्त होता जा रहा था और वह भी। इसलिये उनका भी पारस्परिक मिलन कम हो गया। अतः उसे जो भी अल्प समय मिलता, उसे वह आचार्यदेव की सेवा में व्यतीत करने में ही कल्याण रूप समझता। अतः वह आचार्यदेव के अधिक समीप होता गया। उसके मन में कलायतन से उठा हुआ और चरित-गान से तीव्र बना हुआ प्रश्न घुमड़ता रहता है। उसे कलाचार्य के उत्तर से जरा भी संतोष नहीं हुआ। उस प्रश्न पर वह ज्यों-ज्यों चिन्तन करता है त्यों-त्यों उसे संसार के प्रति घृणा उत्पन्न होती जाती है। वह सोचता है- 'इस प्रश्न का समाधान कौन कर सकता है? किससे उसका सही उत्तर मिल सकता है? कोई प्रतिध्वनि उठती, अन्तर में- 'गुरुदेव से!' उसे विचार होता- 'गुरुदेव से? वे वृद्ध हैं-पूजनीय पुरुष हैं, उनके समक्ष यह प्रश्न कैसे रखूँ?..... उसे स्वयं आयु के अनुसार अपने भीतर इस विकार की वृद्धि का बोध हो रहा है, फिर भी उसकी गुह्यतम अन्तश्चेतना यह स्वीकार नहीं कर पा रही है कि 'यह भाव स्वाभाविक है, शाश्वत है, शाश्वत प्रेमतत्त्व है, महान् है और परम सुख है ? अतः पोषण करने योग्य है?' उसका विवेक कहता है कि यह सारी बातें उन्हीं की हैं, जिनका निर्विकारता से वैर है और ये अतिरंजनाएँ हैं।

वह एक मुहूर्त रात्रि बीतने पर गुरुदेव के दर्शन के लिये उपाश्रय पहुँचा। प्रतिक्रमण हो

चुका था। कई जन चले गये थे, कुछ जा रहे थे और एक-दो वृद्ध आचार्यदेव के सान्निध्य में बैठे थे। वे मुनिजन से आज्ञा प्राप्त कर के अपने-अपने स्वाध्याय में लीन हो गये। एक वृद्ध पूछ रहा था- “गुरुदेव! हमारा कल्याण कैसे हो? बहुत गयी, थोड़ी रही। यह पिछला जीवन सुधर जाय, बस यही कामना है।” गुरुदेव ने उनकी दिनचर्या जानी। फिर फरमाया- “आपकी अंशतः आराधना चल रही है। अब नित्य चौदह नियम धारण करो। तीन मनोरथ का चिन्तन करो। संवर, स्वाध्याय, ध्यान आदि की जितनी वृद्धि कर सकते हो, उतनी अधिक वृद्धि करो। नित्य महामंत्र का स्मरण करो।”

वृद्ध ‘तहति’ कहकर सामायिक पारने लगे। वे भी जाने की तैयारी में थे। अब अकेला शिवसुन्दर रह गया। उसने पूछा- “गुरुदेव! संवर क्या है?” “पाप क्रिया का त्याग संवर है।”

“पाप क्रिया कैसी?” “हिंसा आदि अठारह पाप हैं। परन्तु हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह- ये प्रमुख रूप से पाँच क्रियाएँ हैं।”

“भन्ते! अब्रह्मचर्य पाप क्रिया है?” “हाँ, वत्स!”

“भन्ते। यह भाव और यह क्रिया प्रायः सभी जीवों में है। इसके बिना सृष्टि रह नहीं सकती। जीव इस भाव का अतिक्रमण कहाँ कर पाता है? अतः यह स्वाभाविक नहीं है क्या?”

“जीवों की उत्पत्ति में सर्वत्र अब्रह्मचर्य कारण रूप नहीं है। फिर भी अब्रह्मचर्य विकार है- स्वभाव नहीं। सृष्टि स्वयं जीव का विकार है। अतः यदि वह सृष्टि का कारण है तो वह भी विकार ही है। यह सभी जीवों में है, अतः विकार नहीं-यह समझना भ्रम है। अन्न मिट्टी में ही पैदा होता है और मिट्टी में ही वृद्धि पाता है, परन्तु उसमें मिट्टी का रहना मानकर उसे क्या सहन किया जा सकता है? नहीं। वैसे ही यह भी समझो। जो भाव जीव को बेभान कर देता है, मर्यादा का भंग करके नैतिकता का सत्यानाश कर देता है, शरीर को रोग का घर बना देता है, आकुलता उत्पन्न जीव को तड़पाता है और जिस भाव के वशीभूत होकर अपने पूज्यजनों की अवहेलना करता है वह भाव-वह क्रिया स्वाभाविक कैसे हो सकती है?”

“क्या चेतना को इस भाव से रहित बनाया जा सकता है?”

“वत्स! समस्त विकार पाप हैं। उन समस्त विकारों को चेतना से दूर करने की प्रक्रिया का नाम ही आत्म-साधना है।”

“यह कार्य कितने समय में हो सकता है।”

“एक मुहूर्त के भीतर भी हो सकता है और अनन्त काल में भी नहीं हो पाता है। जैसा जिसका पुरुषार्थ।

इन भावों को जानकर शिवसुन्दर के हृदय से बहुत भारी बोझ-सा उतर गया। उसने प्रसन्न होकर नमस्कार करते हुए आचार्यदेव से पूछा “भन्ते! ऐसा क्या मैं भी कर सकता हूँ?”

“जो इन बातों को समझे हैं, उन सभी को ऐसा करने का अधिकार है। वे करें या न करें-यह उनकी इच्छा।”

उसने आचार्यदेव के चरण-स्पर्श किये और प्रसन्न होता हुआ घर की ओर रवाना हो गया।

साधु स्वाध्याय से निवृत्त होकर, कुछ देर ध्यान में प्रवृत्त रहे, फिर कायोत्सर्ग में लीन हो गये। आकाश में तारे चमचमा रहे हैं। रात्रि ठण्डी होती जा रही है। मध्य रात्रि चल रही है। नगर सुनसान है। अपने-अपने घरों में जन प्रायः निद्रालीन हो चुके हैं। साधुओं ने भी ध्यानचर्या को पूर्ण करके, गुरुदेव को वंदन किया और साधना को ढील दी। निद्रा के बन्धन खुल गये। साधु तृण-शय्या में सिकुड़े हुए सोये थे। वे प्रगाढ़ निद्रा में लीन साधना से श्रमित इन्द्रियों और मन को, अगले दिन साधना में स्फूर्ति के लिये विराम दे रहे थे।

आचार्यप्रवर शय्या में बैठे हैं। वृद्ध शरीर थक गया, परन्तु साधना अविराम गति से चल रही है। उनका ध्यान पूर्ण हो चुका है। पर वे शयन नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने अपने आस-पास सोये हुए साधुओं पर दृष्टि डाली। अंधेरा है, पर बाहर से आते हुए धुंधले-से प्रकाश में आचार्यदेव बहुत कुछ देख रहे हैं। वे वत्सल हैं, पर साथ ही नित्य जाग्रत पहरी भी हैं। उन्हें अपनी युवावस्था के दिवस याद आ गये। तब उन्हें निद्रा-प्रमाद का परित्याग करने के लिये कितना प्रयत्न करना पड़ता था। वे बाल्यावस्था से ही दीक्षित हो चुके थे। उनमें बचपन से ही उत्कृष्ट वैराग्य था। उनके गुरुदेव की उन पर बहुत कृपा थी। वे गुरुदेव की कृपा से ही साधना के अन्तरमार्ग में आगे बढ़े। उन्होंने आभ्यन्तर परिग्रह रूप आत्मिक ग्रन्थियों को समझा। उन ग्रन्थियों के पूर्व रूप, उनके स्वरूप, उनके कार्य, प्रभाव और फल को भलीभाँति जान लिया। उनके छेदन के अभ्यास का अनुभव किया। तभी तो वे शतशः बाल, युवा, प्रौढ़ और वृद्ध साधकों की बागडोर सम्हाले हुए हैं। वे साधकों की श्रद्धा को पुष्ट करते हैं। निराश साधकों में उत्साह भरते हैं। साधना की पगडंडियों में भूले हुआ को सन्मार्ग पर लगाते हैं। यह जीवन साधना के लिये ही है यह समझाकर, साधकों को विचलित होने से बचाते हैं और वात्सल्य भाव से भूलों को सुधारकर उन्हें प्रायश्चित्त से विशुद्ध बनाकर, साधना के मार्ग में स्थित रखते हैं। इस प्रकार आचार्यदेव के दृष्टिपथ में रहते हुए, उनके मार्ग-दर्शन में अनेक साधकों ने अपना बहुमुखी विकास किया है। सचमुच ही निर्ग्रन्थ-प्रवचन के आकार हैं- आचार्यप्रवर।

कायाबल प्रतिक्षण क्षीण होता जा रहा है, परन्तु आत्मबल निरन्तर वृद्धि पा रहा है। जब आचार्यप्रवर नहीं सो पाये तब उन्हें लगा कि मन अभी ध्यान में निरत होना नहीं चाहता। अतः वे पुनः कायोत्सर्ग-मुद्रा में स्थित होकर ध्यान में तल्लीन हो जाते हैं। एकदम स्थिर- एकदम निःस्पन्द। इधर चेतना के निस्तरंग आनंद सागर का आविर्भाव होता है। उन्हें अनुभव हुआ- शरीर उस आनंद-सागर में घुल रहा है। अब कुछ भी शेष नहीं रहा। बस एक अनंत असीम निर्विकार चेतना का निस्तरंग अमृत सागर ही सर्वत्र व्याप्त है। इसी अनुभूति में शरीर की बंधन- मुद्रा ढीली हो गयी। चेतना का शरीर पर से नियन्त्रण छूट गया। कुछ ही क्षण में श्रमित-सा श्लथ शरीर शय्या में लुढ़क गया। आचार्यदेव का शरीर कुछ समय तक उसी अवस्था में स्थित रहा। फिर कुछ विशेष शीतलता होने पर शरीर में चेतना जागृत होती है। आचार्यदेव सजग होते हैं और तत्काल उठ बैठते हैं। वे इस घटना से कुछ विचार में पड़ जाते हैं। वे चिन्तन कर रहे हैं- कभी नहीं और आज ऐसा क्यों हुआ? देह लुढ़क क्यों गया? क्या यह घटना भविष्य की किसी बात का सूचक है? ऊँह! वृथा चिन्ता में क्या सार?' आचार्यदेव ने विचार जाल से अपने मन को मुक्त कर लिया। फिर वे शय्या से नीचे उतरे और शरीर का गुच्छग से प्रमार्जन किया। फिर शय्या का प्रमार्जन किया और व्यवस्थित रूप से शयन किया। कुछ ही क्षणों में निद्रा लीन हो गये।

रात्रि का चतुर्थ प्रहर प्रारम्भ हो गया। आचार्यप्रवर की अर्धजाग्रत अवस्था चल रही है। उन्हें आभास होता है कि प्रकाश का सागर लहरा रहा है। उस प्रकाश-पुञ्ज में एक दिव्य पुरुष प्रकट होता है। उन्होंने उस दिव्य पुरुष को एकटक देखा। वह दिव्याकृति बोली- 'तुम मुझे यों नहीं पहचान सकोगे।' क्षणभर में ही उन्हें अपने गुरुदेव की प्रतिच्छाया दिखाई देने लगी। गम्भीर ध्वनि हुई- 'प्रमाद छोड़ो! सावधान हो जाओ। भार उतारो। मैल का विसर्जन करो और स्वच्छ-स्वच्छ हो जाओ।' अंतिम वाक्य के साथ ही प्रतिछाया अदृश्य हो गयी, परन्तु प्रकाश-पुँज ज्यों का त्यों अवस्थित है। आचार्यदेव की निद्रा खुल गयी। वे महामंत्र का स्मरण करते शय्या में बैठ गये। कुछ देर तक महामंत्र का स्मरण चलता रहा। फिर उनका मन चिन्तन में प्रवृत्त हुआ- 'लगता है, मुझे अन्तिम आराधना के लिये संकेत हो गया है। गुरुदेव की दिव्य आत्मा ने मुझे सजग किया है। 'भार उतारो' - का आशय क्या है? अच्छा मुझे आचार्य पद के उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाना चाहिये 'मैल का विसर्जन करो-स्वच्छ-स्वच्छ हो जाओ' - का आशय है- 'मुझे संलेखना के द्वारा अपने अन्तर्मल का प्रक्षालन करना चाहिये और आराधना में लगे दोषों का प्रायश्चित्त।' फिर चिन्तन से निर्णय हुआ कि अब मेरा कुछ मास का ही आयुष्य शेष है।' उन्होंने अपने कर्तव्य का निर्णय कर लिया और फिर वे अपनी नित्य-साधना में लीन हो गये।

(क्रमशः)

## वात्सल्यमूर्ति आचार्यश्री हीरा

श्री त्रिलोकचन्द जैन

वात्सल्य की धारा, नयनों के द्वारा।

अविरल बरसा रहे हो, हम पामरों को सरसा रहे हो।

सब जीवों में अपनापन समा गया रोम-रोम में,

तभी तो वात्सल्य बरसा रहे हो व्योम में॥

संघ का संचालन, शिष्यों पर अनुशासन।

भक्तों का मार्गदर्शन, साथ ही संयम का दृढ़ पालन।

इनके बीच वात्सल्य ने, समग्र स्थान है पाया।

मैं नतमस्तक हूँ गुरुवर, इतना प्रेम है समाया।

इस जग में प्रसिद्ध है माता, बालक से उसका होता अद्भुत नाता।

पर क्या वह वास्तव में वात्सल्य है ?

या ममता, मोह, आसक्ति के रूप में शल्य है।

मेरा मन था शंकित, कैसे हो आप वात्सल्यपूरित ?

जब निहारा गहराई से आपका जीवन,

समाधान से तोष प्राप्त हुआ तत्क्षण।

अन्तर में असीम अनंत आनंद,

कषाय दावानल जिनका हो चुका है मंद,

कामना रूपी अरिओं का हुआ निकंद,

सर्व आत्म-प्रदेश में कल-कल बह रहा नंद॥

महाव्रतों की अखण्डता से बने हो निःशल्य।

तभी तो गुरुवर नयनों से झर रहा है वात्सल्य॥

उपकार दृष्टि से नित्य कर रहे हो, प्रेम का पसारा,

बरसा रहे हो वात्सल्य की धारा, नयनों के द्वारा ॥

## जैन परम्परा में नारी सशक्तीकरण

डॉ. अंजना बैराठी

वर्तमान युग नारी-सशक्तीकरण का युग है। नारी का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करने के साथ उसके अधिकारों को भी समृद्ध किया जा रहा है, किन्तु जैन इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि जैन परम्परा ने स्त्री को शिक्षा, समाज एवं धर्मक्षेत्र में पर्याप्त महत्त्व दिया है। श्वेताम्बर जैन परम्परा में स्त्री को उसी भव में मोक्ष की अधिकारिणी स्वीकार किया गया है।

1. वर्तमान में 'बालिका बचाओ- बालिका पढ़ाओ' योजना चल रही है। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने अपनी पुत्रियों ब्राह्मी और सुन्दरी को अंक एवं अक्षर ज्ञान देकर इस योजना का शुभारम्भ लाखों वर्षों पूर्व कर दिया था।
2. कई अधिनियम व संशोधनों के माध्यम से सरकार ने दास प्रथा को समाप्त किया है। भगवान महावीर ने अपने उपदेश से जहाँ प्राणिमात्र को स्वोत्थान की प्रेरणा दी, वहीं मनुष्य समाज में नारियों के प्रति पुरुषों द्वारा किये जा रहे अमानवीय व्यवहार को बदलने के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप दास प्रथा और महिलाओं पर अत्याचार बंद हुए। चंदना की बंधन-मुक्ति इसका प्रमाण है। चंदना से भगवान महावीर का आहार-दान ग्रहण करना दासप्रथा को समाप्त करने का संकेत देता है।
3. जैन संहिता में स्त्रियों के सशक्तीकरण हेतु एवं उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु अनेक कानून एवं संविधियाँ बनायी गयीं। सम्पत्ति विषयक कुछ संविधियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं-
  1. इकलौती बेटी एवं उसके पुत्र का पिता की संपत्ति पर पूरा हक होता है और कोई व्यक्ति उस पर अधिग्रहण नहीं कर सकता।-भद्रबाहु संहिता, 24
  2. माता की संपत्ति पर बेटी का ही हक है, चाहे वह विवाहित हो या अविवाहिता।-भद्रबाहु संहिता, 26
  3. पुत्र के पुत्र एवं बेटी के पुत्र में कोई अन्तर नहीं है।-भद्रबाहु संहिता, 28
  4. स्त्री धन का बंटवारा नहीं हो सकता।-भद्रबाहु संहिता, 101

वर्तमान युग में नारियों के उत्थान के लिए भरपूर प्रयास किये जा रहे हैं, परन्तु नारियों में जागरूकता के अभाव के कारण उनके उत्थान में बाधाएँ आ रही हैं, किन्तु जैन धर्म में नारियों को हर प्रकार से सुविधा के साथ-साथ स्वतंत्रता भी प्राप्त है, चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या आध्यात्मिक क्षेत्र में अथवा पारिवारिक क्षेत्र में। नारी स्वतंत्र व सशक्त है, अतः नारी को अपनी शक्ति को पहचान कर शक्ति का उपयोग करना चाहिए।

## एकत्व भावना

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्य रत्न'

नीति में कहा है-

‘संसार-दीर्घरोगस्य सुविचारो महौषधम्।  
कोऽहं कस्य च संसारो विवेकेन विलीयते॥’

अर्थात् संसार (जन्म और मृत्यु का चक्र) एक दीर्घ रोग है-उसकी औषध सुविचार है। मैं क्या हूँ, यह संसार क्या है, इसको विवेक से समझने पर यह दीर्घ रोग में विलीन हो जाता है। सुविचार है। आगे कहा है-

‘जैसा सांचा दीजिये, वैसा ही आकार।  
मानव वैसा ही बने, जैसा रहे विचार॥’

बारह भावनाओं में इन्ही विषयों पर विचार किया जाता है। चौथी भावना है- एकत्व भावना। कविवर भूधर ने लिखा है-

‘आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।  
यों कबहुँ या जीव को, साथी सगो न कोय॥’

दूसरा कोई दुःख बाँट नहीं सकता, मनुष्य को सुख-दुःख अकेले ही भुगतना पड़ता है। इसको ठीक प्रकार से समझने के लिये पहले हमें आत्मा के स्वरूप को समझना चाहिये। आत्मा आनंद का अखण्ड भण्डार है। डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ने लिखा है:-

‘आनंद का रसकंद सागर शांति का निज आतमा।  
सब द्रव्य जड़ पर ज्ञान का घनपिण्ड केवल आतमा॥  
जीवन-मरण, सुख-दुःख सभी भोगे अकेला आतमा।  
शिव-स्वर्ग नरक निगोद में जावे अकेला आतमा॥’

एकत्व भावना का संदेश है कि हम परवस्तु को अपना नहीं समझें। हमें दो प्रकार के संयोग मिलते हैं:-

बाह्य- घर, परिवार, धन दौलत, स्वजन आदि

आभ्यन्तर- कषाय, ममत्व, कर्म आदि

प्राणी सांसारिक सम्बन्धों में गहरा उलझकर आत्मा को भूल जाता है। लेकिन शरीर और आत्मा अलग-अलग हैं, इस भेद को समझ नहीं पाता। कवि श्रेष्ठ मंगतराय ने कहा है:-

‘जन्मे मरे अकेला चेतन, सुख-दुःख का भोगी।  
और किसी का क्या, इक दिन ये देह विदा होगी॥’

कमला चलत न पौंड, जाय मरघट तक परिवारा ।  
 अपने-अपने सुख को रोवे पिता पुत्र द्वारा ॥  
 ज्यों मेले में पंथी जन मिली, नेह धरै फिरते।  
 ज्यों तरुवर पै रेन बसेरा, पंछी आ करते।।  
 कोस कोई, दो कोस कोई, उड़ उड़ फिर थक हारे।  
 जाय अकेला 'हंस', संग में कोई न पर मारे।।'

सिकंदर महान के जीवन से हम इस बात को समझ सकते है:-

विश्व विजेता सिकंदर आंधी की तरह राज्यों को लूटता, अधीन करता बढ़ रहा था। लेकिन उसका शौक था संत फकीरों को बुलाकर चर्चा करना व उनके उपदेश सुनना। उसके खेमे के पास एक फक्कड़ संत ठहरे हुए थे। सिकंदर ने अपने सिपहसालार को उनको आदर सहित बुलाने का हुक्म दिया। उनके सिपाही वहाँ पहुँचे तथा उनको कहा कि बादशाह आपको बुला रहे हैं। फकीर ने उत्तर दिया- 'हमें किसी बादशाह के पास नहीं जाना है।' हाकिम- 'शायद आपने सिकंदर का नाम नहीं सुना।' संत- 'भाई, सिकंदर को भला कौन नहीं जानता। वह मेरे गुलामों का गुलाम है। जाकर कहना अपने मालिकों के मालिक से अदब से बात करना सीखे।' हाकिम हैरान हो गया। उसने सिकंदर को सारी बात कही।

सिकंदर ने कहा- 'कोई बात नहीं। हम उनकी कदमबोसी के लिये खुद जायेंगे। सिकंदर वहाँ पहुँचा। उसने कहा- 'हुजूर! आपने मुझे आपके गुलामों का गुलाम कहा।'

संत ने बैठने का इशारा किया।

संत ने कहा- 'आप सारी दुनियाँ को जीतने की हसरत लिये निकले हो। राह में जिन राजा-महाराजाओं ने आपका मुकाबला किया, उन पर आपको गुस्सा जरूर आया होगा।'

सिकंदर- 'उन पर तो गुस्सा जरूरी है।'

संत- 'नये-नये मुल्क जीतने पर विजय का गरूर तो जरूर आया होगा।'

सिकंदर- 'मालकियत आने पर गरूर तो जरूर आता है, पर आप क्यों पूछ रहे हैं?'

संत- 'इतनी बड़ी फौज को मरने-मारने के लिये तैयार करने के लिये झूठे वादे तो जरूर किये होंगे।'

सिकंदर- 'यह तो हमारी मजबूरी है।'

संत- तुम्हारा परिचय जाना। तुम्हें लालच, गुस्सा, घमंड, दगाबाजी आती है। पहले हम भी लालच, क्रोध, घमंड, माया के गुलाम बन कर रहते थे। अब वे हमारे गुलाम हो गये हैं।'

सिकंदर का सिर झुक गया। 'या खुदा! यह है इस मुल्क की असली तस्वीर।'

एकत्व भावना के चिंतन का उद्देश्य परद्रव्यों के प्रति आसक्ति भाव को दूर करना है। इससे जीव आत्म-विजेता होकर सारे संसार को जीत लेता है। भगवान् महावीर ने कहा है:-

‘एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।  
दसहा उ जिणित्ताणं, सख्व सत्तू जिणामहं॥’

-उत्तराध्ययन सूत्र 23.36

अर्थात् मैंने एक (अपनी आत्मा) को जीत लेने से पाँच को जीत लिया। पाँच (मन एवं चार कषाय) को जीत लेने से दस को जीत लिया और दसों को जीत लेने से मैंने सभी शत्रुओं को जीत लिया है।

एकत्व भावना से लाभ:- 1. क्रोध आदि कषायों पर नियन्त्रण रहता है। 2. संसार के कार्य करता हुआ भी व्यक्ति जल में कमल की तरह निर्लेप रहता है। 3. साधना के मार्ग पर निस्संग भाव से बढ़ता है। 4. साधक समभाव में रहता है- सदा प्रसन्न एवं प्रमुदित।

-चेयरमेन, करुणा इण्टरनेशनल, T.T.K. Road, Alwarpet, Chennai (T.N.)

## ‘क्या कहते हैं ये उपकरण’

महासती श्री रुचिता जी म.सा.

मुँहपत्ति-हटाए कर्मों की आपत्ति  
रजोहरण-करता है कर्मों का हरण  
पात्रा-कराए आपको मोक्ष की यात्रा  
चौलपट्टा-हे जीव 84 का बन्धन हटा  
आसन-सदा चमकाएँ जिनशासन  
कम्बल-दिलाए संयम में संबल  
पूजनी-आप हैं रत्नसंघ शिरोमणि  
माला-खोले मुक्ति का ताला  
पुस्तक- सदा ऊपर रखे आपका मस्तक  
ऐनक-दुनिया कहती अद्भुत है आपका लक  
बन्धना- साधना देखकर जग करता है आपको वन्दना  
संस्तारक- बार-बार कहते हैं रजत वर्ष हो मुबारक  
पादप्रोछन- जिनशासन को आप कर रहे हैं रोशन  
नेसत्थिया- आप हैं रत्नवंश के मुखिया  
थैला- सब कहते आप हैं हस्ती का चेला  
खेतिया- संयम में रुचि जगी, हस्ती का शरणा लिया  
चादर- दुनिया करती आराध्य देव का आदर  
झोली- बधाई हो अंतर की आत्मा वालों

## रोगोपचार में अहिंसा का पालन कैसे?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

### उपचार की आवश्यकता

स्वस्थ जीवन मानव की प्रमुख आवश्यकता है। जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ, सभी स्वास्थ्य वैज्ञानिक, आध्यात्मिक योगी एवं चिकित्सक इस प्रयास हेतु सतत प्रयत्नशील हैं कि मानव-शरीर को रोग मुक्त कैसे रखा जा सके। अतः उपचार से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि अच्छा स्वास्थ्य कैसा होता है? रोग कब, क्यों और कैसे होता है? सही निदान, अच्छी चिकित्सा के मापदण्ड क्या होते हैं?

### विकार एवं विभाव अवस्था रोग की सूचक है

स्वास्थ्य का अर्थ होता है- विकारमुक्त अवस्था। रोग का तात्पर्य है- विकारयुक्त अवस्था यानी जितने ज्यादा विकार, उतने ज्यादा रोग। जितने विकार कम, उतना ही स्वास्थ्य अच्छा। विकार का मतलब अनुपयोगी, अनावश्यक, व्यर्थ, विजातीय तत्त्व होते हैं। जब ये विकार शरीर में होते हैं तो शरीर रोगी बन जाता है, परन्तु जब ये विकार मन, भावों और आत्मा में होते हैं तो क्रमशः मन, भाव और आत्मा विकारी अथवा अस्वस्थ कहलाती है। स्वस्थ का मतलब होता है- स्व में स्थित हो जाना अर्थात् अपने मूल स्वरूप में आ जाना। जैसे अग्नि के सम्पर्क से पानी उबलने लगता है, परन्तु जैसे ही पानी को अग्नि से अलग करते हैं, धीरे-धीरे वह स्वतः ही ठंडा हो जाता है। शीतलता पानी का स्वभाव है, गर्मी नहीं। पानी को वातावरण के अनुरूप रखने के लिए किसी बाह्य आलम्बन की आवश्यकता नहीं होती। उसी प्रकार शरीर में हड्डियों का स्वभाव कठोरता होता है, परन्तु किसी कारणवश कोई हड्डी नरम हो जाए, उसमें लचीलापन आ जाए तो रोग का कारण बन जाती है। मांसपेशियों का स्वभाव लचीलापन होता है, परन्तु उनमें किसी कारणवश कठोरता आ जाए, गांठ हो जाए अथवा विजातीय तत्त्वों के जमाव के कारण अथवा आवश्यक रसायनों के अभाव के कारण यदि शरीर के किसी भाग की मांसपेशियों में लचीलापन समाप्त हो जाये अथवा क्षमतानुसार न हों तो रोग का कारण बन जाती हैं। शरीर का तापक्रम 98.4 डिग्री फारैहनाइट रहना चाहिए, परन्तु किसी कारणवश कम या ज्यादा हो जाये तो शरीर में रोग के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। रक्त सारे शरीर में आवश्यकतानुसार ऊर्जा पहुँचाने का कार्य अबाध गति से करता है। अतः उसके संतुलित प्रवाह हेतु आवश्यक गर्मी एवं निश्चित दबाव आवश्यक

होता है, परन्तु यदि हमारी अप्राकृतिक जीवन शैली से रक्त का बराबर निर्माण न हो अथवा दबाव आवश्यकता से कम या ज्यादा हो जाए तो सारे शरीर में प्राण ऊर्जा का वितरण प्रभावित हो जाता है। रक्त नलिकाओं के फैलने अथवा सिकुड़ने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं अर्थात् अपना स्वरूप बदल देती है। अतः रोग की स्थिति पैदा हो जाती है।

शरीर का गुण है कि जो अंग और उपांग शरीर के जिस स्थान पर स्थित हैं उनको वहीं स्थित रखना तथा हलन-चलन के बावजूद आगे पीछे न होने देना, शरीर में विकार उत्पन्न होने पर उसको दूर करना और पुनः स्वस्थ करना। अनावश्यक, अनुपयोगी, विजातीय तत्त्वों का विसर्जन करना। यदि कोई हड्डी टूट जाए तो उसे पुनः जोड़ना। चोट लग जाने से यदि घाव हो जाए तो उसको भरना तथा पुनः त्वचा पर आवरण लगाना। रक्त बहने अथवा रक्तदान आदि से शरीर में जो रक्त की कमी हो गई हो तो उसकी पूर्ति करना। उपर्युक्त एवं ऐसे अनेक कार्य शरीर के गुण एवं स्वभाव हैं, परन्तु यदि किसी कारणवश शरीर इन कार्यों को बराबर न करे तो यह उसकी विभाव दशा कहलाती है अर्थात् रोगों का प्रतीक होती है।

शरीर विभिन्न तंत्रों का समूह है। जैसे ज्ञान तंत्र, नाड़ी तंत्र, श्वसन, अस्थि, मज्जा, लासिका, प्रजनन, विसर्जन आदि। शरीर में पीयूष, पीनियल, थायराइड और पैराथायराइड, एड्रीनल, थाइमस, प्रजनन आदि अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ जब असक्रिय अथवा अतिसक्रिय हो जाती हैं तथा उनके कार्यों को संचालित और नियंत्रित करने के लिये बाह्य सहयोग या आलम्बन लेना पड़े तो यह शरीर की विभाव दशा होती है। अतः ये भी रोग के सूचक होते हैं।

### अच्छे स्वास्थ्य हेतु शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता आवश्यक

बाल्यकाल में लगाये जाने वाले रोग निरोधक इंजेक्शनों, गर्भावस्था एवं उसके बाद में ली जाने वाली आधुनिक दवाइयों से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होने लगती है। जिसके परिणामस्वरूप शरीर, मन और आत्मा ताल से ताल मिलाकर आचरण नहीं करते। शरीर की सभी क्रियाएँ, अंग, उपांग एवं अवयव अपना-अपना कार्य स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं कर पाते। फलतः शरीर के अवांछित, विजातीय, अनुपयोगी विकारों का बराबर विसर्जन नहीं होता। उनमें अवरोध उत्पन्न होने से पीड़ा, दर्द, कमजोरी, चैतन्य-शून्यता, तनाव, बेचैनी आदि की जो स्थिति शरीर में उत्पन्न होती है, वही रोग कहलाती है।

### रोग के प्रति जन-साधारण की सोच

आज हम आत्मिक एवं भावनात्मक विकार, जो रोग के मूल कारण होते हैं, उन्हें रोग नहीं मानते, अपितु उपचार करते समय उनको बढ़ाते हुए तनिक भी संकोच नहीं करते।

आकस्मिक दुर्घटनाओं अथवा जन्मजात रोगों को छोड़ कर अधिकांश शारीरिक रोगों के लिये भी प्रायः रोगी ही जिम्मेदार होते हैं। जन्मजात अथवा पैतृक रोगों में भी गर्भकाल में माता-पिता द्वारा रखी गई असावधानी, असंयम, उपेक्षावृत्ति ही मूल कारण होते हैं। साधारण से बीज से भी फसल प्राप्त करने के लिये किसान कितनी सावधानी, देख-रेख और पुरुषार्थ करता है तब मनुष्य जैसे व्यक्तित्व के निर्माण के प्रति माता-पिता, असजग, बेखबर, लापरवाह रहें तो वे अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार नहीं कहे जा सकते और उसका परिणाम होता है असंस्कारित, अशक्त, रोगग्रस्त, दुर्बल व विकलांग संतान।

**शरीर में स्वयं को स्वस्थ रखने की क्षमता होती है**

अधिकांश पशु अपना उपचार स्वतः प्रेरणा से स्वयं ही करते हैं। मनुष्य के शरीर में जो दुनियां की सर्वश्रेष्ठ स्वचलित, स्वनियंत्रित मशीन होती है, उसमें रोगों से बचने की सुरक्षात्मक व्यवस्था न हो तथा रोग होने की अवस्था में पुनः स्वस्थ बनाने की व्यवस्था न हो, यह कैसे संभव हो सकता है! स्वास्थ्य के लिए हमारे शरीर में समाधान है, प्रकृति में समाधान है, आसपास के वातावरण में समाधान है। समाधान भरे पड़े हैं, परन्तु उस व्यक्ति के लिए कोई समाधान नहीं है, जिसमें अज्ञान, अविवेक एवं प्रमाद भरा पड़ा है और सम्यक् चिन्तन का अभाव है। अच्छी से अच्छी दवा और चिकित्सक तो शरीर को अपना कार्य स्वयं करने में सहयोग मात्र देते हैं। पीड़ा में राहत मिलना मात्र रोग का सम्पूर्ण उपचार नहीं होता। जिसका शरीर सहयोग करेगा, वही स्वस्थ होगा।

**अच्छी चिकित्सा के मापदण्ड**

अच्छा उपचार शरीर, मन एवं आत्मा के विकारों को दूर करने की सहज, सरल, दुष्प्रभावों से रहित, बिना किसी को कष्ट पहुँचाए सम्यक् पुरुषार्थ की विधि है। जो जितना महत्त्वपूर्ण होता है, उसके अनुरूप उपचार में उसको प्राथमिकता दी जाती है। रोग के मूल कारणों को दूर कर, शारीरिक क्षमताओं का अधिकतम उपयोग करना ही उसका ध्येय होता है। उपर्युक्त मापदण्डों की जितनी-जितनी पालना होती है वह उपचार उतना ही श्रेष्ठ होता है।

**अध्यात्म से शून्य स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण**

जिस चिकित्सा में शारीरिक स्वास्थ्य ही प्रमुख हो, मन, भावों अथवा आत्मा के विकार जो अधिक खतरनाक, हानिकारक होते हैं, गौण अथवा उपेक्षित होते हों या बढ़ते हों, ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को ही वैज्ञानिक एवं प्रभावशाली समझने वाले विज्ञान की बातें भले ही करते हों, विज्ञान के मूल सिद्धान्तों से अपरिचित लगते हैं। वे विज्ञान शब्द का अवमूल्यन करते हैं। सनातन सत्य पर आधारित प्राकृतिक सिद्धान्तों को नकारते हैं।

## चिकित्सा में हिंसा को प्रोत्साहन अनुचित

आत्मा को अशुभकर्मों से भारी करने एवं विकारी बनाने में द्रव्य एवं भाव प्राणों की विराधना की अहं भूमिका होती है। हमें तो पिन अथवा सूई की चुभन भी सहन न हो, परन्तु अज्ञानवश पौष्टिकता एवं स्वाद, शिक्षा, दवाओं के निर्माण एवं परीक्षण के लिए अन्य जीवों के साथ क्रूरता अथवा उनका वध करना या उन्हें परेशान और पीड़ित करना, स्वयं के लिए दुःखों, कष्टों, रोगों को आमंत्रण देना है। उन मूक बेजुबान, असहाय जीवों की बददुआएं, हृदय से निकली चीत्कारें उनको पीड़ित करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वालों को कभी शान्त, सुखी एवं स्वस्थ नहीं रहने देती। भले ही पूर्व पुण्य के प्रभाव से स्वार्थी मानव को उसका तत्काल दुष्फल न भी मिले। प्रकृति का दण्ड देने का विधान पूर्ण-न्याय पर आधारित होता है। वहाँ देर भले ही हो सकती है, अंधेर नहीं हो सकता।

जब तक चिकित्सकों द्वारा मन एवं आत्मबल को उपचार में गौण रखा जायेगा तब तक शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए आत्मा को अशुभ कर्मों से विकारी बनाते परहेज नहीं हो सकेगी, अतः स्थायी रूप से रोग से मुक्ति नहीं मिल सकेगी और तात्कालिक राहत के नाम पर चाहे जितने भी डॉक्टर तैयार हो जावें एवं अस्पतालों का निर्माण कर दिया जाए, रोग एवं रोगियों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जाएगी। यही वर्तमान में घटित हो रहा है। जो दवाइयाँ भूतकाल में अति प्रभावी समझी जा रही थीं, आज निरर्थक, हानिकारक सिद्ध हो चुकी हैं। उनका निषेध हो रहा है एवं यही स्थिति उन दवाइयों की भी होने वाली है, जो आज प्रभावशाली बतलाई जा रही हैं। जैसे-जैसे उनके दुष्प्रभावों की जनसाधारण को जानकारी होगी। इसी कारण कुछ चिकित्सक वर्तमान चिकित्सा व्यवस्था का विरोध कर रहे हैं। वे चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे तथाकथित विकास की भर्त्सना कर रहे हैं। अमेरिका के डॉ.पेव एरोला ने अपनी पुस्तक “हाउ टू गेट वैल” में यहाँ तक लिखा है कि- “जब भविष्य में चिकित्सा का इतिहास लिखा जाएगा, बीसवीं शताब्दी उपचार पद्धतियों के संदर्भ में अन्धकार युग के रूप में मानी जाएगी।”

## सेवा हेतु साधन एवं सामग्री की शुद्धता आवश्यक

“दया धर्म का मूल है”। “अहिंसा परमो धर्मः” हमारा नारा है। “अभयदान को सर्वश्रेष्ठ दान माना गया है”। हमारे चिन्तन एवं भावनाओं में सदैव करुणा, मैत्री के स्वर प्रस्फुटित होते रहे हैं- “सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबराये, वैर, पाप, अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावें” हमारी भावना का प्रतीक है। “मिती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ” अर्थात् प्राणिमात्र के साथ शत्रुता नहीं रखने का, प्रतिदिन दोनों समय साधक चिन्तन करता है। “सुख दियां-सुख होत है, दुःख दियां दुःख होत,”

लोकोक्ति ही जीवन का परम सत्य है। जीव भले ही बेजुबान हो बेजान नहीं होते। किसी जीव पर अत्याचार, क्रूरता करना हिंसा है। यदि किसी का आशीर्वाद, मंगल कामना हमारा भला कर सकती है तो जिन पशुओं के साथ क्रूरता की जाती है, उनकी बददुआएँ हिंसा में प्रत्यक्ष/परोक्ष सहयोग देने वालों को अवश्य परेशान करेंगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए। साधक के लिए अहिंसा का पालन प्राण वायु के समान होता है, जबकि सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान आदि साधनाएँ भोजन, पानी, जीवन की अन्य आवश्यकताओं के समान हो सकती हैं। हिंसा करने, करवाने एवं प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से अनुमोदन करने वालों के कर्म बन्धन होता है। दवा लेने वालों के लिये दवाएँ बनायी जाती हैं। अतः हिंसा द्वारा निर्मित दवा लेने वाले अप्रत्यक्ष हिंसा के दोष से नहीं बच सकते। जहाँ-जहाँ इसका विकल्प हो, अहिंसक साधक को यथासंभव उसको समझकर आचरण में लेने की प्राथमिकता देनी चाहिये। परन्तु अहिंसक साधक को हिंसक उपचार की प्रेरणा अथवा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अनुमोदना से बचने का विवेक तो अवश्य रखना चाहिए।

**सेवा हेतु हिंसा की प्रत्यक्ष-परोक्ष अनुमोदना पर सम्यक् चिन्तन आवश्यक**

आज उपचार के अन्य प्रभावशाली विकल्पों के होते हुए भी उनकी उपेक्षा कर अहिंसक समाज अज्ञानवश ऐसे हिंसक चिकित्सालयों की धर्म एवं सेवा के नाम पर प्रेरणा देकर अपने मूल सिद्धान्तों से दूर जा रहा है। उनकी कथनी करनी में अन्तर बढ़ता जा रहा है। इसी कारण व्यवहार में सूक्ष्म अहिंसा का पालन करने वाले चन्द साधक दवाइयों लेते समय भक्ष्य-अभक्ष्य की गवेषणा करना भूल जाते हैं। घोर परीषह सहन करने वाले एवं भेद विज्ञान का मर्म समझने वाले साधारण से रोगों में अपना धैर्य एवं सहनशीलता खोते हुए भी खेद का अनुभव नहीं करते।

एलेोपेथिक चिकित्सा पद्धति में हिंसा का बाहुल्य है एवं अज्ञानता के कारण, सेवा के नाम पर हम इसमें होने वाली हिंसा को बुरा न मान कर्म-निर्जरा मान रहे हैं। यदि हमारा ऐसा ही चिन्तन एवं तर्क रहा तो भविष्य में मांसाहारी भोजन करवाना भी सेवा की श्रेणी में माना जावे तो आश्चर्य नहीं! हिंसा व्यक्तिगत मजबूरी हो सकती है, परन्तु सेवा के नाम पर हिंसा को प्रोत्साहन अहिंसा प्रेमियों के लिए उचित नहीं कहा जा सकता।

**प्रभावशाली अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों पर चिन्तन आवश्यक**

रोगी का उपचार कराना हमारा कर्तव्य है। आज विकल्प के रूप में सारे विश्व में निर्दोष प्रभावशाली, स्वावलम्बी अहिंसक चिकित्सा पद्धतियों का प्रचलन स्वास्थ्य मंत्रालय की पूर्ण उपेक्षा होते हुए भी बढ़ रहा है। कई पद्धतियाँ पूर्ण रूप से वैज्ञानिक हैं, सहज, सरल, सस्ती, स्वावलम्बी एवं दुष्प्रभावों से रहित होने के बावजूद अत्यधिक प्रभावशाली भी हैं।

इसी कारण सभी चिकित्सा पद्धतियों से परेशान हुए रोगी इन पद्धतियों की तरफ आकर्षित हो पुनः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। एक्यूप्रेसर चिकित्सा पद्धति निदान की दृष्टि से आज सर्वश्रेष्ठ पद्धतियों में से एक है, जिनमें रोग का प्रारम्भिक अवस्था में ही पता लगाया जा सकता है। आज अन्तःस्नायी ग्रन्थियों का जितना सरल उपचार इस पद्धति में है, शायद अन्य में नहीं। यह पद्धति शरीर के साथ-साथ हमारे मानसिक एवं चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण सहयोगी है, परिपूर्ण है एवं सर्वत्र, सदैव सभी के लिये उपलब्ध है। चीनी पंच तत्त्व के सिद्धान्तों पर आधारित सुजोक बियोल मेरेडियन में ऊर्जा संतुलन की सरल विधि द्वारा असाध्य एवं संक्रामक रोगों का प्रभावशाली अहिंसक उपचार संभव हो सका है। परिणामस्वरूप पचास प्रतिशत से अधिक शल्य चिकित्सा को टाला जा सकता है।

शरीर की निष्क्रिय कोशिकाओं को स्फटिकों की तरंगों द्वारा तुरन्त सक्रिय करने वाले एनर्जी स्टिक अथवा एनर्जी कार्ड जैसे उपकरण जो बाजार में उपलब्ध हैं, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा रोगों के लिए सुरक्षा कवच का कार्य कर रहे हैं, जिससे पूर्णतः स्वावलम्बी अहिंसक उपचार बहुत ही सरल, सहज, प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित, स्थायी सिद्ध हो रहा है। शरीर के शुद्धीकरण की विभिन्न सरल प्रक्रियाओं द्वारा लीवर, गुर्दे जैसे प्रमुख अंगों में जमे विजातीय तत्त्वों की सफाई बिना किसी चिकित्सक के सहयोग के तथा शरीर विज्ञान की विस्तृत जानकारी न रखने वाला व्यक्ति भी अपने घर में चन्द घण्टों में स्वयं कर सकता है एवं हृदयघात जैसे रोगों को टाला जा सकता है।

चुम्बकीय चिकित्सा, रक्त संबंधी एवं जोड़ों संबंधी रोगों में अत्यधिक प्रभावशाली है, जो पूर्ण रूप से पीड़ा रहित है। शरीर को शक्ति प्रदान करने एवं शारीरिक क्षमताओं को बढ़ाने में बहुत सहायक है। इसी प्रकार स्वर, योग, शिवाम्बु, हास्य, नाभि, मेथी, शरीर का संतुलन, कर्पिंग, चैतन्य, आहार, रंग, सूर्य किरण, रत्न, पिरामिड, मुद्रा, दूरस्थ ध्यान, सुजोक, क्रिस्टल आदि चिकित्सा पद्धतियों के समन्वित प्रयोगों से जो प्रभावशाली परिणाम प्राप्त हो रहे हैं, वे हमारी पूर्वग्रसित भ्रमित धारणाओं को चौंकाने वाले हैं तथा जनसाधारण उनकी ओर आकर्षित होता जा रहा है। स्वावलम्बी निर्दोष चिकित्सा पद्धतियों को प्रत्येक व्यक्ति चन्द दिनों में सरलता से सीख सकता है। उस हेतु न तो शरीर विज्ञान के ज्ञान की और न व्यावहारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता होती है।

### अहिंसक स्वयंसेवी संस्थाओं का दायित्व

सेवा के क्षेत्र में हिंसा द्वारा निर्मित दवाइयों पर आधारित अस्पताल खोलने एवं संचालन करने वाली अहिंसक संस्थाओं तथा निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, परामर्श एवं उपचार शिविर आयोजन करने वाली सामाजिक एवं स्वयंसेवी अहिंसक सिद्धान्तों पर

कार्यरत संस्थाओं से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे अपने पूर्वाग्रह को छोड़ स्वयं की मानसिकता को बदल अच्छी चिकित्सा एवं सही निदान के मापदण्डों के आधार पर निर्दोष स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियों की आधुनिक चिकित्सा से तुलना करें। उपचार से भविष्य में पड़ने वाले दुष्प्रभावों की उपेक्षा न करें। तुरन्त राहत को ही प्रभावशाली उपचार समझ सेवा के नाम पर हिंसा को प्रोत्साहन न दें। अहिंसक चिकित्सा पद्धतियों द्वारा संचालित आधुनिक चिकित्सालयों का निरीक्षण करें, उनमें कार्यरत राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिकित्सकों से विचार विमर्श कर “समग्र अहिंसात्मक उपचार-प्रशिक्षण शोध संस्थान” की योजना बनावें। जिसके अन्तर्गत सभी प्रभावशाली अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के साथ ध्यान, योग, स्वाध्याय की व्यवस्था हो। ताकि इनमें प्रतिवर्ष हजारों अहिंसक चिकित्सकों को तैयार कर देश के कोने-कोने में चिकित्सा, परामर्श एवं प्रशिक्षण केन्द्र खोले जा सकें। स्वयंसेवी संस्थाओं से भी विनम्र अनुरोध है कि ऐसे प्रशिक्षण शिविर निरन्तर आयोजित किये जाएं एवं चिकित्सा केन्द्र का व्यवस्थित संचालन हो। विश्वसनीय साहित्य उपलब्ध कराया जावे ताकि जनसाधारण की हम अधिकाधिक सेवा कर सकें। यदि अहिंसक समाज भी उपचार के प्रभावशाली निर्दोष विकल्पों के शोध को प्रोत्साहन नहीं दे एवं हिंसक दवाइयों पर आधारित शिविरों का आयोजन कर उन्हें प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रोत्साहन न दे तो कहाँ तक न्यायसंगत कहा जा सकता है?

उपचार हेतु हिंसा अनुचित, अव्यावहारिक एवं अनावश्यक है तथा आत्मा को विकारी बनाने के कारण अधिक हानिकारक है। अतः धर्म के नाम पर सेवा हेतु हिंसक दवाओं पर आधारित उपचार चिकित्सालयों का निर्माण एवं प्रेरणा कदापि तर्क संगत एवं उचित नहीं हो सकती।

### उपचार हेतु संयमी साधकों से अपेक्षाएँ

चंद अपवादों को छोड़कर जहाँ प्रभावशाली, निर्दोष, स्वावलम्बी विकल्प उपलब्ध हों, परन्तु अज्ञानवश उनकी उपेक्षा कर जब संयमी साधकों को अनावश्यक दवाइयों की दासता से ग्रस्त संयम में दोष सेवन करते हुए देखता हूँ तो मन में पीड़ा होती है। हन उनकी निर्दोष साधना में कैसे सहयोगी बन सकें? चिन्तन का प्रश्न है। शरीर तो अनित्य ही है, परन्तु जब तक जीवन है, साधना हेतु इसकी उपयोगिता से नकारा नहीं जा सकता। अतः जिन साधकों की रोग सहनशीलता बराबर न हो और रोग होने पर उपचार लेना आवश्यक हो उन्हें तो स्वावलम्बी निर्दोष स्वास्थ्य सूत्रों को अवश्य सीखना चाहिए, ताकि उपचार हेतु उन्हें दूसरों से अनावश्यक सेवा न लेनी पड़े। धार्मिक शिविरों में भी ऐसे प्रशिक्षणों का समावेश करना चाहिए। दीक्षा लेने से पूर्व विरक्त साधकों को अनिवार्य रूप से प्रकृति के

सनातन सिद्धान्तों पर आधारित निर्दोष स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियों का सामान्य ज्ञान अवश्य कराना चाहिए।

### उपसंहार

सारांश यही है कि सेवा के लिये साधन, साध्य एवं सामग्री पवित्र हों। अज्ञानवश अथवा निज स्वार्थ के लिये प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अन्य प्राणी जगत के साथ अत्याचार, क्रूरता एवं हिंसा को प्रोत्साहन नहीं मिले। हम करणीय-अकरणीय तथा हिंसा-अहिंसा का विवेक रख सेवा कार्यों की योजना बनावें एवं ऐसे किसी कार्य में सहयोगी न बनें जो अहिंसा की मूल मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के प्रतिकूल हों। भूत की भूलों का हम परिमार्जन कर एवं पूर्व में समाज द्वारा संचालित अस्पतालों में अहिंसक चिकित्सा पद्धतियों द्वारा उपचार एवं शोध का प्रयास प्रारम्भ हो। हमारे वर्तमान की परिपक्व धारणाएँ, संस्कार, डॉक्टरों एवं दवा विक्रेताओं का भ्रामक प्रचार भले ही इस लक्ष्य की प्राप्ति में कितना ही बाधक क्यों न हों, सेवा के मूल स्वरूप की रक्षा करनी है। जहाँ अनन्त करुणा, अनन्त मैत्री एवं परोपकार का हृदय से झरना न बहता हो, हित अहित का विवेक न हो, निःस्वार्थ मनोवृत्ति, सरलता, विनय न हों, परन्तु बाह्य रूप से दिखावा मात्र हो, उन्हें सेवा का आदर्श मानना हमारे चिन्तन की अदूरदर्शिता होगी एवं मानसिक पराधीनता भी। सम्यक् चिन्तन का प्रत्येक बिंदु एवं उस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु किया गया प्रत्येक प्रयास, भविष्य के लिये मार्गदर्शक बनेगा। अतः यदि हम अनावश्यक हिंसा में सहयोगी न बनने का संकल्प लेंगे तब ही हम चिर संचित अहिंसा की हमारी पहचान रूपी धरोहर की रक्षा करने का दायित्व निभा सकेंगे।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

## स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 मई 2016 तक डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित करें। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

### प्रश्न:-

1. अच्छे स्वास्थ्य के मापदण्ड क्या होते हैं?
2. अहिंसक उपचार क्यों अधिक प्रभावशाली होता है?
3. शरीर को स्वस्थ रखने हेतु आत्मा को विकारी बनाना क्यों उचित नहीं?

4. हिंसा पर आधारित सेवा से कर्म निर्जरा क्यों नहीं होती ?
5. आधुनिक चिकित्सा क्या अच्छे उपचार के मापदण्डों पर खरी है ?
6. निर्दोष चिकित्सा पद्धतियों हेतु जन-साधारण क्या कर सकता है ?
7. अहिंसक समाज का निर्दोष चिकित्सा हेतु क्या दायित्व है ?

### स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2016 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'क्या ऐलोपेथी ही मुख्य चिकित्सा पद्धति है' के प्रश्नों के उत्तर 24 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि- नाम

प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्री चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर (राज.)	(68.5/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री अनिलकुमार जैन-कोटा (राज.)	(68/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्री राणुलाल माणिकचन्द कोचर-नासिक (महा.)	(67.5/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो श्री चंचलमल जी चोरडिया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोन मय पूर्ण पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

### आओ, एक अच्छी शुरुआत करें....

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

हमारे बचपन के साथी, मद्रास शहर के जाने-पहिचाने सामाजिक कार्यकर्ता श्री कैलाशमल जी दुग्गड ने अपनी शादी की 50 वीं वर्षगांठ पर अपने पुराने बालगोठियों, साथियों को आमन्त्रित किया। यह दो दिन का आयोजन था। मुझे जो बात सबसे अच्छी लगी- वह यह थी कि इन्होंने अपने दोस्तों, सगे-सम्बन्धियों से निमंत्रण पत्र में उपहार लेने-देने का कष्ट न उठाने का विनम्र निवेदन किया था। सिर्फ शुभ-कामनाओं के साथ पधारने की मनुहार थी। साथ में श्री जैन मेडीकल रिलीफ सोसायटी का उपहार कार्ड था। अगर आप चाहें तो हमारे जरूरतमन्द भाई-बहिनों के डायलिसिस में सहयोगी बनकर उनको राहत दिला सकते हैं। यह एक नई पहल है। हम चाहते हैं आप भी अपने परिवार में ऐसे आयोजनों पर इस तरह की शुरुआत कर सकते हैं। किसी के जीवन में खुशी के फूल खिला सकते हैं। एक अनुमानित बजट के अनुसार इस पहल के तहत करीब 3300 से 3500 भाई-बहिन डायलिसिस की सुविधा से लाभान्वित हो सकेंगे।

-52, कालाथी थिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

## अमित में बदलाव

श्रीमती कमला सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मई 2016 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक गाँव में तीन भाइयों का परिवार साथ में रहता था। उनकी माताजी भी उनके साथ रहती थीं। सबसे छोटे भाई का देहान्त कुछ दिन पहले हो गया था। उसकी पत्नी रत्ना थी और पुत्र का नाम अमित, पुत्री का नाम सुहानी था। दोनों स्कूल में पढ़ते थे।

छोटे भाई के देहान्त के एक महीने पश्चात् रत्ना के दोनों ज्येष्ठ और जेठानियाँ मिलकर कहने लगे- “रत्ना! तुम तीनों का खर्च हम लोग वहन नहीं कर सकते हैं। अतः तुम अलग हो जाओ।” रत्ना पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। पति के निधन का दुःख झेल ही नहीं पा रही थी कि सामने एक विकट स्थिति आ खड़ी हुई। रत्ना की सास बेटों के मुँह से ऐसी ओछी बात सुनकर अचेत हो गई। चेतना आने पर सास ने कहा- “रत्ना बहू! मैं तेरे साथ चलूँगी।”

रत्ना ने कहा- “माँजी, आप अपने बेटों के साथ रहें। आपको घर से जाने का नहीं कहा है।”

सास- “बेटी, मैं इन नीचों के साथ नहीं रह सकती। जब मेरा छोटा बेटा सबसे अच्छा कमाता था, तब हाजरी में थे। उसके जाते ही मुँह मोड़ लिया। मैं युवा विधवा को अकेली कैसे छोड़ूँ?”

रत्ना ने मुँह से एक शब्द भी न निकाला, न आँसू बहाए, न उनके सामने गिड़गिड़ाई। मन में कहा, सब बनी, बनी के होते हैं, कष्ट में कौन सहाय। यह तो दुनिया का नियम है।

चारों घर से खाली हाथ निकल गए।

रत्ना पढ़ी-लिखी न थी, लेकिन विनीत, धैर्यवती, स्वाभिमानी और व्यावहारिक थी। वह अपने पति की असाध्य बीमारी के इलाज में लगभग सारे जेवर बेच चुकी थी। एक कंठी और कर्णाभूषण बाजार में बेचकर एक छोटा सा घर किराये लिया। गृहस्थी चलाने के लिए आवश्यक सामग्री खरीद लाई। उधारी भी बहुत करनी पड़ी। वह चार घरों में झाड़ू-पोचे लगाने का काम करने लगी। घर आते समय दर्जी की दुकानों से साड़ियों के फॉल लगाने और ब्लाउजों की तुरपाई का काम ले आती थी, फिर भी कमाई इतनी कम थी, जैसे गरम तवे पर पानी के छँटे डाले तो क्या बचे ?

अमित मां-दादी को अत्यधिक प्यारा लगता था, आँख का तारा था। पढ़ने में बहुत अच्छा था, लेकिन खाने-पीने में, उतना ही नखराला था। कभी भी खाने में चूक निकाले बिना थाली नहीं उठती थी। मां साग अच्छा नहीं बना है। साग में मिर्ची अधिक डाल दी। रोटी कच्ची रह गई। साग में हींग की सुगन्ध नहीं आई। बघार का जीरा जल गया आदि-आदि कमियाँ बताई जाती थीं। उसके सारे नखरे सहन किए जाते थे। दोनों महिलाओं के द्वारा रात-दिन काम करने के पश्चात् भी घर-खर्च नहीं चलता था, फिर भी रत्ना किसी के सामने रोना नहीं रोती थी। मकान के किराए की मार तो बहुत भारी पड़ती थी। इतने कठिन समय में भी वे दोनों संतों के दर्शन तथा नित्य की धर्म-साधना नहीं छोड़ती थी।

गर्मी के दिन थे। अमित भूखा-प्यासा स्कूल से आया। खाना परोसा गया। थाली में एक गरम सब्जी काँच के प्याले में रायता और रोटी थी। अमित ने एक ग्रास लिया तो सब्जी में नमक न था। तिलमिला कर आव देखा न ताव थाली अपनी मां के सामने फेंक दी और खाने के बारे में नौकजोंक करने लगा। थाली फैंकी, काँच का प्याला टूट गया। सब्जी का एक छँटा उछल कर दादी की आँख में चला गया और गुस्से में रसोई के अन्य बर्तन भी धमाधम पटकने लगा। इतने में सन्त महाराज गोचरी में पधारे तो काँच का टुकड़ा उनके पैर में चुभ गया। खून टपकने लगा। प्रतिकूल वातावरण देख सन्त बिना गोचरी लिए मुड़ गए। थोड़ा-सा आगे निकलने पर दादी की नज़र उन पर पड़ी। दादी सन्त के पीछे गई, लेकिन वे दूर निकल चुके थे। रास्ते में खून बिखरा हुआ था। दादी ने बहू को कहा, आज मैंने किस मनहूस का मुख देखा, सन्त गोचरी लिए बिना चले गए और बबुआ भूखा रह गया। यह बात अमित ने सुन ली। यह भी सुना कि सन्त के पैर में काँच अवश्य चुभा है।

अमित का गुस्सा काफूर होने लगा। उसकी भी सन्त के प्रति असीम श्रद्धा थी। अब वह मन ही मन में पछताने लगा। उसका अन्तःकरण उसे कचोटने लगा। संकुचाने लगा। मैंने अपने स्वाद के कारण कैसा अनर्थ कर डाला। अब पछताने से क्या होगा, जब चिड़िया चुग

गई खेत। अपने अन्दर ही अन्दर लजाने लगा। डुसक-डुसक कर रोने लगा। दादी ने समझाया- बेटा कभी-कभी बच्चे नादानी कर बैठते हैं। दुपहरी में महाराज के दर्शन करने चलेंगे और क्षमायाचना कर लेंगे। प्रायश्चित्त लेकर जी हल्का करेंगे। उसके हृदय में पछतावे की अग्नि जल रही थी कि मैं कौनसा मुँह लेकर संतो के सामने जाऊँ। मैं सामने जाने के लायक नहीं हूँ। अन्तस् की पीड़ा उचाटें मारने लगी। अन्त में सोचा कि क्षमा याचना मांगने से ज्यादा कोई बात श्रेयस्कर नहीं हो सकती। उसमें शुद्ध भावों का संचार होने लगा। घर के चारों सदस्य स्थानक गए। सन्तों को वंदना की। सन्तप्रवर ने बैठने का संकेत किया।

अमित ने कहा- “मेरे कारण आपके पैर में काँच चुभा है, आपके पैर में गहरा घाव हुआ है, मुझे क्षमा कर दीजिए।” सन्तप्रवर ने कहा- “कोई विशेष घाव नहीं हुआ है, चिन्ता न करो। तुम संस्कारित हो, तुम्हारे आन्तरिक भाव कितने सुन्दर हैं।” सन्त ने बच्चे को दूसरी ओर ले जाकर कहा- “अमित! सन्ध्या के समय खाने में तुम अपनी मां-दादी की थाली देखना, तुम स्वयं समझ जाओगे।” अमित ने माँ-दादी को भोजन करते देखा, केवल दो-दो रोटी, लाल मिर्ची और नमक की चटनी, जिसमें जीरा भी न था। अमित माँ-दादी की गोद में मुँह डालकर फूट-फूट कर रोया। उसे अपनी आदत को सुधारने का पाठ मिल गया एवं अब जैसा भोजन मिलता, वैसा करने लगा।

**प्रश्न:-**

1. रत्ना के चरित्र की विशेषताएँ सात पंक्तियों में दीजिए।
2. रत्ना को जेठ-जेठानी द्वारा घर से निकालना क्या उचित था? तर्क संगत उत्तर दीजिए।
3. दादी अपने घर की सुख-सुविधा छोड़ रत्ना के साथ क्यों आई?
4. अमित की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।
5. सन्त ने अमित को प्रत्यक्ष न समझा कर वास्तविक स्थिति से अवगत होने को क्यों कहा?
6. इस कहानी से पाँच वाक्य लिखिए, जिनसे आप प्रभावित हुए हों।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

## बाल-स्तम्भ [जनवरी-2016] का परिणाम

जिज्वाणी के फरवरी-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'प्रेरक जीवन प्रसंग' के प्रश्नों के उत्तर 28 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम

अंक

प्रथम पुरस्कार-500/-

दीपेश जैन-जयपुर (राज.)

28

द्वितीय पुरस्कार-300/-

अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)

26.5

तृतीय पुरस्कार- 200/-	आदेश भण्डारी-जयपुर (राज.)	26
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	चेतन कुमार जैन-अलीगढ़-टोंक(राज.)	25.5
	मनीष बोधरा-बीकानेर (राज.)	24.5
	देशना साँखला-अजमेर(राज.)	24
	रुचि जैन-लक्ष्मणगढ़-अलवर (राज.)	24
	सुनील कोचर-नासिक (महा.)	24

## ऐसे गुरुवर की स्तुति करो

महासती प्रज्ञाश्रीजी म.सा. एवं संवेगश्रीजी म.सा.

(तर्ज:- शिव शंकर को जिसने.....)

तीर्थंकर सम हीरा गुरुवर, साधना इनकी सबसे परम,  
वीतराग सम इनका जीवन, क्रिया है सबसे उत्तम।  
ऐसे गुरुवर की स्तुति करो, याँ री भक्ति सुं भव से तिरो॥

जय-जय हीरा गणिवर.....॥1॥

नाम ऊँचा है सबसे गुरुदेव का, वन्दना इनको करते सभी देवता,  
इनकी अर्चा से धुल जाते पाप सभी, आत्मा का ज्ञान पाते सभी,  
चरम शरीरी जैसी चर्या, केवली जैसी दिनचर्या।  
महावीर के सिद्धान्तों को, रोम-रोम में बसा लिया॥

ऐसे गुरुवर की स्तुति करो.....॥2॥

- आचारांग सा आचार पाले गुरु, समवायांग सी समाचारी धारे गुरु,  
उत्तराध्ययन की उपासना करते, शास्त्रों का सार पाते गुरु,  
समयं गोयम! मा पमायए, जीवन में चरितार्थ किया।  
संयम का सन्मार्ग बताकर, हम सबका उद्धार किया॥

ऐसे गुरुवर की स्तुति करो.....॥3॥

रत्नसंघ के अनमोल शिरोमणि, गुणों के पयोनिधि हैं हीरा गणि,  
संघ के सेनानी, हस्ती की निशानी, दुनिया हो गई इनकी दीवानी,  
चारित्र की चिन्मय चमक से सारा जहाँ रोशन किया।  
'रुचिता' ने अन्तर भावों से गुरुवर का गुणगान किया॥

ऐसे गुरुवर की स्तुति करो.....॥4॥

महावीर कल्याणक दिवस पर

## महावीर मेरे, सुनो बात मेरी....

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

महावीर मेरे सुनो बात मेरी,  
 कर दो उजाला, रात है अंधेरी।  
 महावीर मेरे, सुनो बात मेरी...॥ टेरा॥  
 अन्जान राही हूँ, दुर्गम हूँ राहें,  
 किस ओर जाना, नहीं समझ आए।  
 फरियाद मेरी है, तब चरणों में,  
 जल्दी से आना, मत करना देरी।  
 महावीर मेरे, सुनो बात मेरी...॥ 1॥  
 संकट के बादल, जब धिर-धिर आये,  
 तेरी मेहरबानी ही, हमको बचाये।  
 मन को सजाया हे, नाम से तेरे,  
 जीवन में कर दो, भोर सुनहरी।  
 महावीर मेरे, सुनो बात मेरी...॥ 2॥  
 आपका हमको है, सबल सहारा,  
 लाखों को आपने, इस जग से तारा।  
 मैं भी चलूँगा, तेरे रास्तों में,  
 एक दिन बजेगी, खुशियों की भेरी।  
 महावीर मेरे, सुनो बात मेरी...॥ 3॥  
 करुणा के सागर, दीन दयालु,  
 उपदेश तेरा, पल-पल निहारूँ।  
 सबको अपना, मित्र बनाना,  
 कोई रहे न, जीवन में बैरी।  
 महावीर मेरे, सुनो बात मेरी...॥ 4॥

-जनता साइडी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001(छत्तीसगढ़)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## नूतन साहित्य



डॉ. श्वेता जैन

**जैन परम्परा- लेखक-** प्रोफेसर दयानन्द भार्गव, **सम्पादक-** डॉ. रेणुका राठौड़, **प्रकाशक-** राजस्थान संस्कृत अकादमी, जे 15, अकादमी संकुल, द्वितीय तल, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, झालाना डूंगरी, जयपुर (राज.) फोन: 0141-2709120, Email-rajasthansanskritacademy@gmail.com, **पृष्ठ-**232+6, **मूल्य-** 280/-, सन् 2015

वेद और जैन सिद्धान्त दोनों के मर्मज्ञ विद्वान् प्रो. भार्गव के द्वारा प्रदत्त व्याख्यानों एवं निबन्धों का संकलन प्रस्तुत ग्रन्थ में किया गया है। इसमें अनेकान्त, प्रमाणमीमांसा, सर्वज्ञता, अहिंसा, संयम, अपरिग्रह, तीर्थंकर, आचार्य परम्परा, जैनधर्म-वैदिक धर्म, जैन परम्परा में विधायक मूल्य, ऋषभदेव, महावीर, स्वाध्याय, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ आदि से सम्बद्ध विभिन्न विषयों पर छह खण्डों में 29 आलेख उपलब्ध हैं, जो प्रो. भार्गव की विगत 60 वर्षों की जैन दर्शन विषयक लेखन-साधना के साक्षी हैं। प्रो. भार्गव सैद्धान्तिक विषयों का प्रतिपादन अपनी सरस एवं तार्किक शैली में करते हैं तथा प्रतिपाद्य विषय की युगीन प्रासंगिकता को भी ध्यान में रखते हैं। उनकी कृति से कतिपय विचार संकलित हैं-

1. नीरसता ही तनाव का कारण है, अतः जीवन में सरसता होनी चाहिए। यह सरसता पैसे से ही नहीं मिलती, इसके लिए अर्जन के साथ विसर्जन भी चाहिए।
2. विज्ञान और तकनीकी उन्नति के साथ-साथ यदि अहिंसा की भावना का भी विकास नहीं होता है तो जिसे हम विकास समझ रहे हैं, वह अन्ततोगत्वा विनाश सिद्ध हो जाएगा। जरूरत इस बात की है कि विज्ञान या तकनीकी के प्रशिक्षण के साथ अहिंसा का भी प्रशिक्षण दिया जाए।
3. हिंसा की सर्वव्यापी समस्या पर भगवान् महावीर ने बहुआयामी दृष्टि से जो विचार किया, वह मनुष्य मात्र की अमूल्य सम्पत्ति है।
4. सारे पदार्थ मिल जाने पर भी यदि हमारी व्यग्रता कम नहीं होती तो हमारे विकास की अवधारणा में कहीं समग्रता का अभाव ही उसका कारण है। समग्रता के सामने व्यग्रता टिक नहीं सकती। समग्रता का अर्थ है- भौतिक आवश्यकताएँ पूर्ण हों, मानसिक इच्छाएँ

तृप्त हों, पारस्परिक व्यवहार तर्क संगत हो और सबसे सम्बन्ध आत्मीयता पूर्ण हों।

5. जैन और वैदिक परम्परा के बीच जहाँ विवाद के संकेत मिलते हैं, वहाँ इन दोनों के बीच एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव भी देखने में आता है।

**समयसार खण्ड-2 (कर्तृ-कर्म-अधिकार)- सम्पादक-** डॉ. कमलचन्द सोगाणी, **अनुवादक-** श्रीमती शकुन्तला जैन, **प्रकाशक-** अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी-322220 (राज.), दूरभाष- 07469-224323, पृष्ठ-126+6, **मूल्य-** 550 रुपये, सन् 2016

आचार्य कुन्दकुन्द रचित समयसार के कर्ता-कर्म-अधिकार की गाथा 69 से 144 तक का व्याकरण सहित हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। गाथा के प्रत्येक शब्द का हिन्दी अर्थ, व्याकरणिक पहचान-अव्यय, विशेषणादि, क्रिया, वचन-विभक्ति आदि का उल्लेख किया गया है। गाथा का शब्दशः अन्वय के साथ अर्थ किया गया है। अन्त में सारी गाथाओं के मूलपाठ दिए गए हैं, तदनन्तर परिशिष्ट के अन्तर्गत संज्ञा-कोश, क्रिया-कोश, कृदन्त-कोश, विशेषण-कोश, सर्वनाम-कोश तथा छन्द वर्णित हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में पाठकों की सुविधा के लिए संकेत सूची भी दी गई है। प्राकृत सीखने में रुचि रखने वाले प्रशिक्षु के लिए यह प्रारम्भिक स्तर पर बहुत उपयोगी पुस्तक है। यहाँ से समयसार की भाँति प्रवचनसार, नियमसार आदि की भी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं।

### प्रेरक-विचार

## कर्तव्यपालन के लिए सोचें

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

अगर आप पिता हैं तो सोचना, पुत्र के लिए पिता का जो कर्तव्य होता है वह पूरा किया या नहीं? यह सोचेंगे तो स्वतः खयाल आयेगा कि मैंने अपने पुत्र को संस्कार नहीं दिये। अगर आप पुत्र हैं तो चिन्तन करना कि माता-पिता जो मेरे लिए परम उपकारी हैं, जीवन देने वाले हैं, उनके प्रति कर्तव्य के निर्वहन में कहीं कोई कमी तो नहीं रही? मैं चिन्तन की बातें कह रहा हूँ। करोड़ों कमा लिये, पिताजी मरणासन्न हैं, उस समय लड़के ने यह तो नहीं कहलवाया कि अभी आने की फुर्सत नहीं है? करोड़ों की नहीं, अरबों की संपत्ति हो सकती है, पर पिता पुत्र को देखने के लिए तरसता हुआ मर जाता है।

आप चाहे पिता हैं, पुत्र हैं, पत्नी हैं, अपना कर्तव्य क्या, इस पर विचार-चिन्तन करना। कोई नौकर है, नौकरी करता है तो वह अपने कर्तव्य की सोचे। शुद्धि सबके लिए आवश्यक है। व्यापारी है तो विचार करे कि मैंने कहीं माल में मिलावट तो नहीं की? किसी को धोखा तो नहीं दिया?

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-4 से संगृहीत

# समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(01 अप्रैल, 2016)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.आदि ठाणा 10 वर्द्धमान जैन स्थानक, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज विराज रहे हैं। यहाँ महावीर जयन्ती तक विराजने की संभावना है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 10 सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क में विराज रहे हैं। सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि संतप्रवर जोधपुर पधार आए हैं।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 11 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 आराधना भवन, मण्डावर विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 18 महावीर कल्याण भवन, मदनगंज विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 जैन स्थानक, सुराणा मार्केट, पाली विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 9 मुम्बई के अन्धेरी, खार, बान्द्रा, वर्ली, मुणोत-विला, बालकेश्वर, भिवंडी को फरस कर इगतपुरी की ओर बढ़ रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 जैन स्थानक, सुभाष नगर, उज्जैन विराज रहे हैं। रायचूर, कोप्पल, बीजापुर, शोरापुर फरसते हुए धुलिया पधारने पर 20-21 फरवरी को Fruitful Inspiration In Life (FIL) कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें आजीवन 218 नियम हुए। कार्यशाला अत्यन्त सफल रही।
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 रूपाखेड़ी विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 लक्ष्मेसर विराज रहे हैं। कोप्पल की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 गोहाना में विराज रहे हैं।
- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 शिम्भूपुरा विराज रहे हैं। निम्बाहेड़ा की ओर विहार चल रहा है।

- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 सिरौही से 9 कि.मी. आगे सिन्धरथ पधारे हैं। अहमदाबाद की ओर बढ़ रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 गढ़ा गांव (उज्जैन से आगे) में विराज रहे हैं।

## पूज्य आचार्यप्रवर की

### किशनगढ़ एवं मदनगंज पर हुई महती कृपा

फाल्गुनी पूर्णिमा किशनगढ़ में हुई,

महावीर जयन्ती पर मदनगंज होगा निहाल

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द ने धर्मधरा किशनगढ़ शहर को 25 फरवरी से फाल्गुनी चातुर्मासी तक लाभान्वित किया। आपके विराजने से यहाँ धर्ममय वातावरण बना रहा। किशनगढ़ शहर संघ की पुण्यवानी से विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा-सन्निधि का भी योग मिला।

27 फरवरी को श्रमण संघीया महासती श्री रमणीककंवरजी म.सा. आदि ठाणा ने दर्शन व सेवा का लाभ लिया। यादगिरि संघ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। 28 को फूलिया कलां संघ व उज्जैन का सुभाषनगर संघ विनति लेकर पावन श्री चरणों में आया। 1 मार्च को व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 का आगमन हुआ। अजमेर संघ व अजमेर का वैशाली नगर संघ चातुर्मास के लिये विनति करने पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। 5 मार्च को ज्ञानगच्छीय मुनिराजों ने सुखशांति की पृच्छा का लाभ लिया। 6 मार्च को ब्यावर संघ अक्षयतृतीया की एवं भोपालगढ़ संघ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुआ। अजमेर से सकल जैन समाज ने भावभरी विनति पावन पादयुग्मों में निवेदन की। तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. दूदू से विभिन्न क्षेत्रों को फरसते हुए पूज्य गुरुदेव की सेवा में पधारे। 7 मार्च को सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 जोधपुर से उग्र विहार करते हुए गुरुदेव की सेवा में पधारे।

पूज्य आचार्य भगवंत ने विभिन्न विनतियों को लक्ष्य में रखकर साधु मर्यादा के अनुरूप निम्नानुसार स्वीकृति फरमाई- फाल्गुनी चातुर्मासी-किशनगढ़ शहर, भगवान महावीर

स्वामी का जन्म कल्याणक-मदनगंज, अक्षयतृतीया-अजमेर क्षेत्र। 10 मार्च को पारोला संघ व बजरिया सवाईमाधोपुर संघ चातुर्मास की विनति निवेदन करने पूज्यपाद की सेवा में आये। 11 मार्च को भोपालगढ़ संघ ने चातुर्मास की विनति पावन श्री चरणों में रखी। व्यवहार सूत्र की वाचना पूर्ण हुई। 12 मार्च को कवेलियास संघ, कोसाणा संघ, कोयम्बतूर संघ चातुर्मास की विनति लेकर पावन चरण कमलों में निवेदन करने पधारे। इस दिन उत्तराध्ययन सूत्र की वाचना प्रारम्भ हुई। 13 को चातुर्मासार्थ विनतियों के क्रम में प्रतापनगर संघ-जयपुर, गोपालगढ़ संघ-भरतपुर, भोपालगढ़ संघ, सब्जी मण्डी संघ-दिल्ली अपने-अपने क्षेत्र की भावना लेकर उपस्थित हुए। 14 को बागोठ संघ ने चातुर्मास के लाभ हेतु विनति प्रस्तुत की। 15 मार्च को मसूदा संघ, 18 मार्च को मानसरोवर संघ-जयपुर, बागोठ संघ तथा जोधपुर शहर से श्रावकगण अपनी भावना लेकर उपस्थित हुए। 19 मार्च को महावीर नगर संघ-जयपुर, 20 मार्च को गुलाबनगर संघ, शक्तिनगर संघ-जोधपुर तथा भोपालगढ़ संघ के सदस्यों के साथ महिला मण्डल की बहिनें भी विनति करने पूज्य गुरुदेव के पावन श्री चरणों में उपस्थित हुईं।

22 मार्च को फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व किशनगढ़ में तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान व धर्मारोधन के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर निमाज, अजमेर, जयपुर, जोधपुर, बजरिया, हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, शहर सवाईमाधोपुर, कोटा, इन्द्रगढ़, कुशतला, मण्डावर, नदबई, हिण्डौन, दिल्ली, रतलाम, बैंगलोर, मैसूर, चेन्नई, कुम्भकोणम, पड़ासौली आदि स्थलों से गुरुभक्तों का दर्शनार्थ आचार्यप्रवर की सेवा में पधारना हुआ। इस अवसर पर श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने प्रवचनामृत में फरमाया कि संसार में तीन तरह के मानव होते हैं- 1. अस्तित्व भावना वाले मानव- जो मिला हुआ है- उससे आगे बढ़ने का या प्रगति करने का प्रयत्न नहीं करते- खाना, पीना, मौज उड़ाना ही इनकी प्रवृत्ति है। ये संकीर्णवृत्ति वाले होने से खाने के लिये जीते हैं। ऐसे मानवों का मात्र अस्तित्व है, ये उत्थान नहीं कर सकते। 2. व्यक्तित्व श्रेणी वाले- जो मिला हुआ है, उससे भी अधिक पाने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। ये महत्वाकांक्षी होते हैं, पद-प्रतिष्ठा की दौड़ में लगे रहते हैं। अपने व्यक्तित्व, राज्य, बल व अहं पोषण वाले साम्राज्य बढ़ाने वाले संसार को जीतने में विफल रहे, न उनका अंश बचा, न वंश बचा। 3. प्रभुत्व श्रेणी वाले। ऐसे मानव स्व-पर उपकार की भावना वाले अहिंसक, करुणाशील, लज्जावान होने से संसार के भवों को सीमित कर लेते हैं। जो मिला है, उसका सही मार्ग में उपयोग करना अनन्तगुण निर्जरा का कारण है। महासती श्री रक्षिता जी म.सा. - चौमासी महापर्व हमें पावन संदेश देकर सचेत कर रहा कि हमसे आज तक जो भी गलतियाँ हुई हैं, भविष्य के

लिये संभल जाएँ ताकि उन गलतियों की पुनरावृत्ति न हो। इस जीव ने जन्म-मरण करते हुए सभी रंगों को प्राप्त किया। अब वर्ण रहित बनकर, राग-द्वेष की गाँठ को ढीली कर आत्मा को समुज्ज्वल बनाना है। आलोचना कर मोक्ष मार्ग में बाधक बनने वाले शक्तियों को निकालना है। सामायिक का रंग व स्वाध्याय की पिचकारी से कर्मरज को उड़ाते हुए हम स्वयं भी गुणों को संजोयें।

**महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि आज लोकोत्तर पर्व फाल्गुनी चौमासी है, जबकि लौकिक पर्व कल है। आज हर क्षेत्र में अतिक्रमण का दौर है। अतिक्रमण विपदा है, समस्या है, कर्मों की कुंजी है। अतिक्रमण का प्रतिक्रमण कर लीजिये, भव-भ्रमण समाप्त हो जायेगा। क्योंकि प्रतिक्रमण सम्पदा है, समाधान है, परमेश्वर बनने की पूंजी है। प्रतिक्रमण को तीसरी औषधि बताया है। पहली औषधि ऐसी है जो रोग को तो समाप्त कर देती है, पर रोग नहीं हो तो नया रोग उत्पन्न कर देती है। दूसरी औषधि रोग को समाप्त कर देती है और नया रोग पैदा नहीं होने देती। तीसरी औषधि ऐसी अद्भुत है जो रोग को नष्ट कर नवीन रोगों से लड़ने का सामर्थ्य पैदा करती है। ऐसी ही औषधि प्रतिक्रमण है, जिसमें कृत दोषों की यथासमय आलोचना के साथ प्रत्याख्यान कर लेने से दोषों के प्रवेश द्वार बंद हो जाते हैं।

**पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**— धर्म संघ के सदस्य अपनी आत्मा को निर्मल करने के लिये महाव्रतधारी संत-सतियों की संगति चाहते हैं। प्रायः फाल्गुनी चातुर्मासी पर सभी चातुर्मास पाने के इच्छुक क्षेत्र विशेष रूप से पुरजोर विनति रखते हैं। चातुर्मास समाप्त हुए चार मास हो गये, आत्म-जागरण के लिये आत्म-साधना के लिये आई हुई सुस्ती को दूर करने के लिये चौमासा करवाया जाता है। लेकिन एक बात कहूँ— यदि एक दिन घर में झाड़ू नहीं लगे तो, कचरा जमा हो जाता है। ऐसे ही यदि स्थानक के दरवाजे नहीं खुलते हों तो क्या स्थिति होगी। और आगे बढ़ूँ— यदि रोजाना सामायिक आराधना, नवकार मंत्र की माला या 5 बार नवकार मंत्र जिस दिन स्मरण करने में न आये तो अशांति रूपी कचरे का बोलबाला रहेगा। रोजाना धर्म-साधना का क्रम रहने से शांति का अहसास रहता है। धर्म-संघ की मर्यादा का ध्यान रखते हुए भूल सुधार कर सामायिक-प्रतिक्रमण करें। धर्म संघ में धनबल का प्रदर्शन नहीं करें, अपितु धर्म साधना का रूप लेकर आयें।

फाल्गुनी चौमासी पर कई तेले, उपवास, एकासन, आंबिल व दया-पौषध की साधना हुई। निमाज संघ के सदस्य सकल समाज (दिगम्बर एवं मूर्तिपूजक सहित) के साथ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्य गुरुदेव के पावन श्री चरणों में उपस्थित हुए। 23 को नदबई

संघ एवं मण्डावर संघ ने विनति प्रस्तुत की तथा जयपुर से पाँचे वाला संघ ने दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

पूज्य आचार्य भगवन्त किशनगढ़ शहर में लगभग पूरे शेषकाल विराजे। इस अवधि में किशनगढ़वासियों की श्रद्धा, समर्पण एवं भक्ति के साथ धर्मारोधना करते हुए सेवा संभाल, उल्लेखनीय रही। दर्शनार्थियों के आने का क्रम भी प्रायः अनवरत बना रहा। स्वधर्मी भाई-बहिनों का अतिथि-सत्कार किशनगढ़ संघ ने अन्तरंग भावना से किया।

पूज्य गुरुदेव 25 को प्रातः विहार फरमाकर शिवाजी नगर कॉलोनी में पधारे। पारोला संघ चातुर्मास की विनति करने आया हुआ था। यहाँ जोधपुर महानगर से जोधपुर शहर संघ, घोड़ों का चौक, पावटा संघ, नेहरूपार्क संघ की ओर से परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.आदि ठाणा के चातुर्मासार्थ विनति प्रस्तुत की गई। दिल्ली से रोहिणी संघ भी चातुर्मास की विनति लेकर आया।

26 को बाड़मेर संघ एवं खेड़ली संघ उपस्थित हुए। 27 मार्च को महावीर नगर संघ-जयपुर, नदबई संघ एवं गोपालगढ़ संघ सदस्य चातुर्मास की विनति करने उपस्थित हुए। जयपुर से लगभग 25 युवारत्न यू-टर्न के सम्बन्ध में गुरुदेव से मार्गदर्शन लेकर कृतकृत्य हुए। 29 मार्च को सर्वाईमाधोपुर शहर संघ विनति हेतु उपस्थित हुआ। श्रीमती जतनदेवी प्रेमचन्दजी मोदी, इन्दिरा कॉलोनी के नौ की तपस्या पूर्ण हुई। 30 को नित्यानन्दनगर-जयपुर संघ ने चातुर्मासार्थ विनति प्रस्तुत की।

31 मार्च चातुर्मासों की घोषणा का दिन था। प्रवचन-स्थल आर.के. कम्युनिटी परिसर को रखा गया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने कहा कि अनन्त पुण्यवानी से चातुर्मास का लाभ मिल पाता है, अतः उसका पूरा सदुपयोग करने का लक्ष्य रहे। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने आडम्बर विहीन चातुर्मास हेतु प्रेरणा की तथा ज्ञान-दर्शन एवं चारित्र में चरण बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित करने हेतु प्रेरित किया। पूज्य आचार्यप्रवर का मंगल उद्बोधन हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर ने फरमाया कि जिनके चातुर्मास की भावना लेकर आप आये हैं उन साधक संतों के पधारने पर चारित्र में चरण बढ़ाएं, पाप प्रवृत्ति को त्यागें, ज्ञान गंगा में स्वयं अवगाहन करें तथा करने वालों के सहयोगी बनें।

### सन् 2016 (संवत् 2073) के चातुर्मासों की घोषणा

चैत्र कृष्णा सप्तमी 31 मार्च 2016 को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ विक्रम संवत् 2073 सन् 2016 के निम्नांकित चातुर्मासों की घोषणा की गई है-

1. निमाज (जिला-पाली)- परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. गुलाबनगर, जोधपुर- उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा
3. पावटा, जोधपुर- साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा
4. नदबई (भरतपुर)- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा
5. फूलियांकला (अजमेर)- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
6. भरतपुर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
7. जलगांव (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा
8. यादगिरी(कर्नाटक)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
9. रोहिणी-दिल्ली- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
10. लासूर (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
11. सूरत (गुजरात)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा
12. बाड़मेर (राज.)- साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की निश्रा की सतियाँ
13. हरसाना (अलवर)- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. की निश्रा की सतियाँ

-जगदीश जैन

## अक्षय तृतीया हेतु अजमेर संघ को स्वीकृति

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय, आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने आगामी अक्षय तृतीया पर्व 09 मई, 2016 पर साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ अजमेर विराजने की स्वीकृति प्रदान की है, जिससे अजमेर संघ हर्षित एवं प्रमुदित है। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर तप-साधकों के साथ अनेक श्रद्धालुजन नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करेंगे। एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं पधारने वाले सदस्यों की संख्या का उल्लेख कर सम्पूर्ण जानकारी एवं अपने पधारने की सूचना संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन:-0291-2636763, 2641445 एवं अजमेर संघ को भिजवाने का श्रम करावें। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 'आचार्यपद रजत साधना वर्ष' के अन्तर्गत जो एकान्तर तप चल रहे हैं, उन सबका पारणक भी अजमेर में अक्षयतृतीया पर हो रहा है। तपस्वी साधकों के अजमेर पधारने हेतु निवेदन है। अजमेर सम्पर्क सूत्र:- श्री विवेकजी महनोत-98291-

54156, श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया-94142-81050, श्री रिखबचन्दजी मांडोत-94140-07508, श्री चन्द्रप्रकाशजी कोठारी-98290-70092

-पूरणराज अबाजी, महामंत्री

## पूज्य आचार्य श्री हीरा के आचार्यपद रजत साधनावर्ष की सम्पूर्ति 27 मई को

जिनशासनगौरव गौरव, निर्व्यसनी सामायिक-संघ के प्रेरक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद आरोहण को ज्येष्ठ कृष्णा 5 शुक्रवार 27 मई 2016 को 25 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। गतवर्ष ज्येष्ठ कृष्णा 5 शनिवार 9 मई 2015 को 'आचार्यपद रजत साधनावर्ष' का शुभारम्भ हुआ था। इस वर्ष में अनेक श्रावक-श्राविकाओं द्वारा एकान्तर वर्षीतप की आराधना की जा रही है। पारणक एवं नये संकल्प का ग्रहण अक्षयतृतीया के अवसर पर अजमेर में सम्पन्न होना है। संघ के द्वारा ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन एवं व्यसनमुक्ति हेतु कार्यक्रम निर्धारित किए गए थे, जिनकी रिपोर्ट जोधपुर संघ कार्यालय को शीघ्र प्रेषित करावें। संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

### संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम

#### (अ) ज्ञानाराधन-

**वर्ग-प्रथम-** 1. प्रतिक्रमण सूत्र विधि व अर्थ सहित, 2. हीराष्टक-हिन्दी पद्यानुवाद, 3. चयनित 25 थोकड़े, 4. वीर स्तुति-मूल एवं अर्थ, 5. उत्तराध्ययनसूत्र- प्रथम अध्ययन का सार।

**वर्ग-द्वितीय-** 1. दशवैकालिक अध्ययन 1 से 4 तक अर्थ सहित, 2. उत्तराध्ययन सूत्र-9 वां अध्ययन का सार, 3. आचार्य-उपाध्याय के गुण, 4. विनीत शिष्य के कर्तव्य, 5. आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ।

**(ब) तपाराधन-** 1. कम से कम 2500 व्यक्तियों को न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के लिए सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु प्रेरित करना (एक वर्ष की समयावधि तक अभ्यास के साथ इसमें आगे बढ़ने हेतु विनम्र अनुरोध), 2. कम से कम 2500 व्यक्तियों को जमीकन्द त्याग हेतु प्रेरित करना, 3. कम से कम 250 वर्षीतप (एकान्तर/एकाशन) का लक्ष्य, 4. श्रावक-श्राविकाओं को इस वर्ष में कम से कम 25 आयंबिल/नीवी तप हेतु प्रेरित करना। 5. वर्ष पर्यन्त अथवा मासपर्यन्त कषायविजय हेतु अभ्यास।

**(स) धर्माराधन-** 1. कम से कम 25 प्रमुख क्षेत्रों में नियमित संवर-साधना हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करना, 2. स्वाध्याय संघ का कार्य क्षेत्र देश के 25 प्रमुख प्रान्तों तक

फैलाना, 3. कम से कम 125 दम्पतियों को शीलव्रत हेतु प्रेरित करना, 4. कम से कम 125 व्यक्तियों को चौविहार हेतु प्रेरित करना, 5. श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष में कम से कम 25 पौषध करने हेतु प्रेरित करना।

#### (द) व्यसन -मुक्ति-

आचार्य श्री हीरा के सन्देश 'हीरा गुरु का यह आह्वान, व्यसनमुक्त हो हर इन्सान' को लेखों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रचार-यात्रा के माध्यम से देश के कोने-कोने में प्रचारित व प्रसारित करना।

आइए! आप-हम सभी त्याग-तप की आराधना के साथ लक्ष्य सिद्धि हेतु अग्रसर हों। संघनायक साधना सुमेरू महापुरुष के चरण सरोजों में यही हमारा विनम्र श्रद्धा समर्पण होगा। - पूरणराज अबानी-राष्ट्रीय महामंत्री

## प्रभु आदिनाथ एवं आचार्य श्री हीरा के जन्म-दिवस पर तप-त्याग

चैत्र कृष्णा अष्टमी, 01 अप्रैल 2016 को प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव के जन्मकल्याणक एवं पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 78 वें जन्मदिवस पर सम्पूर्ण देश में उपवास, एकाशन, दया-संवर एवं पौषध की आराधना की गई तथा प्रभु आदिनाथ एवं आचार्यश्री हीरा के साधनापूत जीवन की विशेषताओं पर विभिन्न ग्राम-नगरों में संत-सतियों के सान्निध्य में अथवा स्थानीय संघ-स्तर पर प्रकाश डाला गया। महापुरुषों के जीवन से कोई न कोई शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को उन्नत बनाने हेतु संकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। कइयों ने संकल्प भी ग्रहण किए।

### श्राविका-मण्डल की विविध गतिविधियाँ

#### बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र (भाग 3) पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत पाँचवीं आगम परीक्षा 'उत्तराध्ययनसूत्र' पर आयोजित हो रही है। इसके दो भागों की परीक्षा आयोजित हो चुकी है। 'उत्तराध्ययनसूत्र' तृतीय भाग में 25 से 36 अध्ययनों में से प्रश्न लिये गये हैं। तृतीय भाग का मूल्यांकन प्रश्न पत्र सभी केन्द्र स्थलों पर भेजना प्रारम्भ कर दिया गया है। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र भरकर अग्रांकित जयपुर पते पर भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 मई 2016 रखी गई है। मुख्य समापक परीक्षा का आयोजन रविवार, 19 जून, 2016 को होगा। सम्पर्क सूत्र- अध्यक्ष-श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, ए-8,

महावीरनगर, टॉक रोड, जयपुर(राज.), 098290-19396, महासचिव- श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625

**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल** द्वारा 'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता के अन्तर्गत खुली पुस्तक परीक्षाओं में भाग लेकर 70 तथा इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट द्वारा हस्तान्तरित की जायेगी। अतः प्रतियोगिता विजेता प्रतिभागी नाम एवं स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी (स्पष्ट अंग्रेजी में) भिजवाने का श्रम करावे:- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bank IFS code, Micr Code, Mobile No. **डाक का पता-** महासचिव, अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)E-mail: Shravikamandal@yahoo.com

**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल** द्वारा 13 मार्च, 2016 को जोधपुर से पीपाड़, गोटन, मेड़ता तथा भोपालगढ़ का प्रवास एवं प्रचार-प्रसार कार्यक्रम रखा गया। गोटन तथा मेड़तासिटी में नई शाखा का गठन किया जिसमें नये अध्यक्ष व सचिव का मनोनयन किया गया। भोपालगढ़ शाखा को सक्रिय किया गया। बालिकाओं को संघ से जुड़े रहने की प्रेरणा की गई।

17 मार्च से 19 मार्च 2016 को बिलाड़ा, ब्यावर, देवली, दूणी, देई, जरखोदा, सुमेरगंजमण्डी, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़-रामपुरा, कुशतला, चौरू एवं अजमेर तक प्रवास कार्यक्रम किया गया। इस प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के विभिन्न कार्यक्रमों से अवगत कराया गया। -*बीजा मेहता, महासचिव*

## **स्वाध्याय संघ द्वारा महाराष्ट्र में प्रचार-प्रसार यात्रा**

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 01 से 05 मार्च 2016 तक महाराष्ट्र क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार-प्रसार यात्रा में दो दल बनाये गये। प्रथम दल के अन्तर्गत स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल- जोधपुर, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री धीरज जी डोसी- जोधपुर, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री मनोज जी संचेती-जलगांव की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रथम दल के अन्तर्गत अमरावती, बड़नेरा, चांदुर रेलवे, धामनगांव, वर्धा, हिंमनघाट, रालेगांव, नेर, कारंजा, वाशिम, आकोला, खामगांव, नांदुरा, मलकापुर, बुलढाणा, भोकरदन, सिल्लौड़, भराड़ी, वाकोद, शेन्दुर्णी एवं पहर क्षेत्र में प्रवास हुआ। द्वितीय दल में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सचिव श्री

राजेश जी भण्डारी- जोधपुर, स्वाध्याय संघ प्रचारक श्री राजेश जी जैन- हिण्डौन सिटी, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री हीरालाल जी मण्डलेचा- जलगांव, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती लीला जी सालेचा- जलगांव, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मुकेश जी बुरड़- शिरपुर आदि की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत धरणगांव, चौपड़ा, होलनांथा, शिरपुर, बेटावद, नरदाणा, फागणा, शिरूड़, धुलिया, पीपलनेर, कासारे, जायखेड़ा, ताहाराबाद, सटाणा, सौंदाणा, चांदवड़, नांदगांव, न्याय डोंगरी, चालीस गांव, नागद, कजगांव, भड़गांव एवं पाचोरा क्षेत्र में प्रवास हुआ।

प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना हेतु 13 क्षेत्रों की मांगें प्राप्त हुईं। पाँच महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा हेतु स्वीकृति प्राप्त हुई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु पाठशाला एवं रविवारीय संस्कार शिविर की प्रेरणा की गई तथा प्रवर्तमान पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए फॉर्म भरवाये गए। कई स्थानों पर भाऊमण्डल की स्थापना की गई।

## 6 मार्च को जलगांव में स्वाध्यायी सम्मेलन सम्पन्न

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के सभी स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी सम्मेलन 06 मार्च, 2016 को अहिंसा तीर्थ कुसुम्बा में श्रावकरत्न श्री रतनलालजी बाफना- संयोजक, शासन सेवा समिति की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वाध्याय संघ की सह-संयोजक सौ. मंगला जी चौरडिया ने महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ की गति एवं प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात् स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने स्वाध्याय संघ की गति-प्रगति एवं भावी योजनाओं की जानकारी प्रदान करते हुए सभी स्वाध्यायियों को पर्युषण पर्व में पधारने का अनुरोध करते हुए अपने ज्ञानार्जन को आगे बढ़ाने का प्रस्ताव रखा। जिसके फलस्वरूप वहाँ विराजित 125 स्वाध्यायियों में से 85 स्वाध्यायियों ने सहर्ष आगामी पर्युषण पर्व में सेवा देने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की। सम्मेलन में श्री कस्तूरचंदजी बाफना, श्री कंवरलालजी सिंघवी, श्रीमती नयनताराजी बाफना आदि बाहरगांव से पधारे हुए स्वाध्यायियों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में श्री रतनलालजी बाफना ने उत्तम स्वाध्यायी बनने हेतु महत्त्वपूर्ण बिन्दु बताये। अंत में प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल तथा संस्कार केन्द्र के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी ने पधारे हुए सभी स्वाध्यायियों का आभार प्रकट किया।

## स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर 09 से 12 जून तक

स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों के ज्ञानार्जन में वृद्धि हो,

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 09 से 12 जून, 2016 तक जोधपुर के सामायिक स्वाध्याय भवन, पावटा में स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर आयोजित किया जा रहा है। जो स्वाध्यायी शिक्षक बनने की योग्यता रखते हैं, वे ही इसमें भाग ले सकते हैं। शिविर हेतु निम्न व्यक्तियों से सम्पर्क कर शिविर में पधारने की स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। **जोधपुर सम्पर्क सूत्र:-** 1.स्वाध्याय संघ कार्यालय- 0291-2624891, 2. श्री ओमप्रकाशजी बांठिया- 9461522309, 3. श्री गोपालजी अब्बानी-8003615215, 4. श्री कमलेश जी मेहता- 9414267824, 5. श्री धीरजजी डोसी- 9462543360, **शिक्षा समिति सम्पर्क सूत्र:-** 1. श्री प्रकाशचंदजी जैन, जलगांव-9370020005, 2. श्री त्रिलोकजी जैन, जयपुर- 9694430826

-गोपालराज अब्बानी, सचिव

## **‘युवा सशक्तीकरण व्यसनों से परे’ कार्यक्रम का सफल आयोजन**

अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संदेश ‘व्यसन मुक्त हो हर इंसान’ को जन-जन में पहुँचाने हेतु वर्तमान की सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए अभिनव कार्यक्रम ‘युवा सशक्तीकरण व्यसनों से परे’ का प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम के क्रियान्वन हेतु कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लूंकड़ एवं उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया को दायित्व प्रदान किया गया है। सर्वप्रथम इस कार्यक्रम का आयोजन बीजापुर शाखा में हुआ। तत्पश्चात् 09 फरवरी को ब्यावर में, 13 एवं 14 फरवरी को ईरोड एवं सेलम में तदनन्तर 06 मार्च को चेन्नई में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रमों के दौरान काफी संख्या में युवाओं एवं अन्य उपस्थित लोगों ने निर्व्यसनतापूर्वक जीवनयापन करने हेतु संकल्प पत्र भरकर आचार्य भगवन्त के संदेश को जीवन में आत्मसात् किया है।

10 फरवरी 2016 को दूदू में आयोजित युवक परिषद् की कार्यकारिणी सभा में पाली, पीपाड़, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, खेरली, बजरिया, दूदू, गोटन, मेड़ता, खोह एवं अन्य शाखाओं ने भी अपने यहाँ पर इस कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की थी। इसके अलावा इस कार्यक्रम को अपने यहाँ करवाने हेतु इच्छुक व्यक्ति युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लूंकड़-ईरोड-9360025001 एवं उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया-बैंगलोर से-9886671221 पर सम्पर्क कर सकते हैं।-मनीष लोढ़ा, महासचिव

## ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन दो चरणों में

अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सहयोग से आगामी ग्रीष्मकालीन अवकाश में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन 2 चरणों में करना प्रस्तावित है। प्रथम चरण में शिविर का आयोजन 15 मई से 29 मई 2016 तक एवं द्वितीय चरण में शिविर का आयोजन 22 मई से 05 जून 2016 तक करना प्रस्तावित है। युवक परिषद् की शाखाओं एवं सम्पर्क सूत्रों (जहाँ पूर्व में युवक परिषद् द्वारा शिविर में लगाये गये हैं) से निवेदन है कि अपने यहाँ आयोजित होने वाले शिविर हेतु सुविधानुसार प्रस्तावित दोनों में से किसी एक चरण की दिनाँक (प्रथम या द्वितीय चरण) से पत्र द्वारा प्रधान कार्यालय घोड़ों का चौक, जोधपुर या ई-मेल yuvaratan17@gmail.com पर दिनाँक 20 अप्रैल 2016 से पूर्व अवश्य सूचित करें। -मन्त्री लोढ़ा, महासचिव

### आ.शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा जुलाई में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 24 जुलाई, 2016, रविवार को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि स्वयं बोर्ड की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें।

1. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 24 जून 2016 है।
2. परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र के साथ बैंक खाता सम्बन्धी विवरण प्रपत्र भरना अनिवार्य है। इसके बिना उन्हें पुरस्कार नहीं दिया जायेगा।
3. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
4. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
5. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
6. परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती तीनों भाषाओं में प्रकाशित हैं।
7. परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर हिन्दी व अंग्रेजी इन दोनों में से किसी भी भाषा में लिखे जा सकते हैं।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक चोरड़िया, संयोजक-

94141-29162, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, 2622623, फ़ैक्स: 2636763, Website: jainratnaboard.com, E-mail: Shikshanboard.jodhpur@gmail.com, info@jainratnaboard.com

## ‘कुवलयमालाकहा’ पुस्तक का लोकार्पण

**जयपुर-** महाकवि उद्योतनसूरि कृत कुवलयमालाकहा का विमोचन समारोह प्राकृत भारती अकादमी के परिसर में 26 मार्च 2016 को सम्पन्न हुआ। आठवीं सदी के लिखे इस ग्रंथ में प्राचीन भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य और सभ्यता की झलक दिखाई देती है। इस विशाल ग्रंथ का अनुवाद पहली बार हिन्दी में वरिष्ठ विद्वान् डॉ. प्रेमसुमन जैन ने किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. हम्पा नागराजैय्या ने कहा कि यदि इस तरह के मूल्यवान् ग्रंथों को अनुवाद नहीं हुआ तो हमारी आने वाली पीढ़ी पुरातन साहित्य के प्रति उपेक्षा के भाव रखेगी। अपने भाषण में कृति पर प्रकाश डालते हुए प्रो. प्रेमसुमन जैन ने प्राकृत भाषा की प्रासंगिकता के साथ कथानक का संक्षिप्त परिचय दिया। प्राकृत भारती अकादमी के संस्थापक डॉ. डी. आर. मेहता ने कहा कि जब तक पाठ्यक्रमों में प्राकृत भाषा विषय के रूप में व्यापक रूप से नहीं पढ़ाई जाएगी तब तक हम प्राच्य भाषाओं की संरक्षा नहीं कर सकते। प्रो. कमलचन्द सोगाणी, प्रो. बंशीधर भट्ट, मुश्ताक अहमद राकेश ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तेजराज बांठिया थे। सभा का संचालन एवं संयोजन डॉ. तारा डागा ने किया। डॉ. राजेन्द्र रत्नेश ने समागत अतिथियों का धन्यवाद किया। -मुश्ताक अहमद राकेश मीडिया प्रभारी

## आखा तीज पर अगता पलवाएँ

अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल 3) भारतीय संस्कृति का पवित्र पर्व है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के वर्षीतप का पारणा इसी दिन हुआ था। भगवान् आदिनाथ के पारणे की स्मृति में हजारों जैन धर्मानुयायी उनके वर्षभर के एकांतर उपवासों का समापन तथा शुभारंभ इसी दिन करते हैं। ब्राह्मण समाज इस दिन परशुराम जयंती मनाता है। संतों की दीक्षा जयंती, आचार्य पदारोहण दिवस सहित अन्य अनेक प्रेरक सन्दर्भ इस दिन के साथ जुड़े हुए हैं। अहिंसा का इस पर्व से गहरा नाता है। अहिंसा कार्यकर्ताओं, पर्यावरण प्रेमी महानुभावों और संगठनों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में आखा तीज के दिन अगता पलवाएँ। क्षेत्रीय या स्थानीय शासन को लिखित आग्रह करके सम्बन्धित नगर या परिक्षेत्र में पर्व-दिन के लिए पशु-पक्षी वध, बूचड़खानों का संचालन तथा मांस-मछली विक्रय पर कानूनन रोक लगावाएँ। आग्रह-पत्र के प्रारूप हेतु सम्पर्क सूत्र- डॉ. दिलीप धींग-09414472720

## नीलगायों पर सरकारी निर्णय का करें विरोध

राजस्थान की भाजपा सरकार ने आखिरकार वन्य प्राणी नीलगायों पर खंजर चलाने का नया कानून पारित कर दिया है। इसके तहत अब सरपंचों को नील गांयों का वध करने के लिए अनुमति देने हेतु अधिकृत किया गया है। जमीनी सच्चाई यह है कि पूरे राज्य में कहीं भी पाँच प्रतिशत किसानों ने भी कभी अपनी फसल रक्षा के नाम पर नील गायों की हत्या हेतु अनुमति नहीं मांगी। नील गाय भी गोमाता के समान गाय प्रजाति की है। एक ओर गाय के रक्षण का सरकारी कानून है तो दूसरी ओर नील गाय के वध को समर्थन। यह बात जग जाहिर है कि राजस्थान के 80 फीसदी ऊँट को अफगानिस्तान जैसे राष्ट्र काट-काट कर खा गए। जब वह बहुत सीमित रह गया, तब कहीं जाकर सरकार की आँखें खुलीं और उसे अब 'राज्य पशु' का दर्जा देकर उसकी सुरक्षा की गई है।

कहीं ऐसा तो नहीं कि अब उस ऊँट की जगह नील गायों को मारने की छूट देकर मांस-खाल के तस्करों की पूर्ति करने का बंदोबस्त किया जा रहा है? चूँकि नील गाय पूर्णतया शाकाहारी पशु है और उसके मांस व खाल की अनेक बाहरी मुल्कों में जबरदस्त डिमाण्ड बनी हुई है। उल्लेखनीय है कि किसानों के संगठन भारतीय किसान यूनियन ने अब सरकारी निर्णय का कड़ा विरोध किया है।

अहिंसा प्रेमियों से निवेदन है कि वे नीलगायों के वध के इस सरकारी निर्णय का विरोध प्रदर्शित करें तथा इसके विरोध में मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार एवं राज्यपाल को पत्र लिखें, जिसकी प्रति प्रधानमंत्री को भी भेजी जा सकती है।-*ओमप्रकाश गुप्ता, राजस्थान टाइम्स*

## संक्षिप्त-समाचार

**चेन्नई-** श्री जैन रत्न युवक परिषद् तमिलनाडु के संयोजन में 06 मार्च 2016 को रविवारीय मासिक सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम स्वाध्याय भवन साहूकार पेठ में रखा गया, जिसमें युवावर्ग के लिए Youth Empowerment विषय पर श्री राजेन्द्र जी लूंकड़-ईरोड़ ने सुन्दर शैली में 350 श्रोताओं को सम्बोधित किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा ने इस कार्यक्रम पर प्रसन्नता व्यक्त की।

-*आर. नरेन्द्र कांकरिया*

**पुणे-** जैन इण्टरनेशनल ट्रेड ऑगेनाइजेशन (JITO) के पुणे चेप्टर द्वारा 'जीतो कनेक्ट-2016 पुणे' विषयक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन तथा परिषद् का आयोजन 8 से 10 अप्रैल तक किया जा रहा है। धर्म, कर्म और ज्ञान के क्षेत्र में प्रदर्शनी आयोजित करने के साथ विचार

मंथन भी होने वाला है। भारत के प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री, विदेशमंत्री आदि को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया है। मेक इन इण्डिया और नये स्टार्ट अप के लिए यहाँ आयोज्य ट्रेड फेयर में बड़ी उपलब्धि होने की संभावना है। इस सम्मेलन में यमन, अरब, ताईवान, ईराक, ईरान, दुबई आदि देशों के राजदूत उपस्थित होकर मार्गदर्शन करेंगे। इस दौरान जॉब मेला एवं मेट्रोमोनियल सम्मेलन भी आयोजित किया जायेगा।

-नरेन्द्र छाजेड़, प्रधान सचिव, पुणे विभाग

**संधवा-** सकल जैन श्रीसंघ संधवा (मध्यप्रदेश) के द्वारा सर्वानुमति से समाज हित में कई नियम तय किये गये हैं। यथा- विवाह के आशीर्वाद समारोह में अधिकतम 21 व्यंजन, उसके अतिरिक्त आयोजनों में अधिकतम 15 व्यंजन एवं नाश्ते में अधिकतम 9 व्यंजन रहेंगे। जमीकंद, आतिशबाजी, डी.जे., सड़कों पर नृत्य एवं रुपयों की वारनी का उपयोग वर्जित रहेगा। महिला संगीत के स्थान पर 'बड़ा बंदौला' अथवा 'विवाह गीत' शब्द का प्रयोग होगा। डिस्पोजेबल का उपयोग कम से कम होगा, प्रत्येक आयोजन पर श्रीसंघ को यथाशक्ति राशि दान की जायेगी। मृत्यु भोज को बंद कर दिया गया है। नियमों के पालन हेतु 15 सदस्यों की समिति बनाई गई है, जो नियमों को क्रियान्वित करवाने हेतु तत्पर रहेगी। किसी आयोजन में नियमों का उल्लंघन होता है तो समाजजन वर-वधू को आशीर्वाद देकर बिना भोजन किए सामूहिक रूप से लौट जायेंगे। -प्रेमचन्द सुराणा-संधवा

**बैंगलोर-** श्रमणसंधीया साध्वी श्री चारित्रप्रभाजी म.सा. की शिष्या साध्वी मेघाश्री को जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ से "आचार्य हेमचन्द्रकृत अर्हन्नीति (लघु) का समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी. उपाधि प्रदान की गई है। साध्वीजी ने अपना शोध कार्य डॉ. दामोदरजी शास्त्री लाडनूँ के निर्देशन में पूर्ण किया है।

**पालीताणा-** जैन तीर्थ पालीताणा में 1 से 12 मार्च 2016 तक अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें गणाधीश मणिप्रभसागरजी को आचार्य जिनमणिप्रभसूरि के रूप में आचार्यपद पर आरूढ़ किया गया। इस अवसर पर लगभग 600 साधु-साध्वियों की उपस्थिति रही। मुनि मनोज्ञसागरजी को उपाध्याय पद एवं मुनि मणिरत्नसागरजी को गणपद तथा साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी को महत्तरा पद से शोभित किया गया। इस महासम्मेलन हेतु लगभग 100 धर्मशालाओं में ठहरने की व्यवस्था की गई। भारत भर से लगभग 20 हजार लोगों ने इस समारोह में भाग लिया।-गौतम संकलेचा, चेन्नई

**दिल्ली-** ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिए सैकण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। आवेदन पत्र इस पते पर प्रेषित किए जायें- GYANODAY CHARITABLE SOCIETY (Regd. No.



हिरण ने भाग लिया। थाई सरकार के प्रधानमंत्री, वाणिज्य मंत्री, उद्योगमंत्री, पर्यटन एवं खेलकूद मंत्री, वित्तमंत्री, राजस्व विभाग में महानिदेशक, कस्टम विभाग के महानिदेशक आदि के साथ श्री हिरण जैन भेंट कर चुके हैं। मधुर स्वभावी, सेवाभावी एवं प्रामाणिकता के साथ व्यवसाय करने वाले श्री मांगीलाल हिरण ने अपने स्वभाव एवं योग्यता के कारण बैंकाक में विशेष ख्याति अर्जित की है। धर्म एवं संघ के प्रति निष्ठावान श्री हिरण ने आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद् को 51 हजार की राशि अर्पित की है। मारवाड़ के एक छोटे से रणसी गांव से निकलकर जयपुर के संस्थान में पढ़कर श्री हिरण ने कुछ वर्षों में ही बैंकाक में जो स्थान बनाया है, वह निश्चित रूप से उनकी विशिष्ट प्रतिभा को द्योतित करता है।



**सीकर-** श्री हिमांशु जैन सुपुत्र श्रीमती उर्मिला-सोहनलालजी जैन की ebay inc. कम्पनी में साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर पदोन्नति हुई है।

**हैदराबाद-** सुश्री स्नेहा मुणोत सुपुत्री श्री सज्जनराजजी मुणोत के द्वारा सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की गई।

## श्रद्धाञ्जलि

**बैंगलोर-** श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कान्ताबाईजी धर्मसहायिका श्री अशोककुमारजी बरड़िया-मुथा तथा सुपुत्री वीर पिता श्री पारसमलजी बोहरा का सेमल खोदरा-मध्यप्रदेश में 07 मार्च 2016 को परलोकगमन हो गया। आप व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की सांसारिक बहिन थीं। नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने के साथ महासती मण्डल की विहार सेवा में तत्पर रहने के साथ विरक्ता बहनों का पूरा खयाल रखती थीं। महासती मण्डल के दक्षिण भारत से मध्य भारत तक हुए उग्र विहार में निरन्तर सेवा प्रदान कर आपने अनुकरणीय कार्य किया है। विगत लगभग 10-11 वर्षों में महासती मण्डल की सेवा में रहते हुए साधना-आराधना, ज्ञान-ध्यान एवं तप-त्याग में अच्छा पुरुषार्थ किया। गुरु भक्त एवं संघनिष्ठ श्राविका रत्न अपने पीछे सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

**जलगांव-** जैन उद्योग समूह के चेयरमेन, जैन इरिगेशन के संस्थापक, पद्मश्री श्री भंवरलालजी जैन का 25 फरवरी 2016 को मुम्बई के जसलोक अस्पताल में 78 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक प्रतिभा के अद्भुत संगम तथा करुणा, दया एवं वात्सल्य के गुणों से सुशोभित आपका जीवन नवीन विचारों से समन्वित रहा। अपनी सूझबूझ से आपने जैन इरिगेशन का प्रारम्भ कर कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान किया है, जिसे देश नहीं भुला पाएगा।



गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा अनुभूति विद्यालय की स्थापना एवं संचालन करने के साथ आप गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी एवं श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के संरक्षक भी रहे। कर्मनिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ श्री भंवरलालजी जैन की पूज्य आचार्य हस्ती, पूज्य आचार्यश्री हीरा के प्रति श्रद्धाभक्ति थी। आपने किसानों की उन्नति के लिए टपक सिंचाई एवं कृषि की नई विधियों को विकसित किया, जिससे आपको देश-विदेश में ख्याति प्राप्त हुई। आपका दाहसंस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया गया।

**जोधपुर-** सुश्राविका श्रीमती शान्तिजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री गौतमचन्दजी मेहता का 11



मार्च 2016 को देहावसान हो गया। आपकी गुरुभक्ति, संघनिष्ठा एवं धर्माराधना प्रशस्त रही। आप नियमित पाँच सामायिक करने के साथ दया, संवर, पौषध आराधना करने वाली श्राविकाओं में अग्रणी थीं। आप वरिष्ठ चिन्तनशील स्वाध्यायी भी थीं। कैसर जैसी असाध्य बीमारी में भी आपने मनोबल मजबूत रखा एवं अन्तिम समय तक धर्माराधना में संलग्न रहीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में तत्पर रहने वाली श्राविका अपने पीछे संघसेवा एवं समाजसेवा में तत्पर सुपुत्र श्री उत्तमचन्दजी मेहता सहित भरापूरा मेहता परिवार छोड़कर गई हैं।

**मूरत-** सुश्राविका श्रीमती भंवरीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री हंसराजजी कांकरिया (गोगेलाव) का 81 वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से 11 फरवरी 2016 को स्वर्गगमन हो गया। विभिन्न प्रत्याख्यानों एवं तपाराधना में संलग्न रहने वाली श्राविका ने दो बार वर्षीतप एवं श्रावण-भाद्रपद में एकान्तर तप की आराधना की। आजीवन जमीकंद एवं रात्रिचौविहार का त्याग रखने वाली श्राविका नियमित पाँच सामायिक करती थी तथा स्वर्गवास के दिन भी वह इसी प्रकार धर्माराधन एवं प्रत्याख्यानों के साथ देह छोड़कर गई। मरणोपरान्त आपके नेत्रों का दान किया गया। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ श्रद्धानिष्ठ एवं सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

**कानपुर-** सुश्रावक श्री भंवरलालजी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री मिश्रीमलजी लोढ़ा (हीरादेसर



निवासी) का 81 वर्ष की आयु में 08 फरवरी 2016 को देहावसान हो गया। गुरुभक्ति एवं संघनिष्ठा के साथ आप तपस्वी श्रावक थे। नियमित सामायिक-स्वाध्याय में लीन रहते थे। संतों के चातुर्मास में आपने 16 वर्षों तक चौका किया एवं धर्म लाभ लिया। मरणोपरान्त दोनों नेत्रों का दान कर दो नेत्रहीनों को रोशनी प्रदान की गई। जिनशासनसेवी श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के आप सांसारिक ताऊजी थे। आप कई वर्षों तक कानपुर संघ के कोषाध्यक्ष रहे। अन्तिम समय पर अध्यक्ष पद पर थे तथा गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी भी रहे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री प्रेमचन्दजी एवं शांतिलालजी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

**चेन्नई-** संघसेवी, गुरुभक्त सुश्रावक श्री देवरूपचन्दजी भण्डारी मूल निवासी बाड़मेर का 15 मार्च, 2016 को चेन्नई में स्वर्गगमन हो गया। सरलहृदया दिवंगत महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के सांसारिक वीर भ्राता श्री भण्डारी साहब का जीवन अहिंसा, जीव दया के प्रति समर्पित रहने के साथ प्रामाणिक था। बारणी की बकरा शाला के संचालन में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। नित्यप्रति सामायिक के साथ स्मरण भजन का उनका क्रम अंत तक बना रहा। आप गुणग्राही श्रावक थे। आप संत-सेवा एवं संघ-सेवा के लिए तन-मन-धन से तत्पर रहे।



**वाशी (मुम्बई)-** संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्री दशरथचन्दजी भण्डारी (मूल निवासी जोधपुर) का 82 वर्ष की उम्र में 19 मार्च 2016 को वाशी-मुम्बई में निधन हो गया। गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं सेवाभावी सुश्रावक के पिता श्री ब्रह्माचन्दजी भण्डारी घोड़ों के चौक के प्रमुख श्रावक रहे। आप विगत दस वर्षों से अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री सुधीरजी भण्डारी के साथ रह रहे थे। नित्य सामायिक एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण आप कई वर्षों से करते थे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री सुधीरजी एवं श्री सतीशजी भण्डारी तथा सुपुत्री श्रीमती संगीताजी नागौरी का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं।



**पीपाड़शहर-** संघसेवी गुरुभक्त श्री नन्दलालजी कटारिया का 68 वर्ष की उम्र में 24 फरवरी 2016 को देहावसान हो गया। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-पीपाड़शहर के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे थे। श्रद्धाभक्ति एवं संत-सतियों की सेवा में संलग्न रहने वाले श्रावकरत्न का समस्त परिवार धर्मनिष्ठ एवं सुसंस्कारित है।



**दिल्ली-** सुश्राविका श्रीमती विमलाजी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीलालजी लोढ़ा का 02 मार्च 2016 को निधन हो गया। आप सजग एवं धर्मनिष्ठ साधिका थीं। आपने अपने जीवन में 25 से अधिक अठाई तप एवं अन्य प्रकार की तपस्या की। सेक्टर 9 अहिंसा विहार, रोहिणी दिल्ली के स्वाध्याय मण्डल की आप अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहीं। गुरुभक्त एवं धर्मनिष्ठ श्राविका साधु-साध्वियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। -सुन्रीत्व लोढ़ा



**जोधपुर-** सुश्राविका श्रीमती प्रफुल्लकंवरजी भण्डारी धर्मपत्नी श्री भोपालचन्दजी भण्डारी का 23 मार्च, 2016 को देहावसान हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका की पूज्य संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री पूरणराजजी



अबानी की बहिन की भावना के अनुसार मरणोपरांत पार्थिक देह मेडिकल कॉलेज को प्रदान की गई। समाज सेवा एवं आतिथ्य सत्कार में भण्डारी परिवार सदैव संलग्न रहता है।



**इचलकरंजी-** सुश्रावक श्री फूलचन्द्रजी बोरुन्दिया (जसनगर निवासी) का 97 वर्ष की वय में 01 फरवरी 2016 को निधन हो गया। आप सुलझे हुए विचारों के धनी एवं राजस्थानी भाषा के आशुकवि थे। संत-सतियों के प्रति आस्था एवं भक्ति में आप सदा अग्रणी रहते थे।



**अलवर-** श्रीमती नर्मदादेवीजी धर्मपत्नी श्री हजारीलालजी जैन चौधरी का देहावसान 26 फरवरी 2016 को जयपुर में हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका ने अंतिम समय में समभावों के साथ देह छोड़ी तथा उनके संकल्प के अनुसार मरणोपरान्त देह-दान किया गया।



**जयपुर-** गुरुभक्त स्वाध्यायी श्री धर्मचन्द्रजी जैन 'कंजोली वाले' का 78 वर्ष की आयु में 03 जनवरी, 2016 को परलोकगमन हो गया। आप दानशील, सहृदय, कर्मठ और सकारात्मक सोच के धनी थे। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आपने 35 वर्षों तक वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। अनेक त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले श्रावक रत्न जिनशासनसेवी, रत्नसंधीया महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. के सांसारिक ताऊजी थे।

**जोधपुर-** सरलस्वभावी, मृदुभाषी, दानशीला सुश्राविका श्रीमती राजकंवरजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री दशरथमलजी भण्डारी का 27 जनवरी, 2016 को 80 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। लगभग 45 वर्षों से आप रात्रिचौविहार त्याग के साथ जमीकंद का त्याग रखते हुए प्रतिदिन नवकारसी तप कर रही थी। पूज्य आचार्य श्री हस्ती के जोधपुर चातुर्मास में आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने वाली श्राविका के वर्षों से पौरसी के पच्चक्खाण थे। आप नियमित 8 से 10 सामायिक करती थीं तथा अपने पीछे सुपुत्र तपस्वी श्री अरुणजी भण्डारी सहित भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

**जयपुर-** सुश्रावक श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले) का 29 फरवरी 2016 को निधन हो गया। धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न, स्पष्टवक्ता एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। जैन कार्ड के नाम से परिचित श्री राजेन्द्रकुमारजी सेवा एवं सहयोग में रुचि रखते थे।

**जयपुर-** सुश्रावक श्री ज्ञानचन्द्रजी मोदी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्रजी मोदी का 10 मार्च 2016 को निधन हो गया। धर्मनिष्ठ, गुरुभक्त एवं संघसेवी श्री मोदी साहब संत-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते थे तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे।

**जयपुर-** सुश्रावक श्री विजयकुमारजी सिंघवी सुपुत्र श्री चम्पालालजी सिंघवी का 2 मार्च, 2016 को स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ एवं गुरुनिष्ठ होने के साथ आप अनेक व्यावसायिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिष्ठित पदों पर रहे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

## ❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष)

सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15593 से 15607 तक 15 सदस्य बने।

**'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त**

- 21000/- श्री सुधीरजी, सतीशजी भंडारी, मुम्बई, पूज्य पिताश्री दशरथचन्दजी भंडारी का 19 मार्च, 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 11000/- श्री दलीचंदजी, किशनलालजी नाहटा (बंगारपेट वाले), के.जी.एफ., श्री दलीचन्दजी नाहटा के व्याधि की प्रचण्डता में भी श्रद्धा-भक्ति के कारण साता-समाधि के साथ उपचार-प्रक्रिया पूर्ण होने पर प्रसन्नता का अनुभव करने की खुशी में भेंट।
- 5100/- श्रीमती सीतादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री सम्पतराजजी बाफणा, जोधपुर, सुपौत्र श्री सुदर्शनजी (सीए) (सुपुत्र सरलाजी एवं श्री स्वरूपचन्दजी बाफणा, सूरत) का शुभ-विवाह सौ.कां. समृद्धिजी जैन (सीए) सुपौत्री श्रीमती सुखीदेवीजी घेवरचन्दजी जैन, जालौर, सुपुत्री मधुजी एवं राजेन्द्रजी जैन (सीए) के संग 29 जनवरी 2016 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।
- 5100/- श्रीमती रतनजी कर्णावट, जयपुर, स्व. श्री मोतीचन्दजी कर्णावट की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 2100/- श्रीमती निर्मला एवं सीए प्रदीपजी मेहता, अहमदाबाद के सुपौत्र एवं सीए अंकिता एवं सीए विनीतजी मेहता के सुपुत्र एवं सरला व सीए स्वरूपचन्दजी बाफणा, सूरत के दौहित्र का जन्मदिवस 09 दिसम्बर 2015 को होने पर सप्रेम भेंट।
- 2100/- श्री कुशलचन्दजी खीवसरा, जयपुर, अपने सुपौत्र चि. गौरवजी (सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमारजी खीवसरा) का शुभविवाह सौ.कां. कुसुमजी के संग 22 फरवरी, 2016 को सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्री उत्तमजी मेहता, जोधपुर, अपनी मातुश्री श्रीमती शान्तिजी धर्मपत्नी स्व. श्री गौतमचन्द जी मेहता का 11 मार्च, 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन पुण्यस्मृति में।
- 2000/- श्रीमती मालाजी एवं श्री विजयराजजी तातेड़, चेन्नई, अपने सुपुत्र श्री आदेश के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1655/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रजी गांग, सूरत, श्रीमती स्व. इंकारदेवीजी धर्मपत्नी श्री जतनराजजी कुम्भट (जोधपुर) एवं आदरणीय स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग (जोधपुर) की पुण्य स्मृति में तथा अपने प्रियमित्र स्व. श्री हरकराजजी सुराणा (जोधपुर), सूरतवासी का 23 फरवरी 2016 को अकस्मात् स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1251/- श्रीमती सुशीलाजी भंवरलालजी भंडारी, नईदिल्ली, श्रीमती शांतादेवीजी धर्मपत्नी श्री निहालचन्दजी भंडारी, पाली-मारवाड़ द्वारा पिछले 15 वर्षों में 5000 एकासन, रात्रि चौविहार-त्याग के साथ एवं अनेक प्रत्याख्यान ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1101/- श्री मदनलालजी, विमल कुमारजी जैन (करेला वाले), इन्दौर, चि. मनीष कुमारजी सुपुत्र श्री विमल कुमारजी के विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1101/- श्री बाबूलालजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. दीपककुमारजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1101/- श्री रिखबचन्दजी, धर्मचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. डॉ. आशीष के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1101/- श्रीमती विजयजी मेहता, जोधपुर, श्रीमती सिरेकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री भभूतराजजी मेहता

की पावन पुण्यस्मृति में।

- 1100/- श्री केसरलालजी जैन, सुरेन्द्रजी जैन (एण्डवा वाले), जयपुर, सुपौत्र चि. अमित कुमारजी सुपुत्र सुरेन्द्रजी जैन का शुभविवाह 20 मार्च 2016 को सौ.कां. मिथलेश (टीना) सुपुत्री हुकमचन्दजी जैन पचाला के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री प्रेमचन्दजी, जतनदेवीजी मोदी, किशनगढ़, सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्रीमती दाखादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचन्दजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले), सीकर, सुपौत्र हिमांशुजी जैन सुपुत्र उर्मिलाजी सोहनलालजी जैन का बंगलौर में सोफ्ट इंजीनियर पद पर पदोन्नति हेतु सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री उम्पेदमलजी, दानमलजी, राजेन्द्र प्रसादजी, ऋषभजी जैन, जरखोदा वाले, पूज्य माताश्री श्रीमती कल्याणीदेवीजी की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्री लड्डुलालजी, विमल कुमारजी जैन (धमूण वाले), जयपुर, चि. विनीत का शुभविवाह 10 मार्च 2016 को सौ.कां. हर्षिता सुपुत्री श्री ललितजी जैन (जगमोदा वाले), इन्दौर के संग सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री सुरेशजी (टोनी) एवं समस्त लोढ़ा पारिवारिकजन, जयपुर, मातुश्री श्रीमती विमलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीलालजी लोढ़ा (दिल्ली निवासी) का 02 मार्च 2016 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 1100/- श्रीमती मंजूजी जैन धर्मपत्नी श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले), जयपुर, अपने सुपौत्र भव्य (सुपुत्र श्रीमती नेहाजी-अभिषेकजी जैन) 5 मार्च 2016 को जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ निवासी), जयपुर, होली चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री अमरचन्दजी, सुरेन्द्रजी, नरेन्द्रजी सदावत मेहता, जोधपुर, डॉ. श्रेयाजी सुपुत्री श्रीमती बेला-नरेन्द्रजी सदावत मेहता का शुभविवाह डॉ. महकजी सुपुत्र श्रीमती रजनीजी-पुष्पेन्द्र सिंहजी बूँलिया के संग 25 दिसम्बर 2015 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को अर्थसहयोग

- 51000/- श्रीमती कमलादेवी दुलीचन्द बाघमार चेरीटेबल ट्रस्ट, चेन्नई, चि. निखिल सुपुत्र श्री अरूणकुमारजी-श्रीमती ललिताकुमारीजी बाघमार एवं सुपौत्र श्रीमती कमलादेवी-दुलीचन्द जी बाघमार का शुभ विवाह सौ.कां. रिकु सुपुत्री श्री दिलीपकुमारजी-श्रीमती कौशल्याबाई छत्तीसा बोहरा (सुपौत्री स्व. श्री देवराजजी-श्रीमती कमलाबाई छत्तीसा बोहरा) के संग 04 फरवरी 2016 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सत्साहित्य प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग

- 23900/- मैसर्स गजेन्द्रनिधि, मुम्बई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3 के श्रीमती सरोजाबाई सुगनचन्दजी मूथा शिक्षा फण्ड से मुद्रण हेतु अर्थसहयोग प्राप्त हुआ।
- 21,000/- श्री सुधीरजी, सतीशजी भंडारी, वाशी-मुम्बई, पूज्य पिताश्री दशरथचन्दजी भंडारी का 19 मार्च 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में प्रकाशित सत्साहित्य हेतु भेंट।

## अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

### संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

- 93440/- श्री शान्तिलालजी, राजीवजी, संदीपजी सुराणा परिवार, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।  
 80000/- श्री अमितजी दलपतमलजी कुम्भट, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।  
 70000/- श्री आशीषजी दलपतमलजी कुम्भट, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।  
 11000/- श्री प्रकाशजी सालेचा, जोधपुर, संघ सेवा सोपान।  
 11000/- श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मपत्नी श्री सज्जनराजजी मुथा, गोटन, स्वधर्मी वात्सल्य।  
 11000/- श्रीमती बीनाजी धर्मपत्नी श्री भागचन्दजी मेहता, जोधपुर, संघ सेवा सोपान।  
 5000/- श्री प्रेमचन्दजी शान्तिलालजी लोढ़ा, जोधपुर, जीवदया हेतु।  
 2100/- श्रीमती प्रेमलताजी धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी जीरावला, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।  
 2001/- डॉ० तृषाजी जैन, कोटा, जीवदया हेतु।  
 1100/- श्रीमती विजय जी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

### श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

- 11000/- श्री सुधीरजी, सतीशजी भंडारी, मुम्बई, पूज्य पिताश्री दशरथचन्दजी भंडारी का 19 मार्च 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।  
 5100/- श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा, जोधपुर, सहयोग हेतु।  
 5000/- श्री जौहरीमल जी छाजेड़ (चाम्बड़), जोधपुर, सहयोग हेतु।  
 2100/- श्री उत्तमचन्दजी मेहता, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती शांति जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री गौतमचंद जी मेहता के 11 मार्च 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।  
 1100/- श्री मीठालालजी दिनेशजी चौपड़ा, बाड़मेर, बाड़मेर में नये स्थानक भवन के उद्घाटन के अवसर पर।

### अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

- 1101/- श्रीमती विजयजी मेहता, जोधपुर, श्री उच्छबराजजी मेहता एवं प्रतिभाजी मेहता के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

### गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

### (अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

### दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

- 150000/- श्री हरीशजी कवाड़, पुनमल्लै, चेन्नई।  
 100000/- श्री राजेशजी, विमलजी, पवनजी बोहरा, चेन्नई।  
 12000/- श्री राजमलजी, मनोजजी जैन, मुम्बई।  
 12000/- श्रीमती पुष्पाजी जैन, तिलकनगर, जयपुर।  
 12000/- श्री इन्द्रमलजी जारौली, बालोतरा (राज.), चि. पीयूषजी जारौली (सुपुत्र श्रीमती रेखाजी- श्री इन्द्रमलजी जारौली) का शुभविवाह सौ.कां. सुरभिजी के संग 29 जनवरी, 2016 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।  
 12000/- श्री विजयकुमारजी, गणेशमलजी संचेती, निफाड़ (महा.), श्री निखिलजी संचेती सुपुत्र श्री विजयकुमारजी संचेती के एम.टेक. (केमिकल) फाइनल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री संजयजी, श्रेणिकजी, सुकेतुजी मेहता एवं परिवार, उमरगांव (गुजरात), स्व. सुश्रावक श्री सुरेशचन्द्रजी मेहता सुपुत्र श्री मोहनलालजी किशनचंदजी मेहता 'भोपालगढ़ वाले' की प्रथम पुण्यस्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- **Sh. M. Harish Kawad, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)**

### भूल संशोधन

जिनवाणी सितम्बर-2015 के पृष्ठ संख्या 125-126 पर 'श्री श्रेष्ठजी सुपुत्र श्री नरेन्द्रजी सदावत मेहता के सी.ए. बनने' के स्थान पर 'श्री वैकटजी सुपुत्र श्री सुरेन्द्रजी सदावत मेहता के सी.ए. बनने' पढ़ा जावे।

### आगामी पर्व तिथि

चैत्र शुक्ला 8, गुरुवार	14.04.2016	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 13, मंगलवार	19.04.2016	भगवान महावीर जन्म-कल्याणक
चैत्र शुक्ला 14, बुधवार	20.04.2016	चतुर्दशी
चैत्र शुक्ला 14, गुरुवार	21.04.2016	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला 15, शुक्रवार	22.04.2016	आयम्बिल ओली पूर्ण
वैशाख कृष्णा 8, शनिवार	30.04.2016	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 14, गुरुवार	05.05.2016	चतुर्दशी
वैशाख कृष्णा अमावस, शुक्रवार	06.05.2016	पक्खी
वैशाख शुक्ला 3, सोमवार	09.05.2016	अक्षयतृतीया, पूज्य आचार्यश्री कजोडीमलजी म.सा. की 137 वीं पुण्यतिथि एवं आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. का 87 वां आचार्य पदारोहण दिवस
वैशाख शुक्ला 8, शनिवार	14.05.2016	अष्टमी, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 25 वां स्मृति-दिवस
वैशाख शुक्ला 9, रविवार	15.05.2016	उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 26 वां उपाध्याय पद दिवस
वैशाख शुक्ला 10, सोमवार	16.05.2016	भगवान महावीर केवल कल्याणक
वैशाख शुक्ला 11, मंगलवार	17.05.2016	संघ स्थापना दिवस
वैशाख शुक्ला 13, गुरुवार	19.05.2016	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 54 वां दीक्षा दिवस
वैशाख शुक्ला 14, शुक्रवार	20.05.2016	चतुर्दशी
वैशाख शुक्ला पूर्णिमा, शनिवार	21.05.2016	पक्खी
ज्यैष्ठ कृष्णा 5, शुक्रवार	27.05.2016	आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 26 वां आचार्य पदारोहण दिवस

## पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 70 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वारि राज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 30 अगस्त से 06 सितम्बर 2016 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निर्मांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 05 अगस्त 2016 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गाँव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763, मो.-9461522309 (संयोजक), 09422775692 (सह-संयोजक), 8003615215(सचिव), 9414267824(पर्युषण संयोजक), 9462543360(का. प्रभारी), ईमेल-swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री महेन्द्रजी कांकरिया (अध्यक्ष), फोन नं. 09710999990 (मोबाइल) 09884554801 (संयोजक) 044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

॥श्री महावीराय नमः॥

॥श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिष्यो नमः॥

## अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

❀ निर्व्यसनी बनें एवं सामायिक आराधन करें ❀

(अ) आवश्यक नियमः-

1. निर्व्यसनी बनना एवं सप्त कुव्यसन का त्याग करना।
2. मादक, नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना।
3. अखाद्य पदार्थ का सेवन नहीं करना।
4. चोरी नहीं करना।
5. स्वदार/स्वपति सन्तोष रूप सदाचार का पालन करना।
6. जुआ आदि नहीं खेलना।
7. फैशन में मर्यादित जीवन जीना।
8. प्रतिमाह कम से कम चार दिन अथवा अधिक, रात्रि-भोजन का त्याग करना।
9. जीवन में राग व द्वेष को कम करना।
10. माह में भावानुसार ब्रह्मचर्य का पालन करना।
11. सामायिक में रेशम आदि महाहिंसा के वस्त्र नहीं पहनना, सूती वस्त्र पहनना।
12. धार्मिक स्थानकों में सभ्य वेशभूषा में ही प्रवेश करना।
13. स्वधर्मी भाई-बहनों एवं असहायों की सेवा-शुश्रूषा सार सम्भाल करना।
14. संघ की गतिधिविधों में प्रतिमाह अधिक से अधिक भाग लेना।

(ब) नित्यक्रमः-

1. प्रातः उठने के समय, भोजन के पूर्व एवं रात्रि में सोने के पूर्व पाँच-पाँच नवकार मंत्र का उच्चारण करना।
2. सामूहिक प्रार्थना प्रतिदिन/सामाहिक करने का लक्ष्य रखना।
3. प्रतिदिन कम से कम एक या प्रतिमाह चार सामायिक करने का लक्ष्य रखना।
4. प्रतिदिन कम से कम 15 मिनट स्वाध्याय करने का लक्ष्य रखना।
5. प्रतिदिन कोई भी प्रत्याख्यान करना अथवा नियम लेना।

(स) प्रतिज्ञाः-

मैं उपर्युक्त चिह्नित नियमों का यथावत् पालन करने की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

नाम.....पिता/पति का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम/नगर.....जिला.....प्रदेश.....फोन नं.....

व्यावहारिक शिक्षा.....व्यवसाय.....

धार्मिक अध्ययन.....

हस्ताक्षर प्रेरक .

प्रतिज्ञाकर्ता

फार्म भर कर भेजने का पता:- अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन:- 0291-2636763/2641445

# अलविदा बाईपास सर्जरी

## अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

### काउन्टर पलसेशन थैरेपी

#### (ई.ई.सी.पी.)

#### द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता है :-  
हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है। यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता है। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती हैं और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

## समर्पण हार्ट एण्ड हेल्थ

### केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन  
के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

फोन : 2432525

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

सम्पर्क : धीरन्द्र कुम्भट

93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क उपचार 卐



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,  
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

**C/o CHANANMUL UMEDRAJ  
BAGHMAR MOTOR FINANCE  
S. SAMPATRAJ FINANCIERS  
S. RAJAN FINANCIERS**

# 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,  
Mysore-570001 (Karnataka)

*With Best Compliments from :*

*C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan  
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar*

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

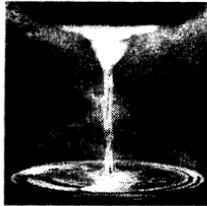
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)



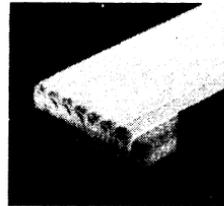
Gurudev



DRI Plant



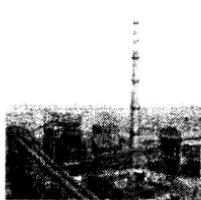
Electric Arc Furnace



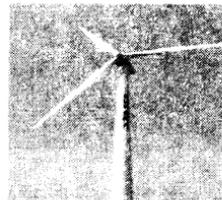
Billets



Rolling Mill



Captive Power Plant



Windmill

With best wishes from



**SURANA INDUSTRIES LIMITED**

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

# 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines ) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: [steelmktg@suranaind.com](mailto:steelmktg@suranaind.com) / [www.surana.org.in](http://www.surana.org.in)

**STEEL | POWER | MINING**

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !



छोटा सा नियम धोवन का ।  
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूडामणि, भक्तों के भगवान् 1008  
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण  
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार  
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,  
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

**OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS**

**PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD**

690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056

Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273



**MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD**

**GURU HASTI THANGA MAALIGAI**

(JEWELLERS & BANKERS)

5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

**आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना**

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्**

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है -

**आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना**

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

**सदस्यता अभियान****हीरक स्तम्भ सदस्य****( 5 लाख रुपये प्रति वर्ष )****स्वर्ण स्तम्भ सदस्य****( 1 लाख रुपये प्रति वर्ष )**

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

**Acharya Hasti Scholarship Fund**

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam.....

**Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.**

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund

A/c No. 168010100120722

Bank Name &amp; Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संधनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची -

हीरक स्तम्भ सदस्य ( 5 लाख रुपये प्रति वर्ष )	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य ( 1 लाख रुपये प्रति वर्ष )
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मील जी लोढ़ा, जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056 (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें- श्रीश जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाम बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का।।'

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

# ॥ जैन जयति शासनम् ॥

With Best Compliments from:

## **Dharamchand Paraschand Exports**

**Paras Chand Hirawat**

CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),

Mumbai-400 098 (MH)

Tel. : +91 22 4018 5000

Email : dpe90@hotmail.com

## **KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER**

**PACHPADRA-PALI-ERODE**

**K.L. ASSOCIATES**

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)

Mobile : 094141-22757

135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)

Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

## **BHANSALI GROUP**

**Dhanpatraj V. Bhansali**

## **BHANSALI DEVELOPERS**

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),

Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),

E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

## **S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS**

**Prakash Chand Daga**

**Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)**

FC51, Bharat-Diamond Bourse,

Bandra Kurla Complex,

Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)

Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429

Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872

E-mail : sdgems@hotmail.com

**Basant Jain & Associates, C.A.**

**BKJ & Associates, C.A.**

**BKJ Consulting Pvt. Ltd.,**

**Megha Properties Pvt. Ltd.**

**Ambition Properties Pvt. Ltd.**

**बसंत के जैन**

अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,

Mumbai - 400020 (MH)

Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

## **NARENDRA HIRAWAT & CO.**

**Launches**

**N.H. Studios**

**N.H. Jewells**

A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,  
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)

Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

॥जय गुरु हस्ती॥

॥श्री महावीराय नमः॥

॥जय गुरु हीरा-मान॥



सत्यमेव जयते

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को  
आत्म-कल्याण के लिए  
स्वीकार करना चाहिए।  
- भगवान महावीर



सत्यमेव जयते

रात्रि भोजन त्याग के  
साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य  
का विचार करके ही  
अन्न ग्रहण करना चाहिए।  
- आचार्य हस्ती



रात्रि भोजन सदोष व  
तामसी आहार होता है।  
समाधि का अभिलाषी साधक  
ऐसी तामसी आहार से  
दूर ही रहता है।  
- आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या  
न करें, अगर त्याग नहीं है तो  
उसे दोष लग ही रहा है। अतः  
रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान  
करना आवश्यक है।  
- उपाध्याय मान

## सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।  
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ॥

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत - समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17  
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अप्रैल, 2016  
वर्ष : 74 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.  
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रैल, 2016 ★ चैत्र, 2073



KALPATARU®



Artist's impression

# waterfront

at KALPATARU  
**riverside**  
PANVEL

## Premium 2 & 3 BHK residences

☎ 022 3064 3065

Promoters: M/S Kalpataru + Sharyans

Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. | Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 | Fax: + 91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited.  
The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्पन्नान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्पन्नान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, वापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन